दो शब्द

विश्व के महान् क्रान्तिकारी श्री ट्राटस्की के बारे में हिन्दी भाषा-भाषी जनता बहुत कम जानकारी रखती है। उनकी हत्या विश्व की महान् घटनाओं में से एक है। बोल्शेविक रूस के भाग्य विधाता रूस की जनक्रान्ति के सफल नायक, लेनिन के दाहिने हाथ ट्राटस्की को क्यों अपना देश छोड़कर मैक्सिको में शरण लेनी पड़ी और वहां भी उस तरह कैदी की भांति उन्हें क्यों रहना पड़ा, यह बहुत ही दर्दनाक कहानी है।

जिन लोगों ने रूस की क्रान्ति का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि ट्राटस्की के बिना लेनिन को रूस की क्रान्ति में वह सफलता नहीं मिल सकती थी जो उन्हें प्राप्त हुई। लोग यही समझते थे कि लेनिन के बाद ट्राटस्की ही उनका उत्तराधिकारी होगा, लेकिन अधिकार-प्रिय स्टालिन खुद अधिनायक होना चाहता था। उसने लेनिन का जाली खत पेशकर बहुमत प्राप्त कर लिया और इस तरह अधिनायक बन बैठा। लेकिन स्टालिन यह भी जानता था कि ट्राटस्की के रहते वह अपने पद पर सुरक्षित नहीं रह सकता था इसलिये उसने ट्राटस्की के अन्त कराने की बात सोची। इस तरह की राजनीतिक हत्यायें स्टालिन के अधिनायक बनने के बाद से रूसमें साधारण बात हो गई हैं। इससे ट्राटस्की को रूस छोडने के लिये बाध्य होना पड़ा।

स्टालिन ट्राटस्की के पीछे पड़ गया था। वह किसी भी तरह उन्हें जिन्दा नहीं रहने देना चाहता था। इसलिये वे जिस किसी देश में जाते, वहां के राज्य पर प्रभाव डालकर वह उन्हें वहां से निकलवा देता। इस तरह ट्राटस्की मारे-मारे फिरते रहे। अन्त में मैक्सिको की सरकार ने उन्हें अपने राज्य में शरण दी।

लेकिन स्टालिन का जी० पी० यू० (खुफिया पुलिस विभाग) ट्राटस्की के पीछे पड़ा रहा ; अन्त में उनकी हत्या करने में वह सफल भी हुआ।

उनके मकान पर जो आक्रमण हुआ था तथा बाद को उनकी जो हत्या की गई, उनकी जांच मैक्सिको सरकार ने खास तौर से कराई थी। उसीका विवरण इस पुस्तक में है।

ट्राटस्की असाधारण पुरुष थे। उनकी जीवन लीला किस जघन्यता से समाप्त की गई है, इसे भी जानना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है।

बसन्तपंचमी
पटना ८-२-५४

छबिनाथ पाण्डेय

ट्राटस्की की हत्या

****

(१) मकान पर हमला

ता० २३ मई की बात है। मैं रात को ११ बजे घर लौटा। टेबुल पर पड़े कागज-पत्रों को उलट-पुलट कर देखा; दो चुस्की चाय की ली, दो कश सिगरेट का खींचा और चारपाई पर पड़ रहा। बात की बात में मैं खर्राटा लेने लगा। लेकिन टेलीफोन की घंटी की झनझनाहट मेरी नाक की घरघराहट से तेज थी। उसने मुझे जगा दिया। यह मेरे लिये साधारण बात थी। मेरे सहकारी इस मामले में बड़े सतर्क, सावधान और तत्पर थे। दो-तीन बजे रात को भी टेलीफोन करने में वे नहीं हिचकते थे। मेरे हाथ भी अभ्यस्त-से हो गये थे। घंटी बजी कि वे रिसीवर पर जा पड़े और उसे उठाकर कान से सटा दिया। लेकिन यह टेलीफोन किसी सहकारी का नहीं था। खुफिया विभाग के प्रधान बोल रहे थेः—"कर्नल! थोड़ी देर पहले की बात है, श्री ट्राटस्की के मकान पर आक्रमण हुआ था।"

मेरे इस पेशे में तो दिन-रात चौंका देनेवाले समाचार मिलते रहते हैं। हमलोग इस तरह अभ्यस्त हो जाते हैं कि उनका कोई असर हमलोगों पर नहीं पड़ता तो भी इस संवाद ने मुझे चौंका दिया। मैंने उत्तर में कहाः—"इस्ट्राडा और गैलिएडो को हिदायत दीजिए कि वे तुरत ट्राटस्की के निवास-स्थान कोयकन चलें। मैं फौरन वहाँ पहुँचता हूँ।

इस्ट्राडा खुफिया विभाग का डिपुटी असिस्टेएट चीफ था और गैलिएडो मुख्य खुफिया अफसर था।

अब मुझे घड़ी की तरफ देखने की फुरसत मिली। चार बज रहे थे। मैंने चट वर्दी चढ़ायी; रिवाल्वर लटकाया; सीढ़ियों से कूदता नीचे पहुँचा; कूदकर मोटर में दाखिल हुआ और पूरे वेग के साथ दौड़ा दी मोटर ट्राटस्की के मकान की तरफ। मुझे वहाँ का रास्ता अच्छी तरह मालूम था क्योंकि मेरे अफसरों ने उनकी रक्षा का भार मुझ पर सौंपा था। इसलिये मैं प्रायः रोज उधर जाया करता था।

पिछली रात को मूसलधार पानी बरस गया था, इससे सड़कें पंकिल हो गई थीं, खासकर वाइना सड़क, क्योंकि उस वक्त तक न तो वह पक्की बनी थी और न उस पर ईंटें ही बिछी थीं।

उषा के आगमन में अभी विलंब था लेकिन कुत्तों का भूंकना और मुर्गों का बाँग देना इस बात की सूचना दे रहा था कि उषा का आगमन शीघ्र ही होनेवाला है। श्री ट्राटस्की का निवास-स्थान बड़े ही शान्त और एकान्त स्थान में था लेकिन इस आक्रमण ने वहाँ की शान्ति भंग कर दी थी। इस महल्ले में ट्राटस्की का मकान, सबसे अन्त में बाईं ओर था।

मैंने मोटर रोकी। कूद कर पुलिस के खीमे की तरफ दौड़ा—जो खासकर यहाँ की हिफाजत के लिये तैनात थी। पुलिस के सिपाही नितान्त भयभीत थे। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनके हाथ में कोई हथियार नहीं था। उनके हाथ एक दम खाली थे।

मुझे उनकी सलामी लेने की फुरसत नहीं थी। मैंने झुंझलाहट के साथ पूछा—"क्या मामला है ?"

सब के सब एक साथ ही बोल उठेः—"हम पर हमला किया गया था। उनके दल में कम से कम बीस आदमी थे। उनमें से कुछ-एक सैनिक वेष में थे।

हमलोगों को उनकी नीयत का कैसे पता लग सकता था। उन्होंने तीन सौ के लगभग गोलियाँ भीतर की ओर चलाईं !"

मैं—"अन्दर कोई मारा तो नहीं गया ?"

सिपाही—"हमलोगों को कुछ पता नहीं।"

इसी समय खुफिया विभाग के अनेक कर्मचारियों के साथ इस्ट्राडा और गैलिएडो आ पहुँचे। थोड़ी देर बाद, पुलिस विभाग के प्रधान, जो से मैनुएल नुनेज, जिनके मातहत मैं काम करता था—आ पहुंचे; क्योंकि मैंने उन्हें सूचना भिजवा दी थी। उन्होंने चिन्तातुर होकर हमलोगों से पूछा—"क्या आक्रमणकारियों ने ट्राटस्की को मार ही डाला ?"

हमलोग मकान के फाटक पर पहुँचे। उसे हम छोटा मोटा किला कह सकते हैं। वह मकान बहुत सादा था। पिछली सदी के अन्त में बना था। अंग्रेजी के टी (T) अक्षर के आकार का वह था। उसके चारों ओर लोहे के जंगले (रेलिंग) लगे थे। उन्हें हटाकर उनकी जगह बहुत ऊँची संगीन दीवाल खड़ी कर दी गई थी। जगह-जगह पर उस दीवाल पर पहरे के लिये गुम्मदनुमा चौकियाँ बनी थीं। उन चौकियों ने ही उस मकान को किले का रूप दे दिया था। लेकिन उसका विशाल फाटक, जो हर वक्त बन्द रहता था—ऊँची दीवालों तथा गुम्मदों को देखकर इसे लोग जेलखाना ही समझ सकते थे, रहने का मकान नहीं। इस बूढे क्रान्तिकारी की अपनी जिन्दगी के लिए कितनी सावधानी रखनी पड़ती थी, तोभी उसे शायद मार ही डाला गया !

हमलोगों ने एक साथ ही घंटी बजायी और फाटक को ढकढकाया। दूसरे ही क्षण उसमें जरा-सा फाँफर हुआ और किसी ने भीतर से हमलोगों का परिचय पूछा। हमलोगों ने अपना नाम बतला दिया और अपना बिल्ला दिखलाया। इसके बाद फाटक खुला और हमलोग भीतर बाग में दाखिल हुए। दीवाल

से घिरे रहने पर भी उस आहाते में यह सबसे रमणीक स्थान था। इसमें तरह-तरह के पेड़-पौधे लगे थे। क्यारियाँ किते से सजायी गई थीं। बीच का मैदान खूब साफ-सुथरा था। घास अच्छी तरह सँवारी हुई थी।

मैंने पूछा—"यहाँ की क्या हालत है?"

यह प्रश्न ट्राटस्की के सेक्रेटरी और रक्षकों से किया गया था। वे सबके सब जवान और तगड़े आदमी थे। उनके हाथों में रिवाल्वरें चमक रही थीं मानों संभावित आक्रमण का मोकाबला करने के लिये वे तैयार हों। तोभी उनके व्यवहार से मुझे विस्मय हुआ। वे हथियार से लैस थे, उनकी आकृति में कठोरता थी तोभी वे पूर्ण शान्त थे। साथ ही, उनकी खामोशी उससे भी अधिक चकित कर देनेवाली थी। वे मेरे प्रश्नों का उत्तर केवल 'हाँ' और 'नहीं' में देते थे। लेकिन इतना तो हमलोगों को स्पष्ट मालूम हो गया कि ट्राटस्की साफ बच गये हैं। इससे हमलोगों को थोड़ी शान्ति मिली।

ट्राटस्की का पौत्र इस्तेवान बाग में चुपचाप खेल रहा था। वह फ्रांस से हाल में ही आया था। उसकी उम्र कोई बारह साल की थी। उसके पैर में पट्टी बंधी है।

मैंने पूछा—"उसके पैर में क्या हुआ?"

रक्षक—"एक गोली उसके पैर में लग गई थी। चोट संगीन नहीं है।"

इस्टेवान ने एक बार हमलोगों की ओर देखा, फिर अपने खेल में लग गया। इसी वक्त श्री ट्राटस्की अपनी पत्नी के साथ आगये। उन्होंने बड़े स्नेह और आदर से हमलोगों का स्वागत किया। यह उनका साधारण स्वभाव था। वे लोग भी पूरी तरह शान्त थे। उन लोगों को देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि कुछ ही देर पहले उनके मकान पर इतना बड़ा काण्ड हो गया है। मानों, सारी घटना नकली थी।

श्री ट्राटस्की हमलोगों के सामने खड़े मुस्कुरा रहे थे। उनकी आँखें उसी तरह चमक रही थीं, उनका चेहरा उसी तरह गंभीर और निर्विकार था ! उनकी पत्नी के चेहरे पर उसी तरह मृदुता विरजमान थी।

लेकिन, इतने बड़े खतरे के बाद भी वे इस तरह शान्त क्यों थे? क्या संकटों, मुसीबतों, विपत्तियों और खतरों की जिन्दगी बिताते बिताते उनका हृदय इतना कठोर हो गया था कि डर का उनपर कोई असर नहीं पड़ता था। कोई भी घटना उनके दिल को दहला नहीं सकती थी। मेरे मन में एक शंका उठी। मैं क्षण भर अनिश्चित उनकी ओर देखता रहा। क्या उन पर सचमुच हमला किया गया था या यह बनावटी हमला था ?

श्री ट्राटस्की हमलोगों को अपने अध्ययन-कक्ष में ले गये। उस कमरे में किसी तरह की सजावट नहीं थी। कमरा पुस्तकों, अखबारों, मासिक-पत्रों तथा अन्य तरह के कागजों से भरा था। ये सब सामान किते से सजाकर रखे गये थे। श्री ट्राटस्की का अध्ययन-कक्ष उस भवन का सबसे उत्तम कमरा था।

सबके बैठ जाने के बाद श्री ट्राटस्की ने धीमी आवाज में यों कहना शुरू किया:—

"हम दोनों (पति-पत्नी) अपने-अपने कमरे में सो रहे थे। हमलोगों के सोने का कमरा हमारे अध्ययन-कक्ष और हमारे पौत्र के कमरे के बीच में है। फटाफट की आवाज से हमलोगों की नींद टूट गई। पहले तो मैंने समझा कि आतिशबाजी की आवाज है क्योंकि धार्मिक उत्सवों के अवसरों पर यहाँ बहुधा इस तरह की हरकतें हुआ करती हैं। लेकिन मेरा यह भ्रम तुरत मिट गया क्योंकि धड़ाका बन्दूकों का था। हमलोग चट चारपाई के नीचे चले गये। मेरी पत्नी ने मुझे ढकेल कर कोने में कर दिया और कहा कि चुपचाप उतान पड़े रहिए। वह कुछ देर तक इस तरह खड़ी रही, मानों अपने शरीर पर वार रोककर मेरी रक्षा करना चाहती

हो; लेकिन मैंने उसे भी पास ही लेटा लिया। इसी से हमलोगों के प्राण बच गये। हमलोगों ने देखा कि वे सब इस्तेवान के कमरे के दरवाजे से, अध्ययन-कक्ष के दरवाजे से, स्नान-गृह तथा हमारे शयन-कक्ष की खिड़कियों से एक साथ ही गोलियाँ भीतर की तरफ चला रहे थे। जबतक गोलियाँ चलती रहीं, हमलोग उसी तरह पड़े रहे। उसके बाद देखते हैं तो हमारे शयन-कक्ष और हमारे पौत्र के बीच के दरवाजे पर तुरत फटने वाला बम रखा है। हमलोगों ने तो यही समझा था कि इस्तेवान को उन सबों ने खत्म कर दिया होगा......

मैं गौर से उस महान् क्रान्तिकारी का चेहरा देख रहा था। उनकी अवाज शान्त पर साथ ही दृढ़ थी। उनमें एक बार के लिये भी आवेश के लक्षण नहीं दीख पड़े।

वे कहते जा रहे थे :—

"आक्रमणकारी करीब बीस थे और उनके पास टामी गनें थीं। वे लोग इस इतमीनान के साथ यहाँ से गये कि उन्होंने मुझे मार डाला है। उनके चले जाने पर हमलोग आग बुझाने के लिये बाहर निकले जो हमारे अध्ययन-कक्ष के दरवाजे को जला रहा था। उसी वक्त मेरी निगाह उस बम पर गई। मेरे पौत्र के कमरे से उन्होंने एक बम फेंका भी था लेकिन वह खिड़की से टकराकर बाग में जा गिरा और उसका कुछ अंश जल गया। वे मुझे मार डालना ही नहीं चाहते थे वल्कि इस मकान को भी जला कर भस्म कर देना चाहते थे।"

मैं—"क्या वे यह चाहते थे कि यहाँ कोई निशान या शिनाख्त तक नहीं रह जाय ?"

ट्राटस्की—"यह भी वे चाहते रहे होंगे। लेकिन इससे अधिक वे लोग मेरे संग्रह को मिट्टी में मिला देना चाहते थे। पेरिस में भी उन्होंने इसी तरह का प्रयोग किया था। वहाँ उन्होंने ब्लोपाइप से इस्पात का एक दरवाजा जला डाला और १५० पौंड मेरे अमूल्य कागजातों को नष्ट कर दिया। इस बार तो

मेरे कागजातों के जलाने के और भी यथेष्ट कारण थे। क्योंकि उनलोगों को मालूम हो गया है कि मैं स्टालिन की जीवनी लिख रहा हूँ। यही कारण है कि वे लोग अपने साथ अनेक भड़कने वाले बम लेते आये थे।"

मैंने अपने मन में सोचाः—"इतने अधिक आक्रमणकारी, इतनी संख्या में आग उगलने वाले हथियार, बम तक; तोभी इनलोगों को कुछ नहीं हो सका! यह बड़ी विचित्र बात है !"

श्री ट्राटस्की अपनी बात कहते जा रहे थेः—

"हम लोगों को सबसे अधिक चिन्ता इस्तेवान की थी। हम लोगों ने सोचा कि उसे अवश्य ही मार डाला गया होगा। लेकिन गोलाबारी बन्द होते ही वह हमलोगों की तरफ दौड़ पड़ा। हमलोगों की तरह वह भी इस आक्रमण से स्तब्ध था। पर वह भी बच गया था, क्योंकि हमलोगों की तरह वह भी चारपाई के नीचे लेट गया था।"

थाड़ी देर बाद ही मेरे सभी साथी और रक्षक जमा हो गये। तब हमलोगों ने देखा कि आक्रमणकारियों ने दरवाजों को तोड़ डाला था। वे लोग भीतर किस तरह आ गये? हम सब प्रवेश-द्वार पर गये। वहाँ राबर्ट शेल्डन हार्ट नहीं था। निश्चथ ही आक्रमणकारी उसे उठा ले गये।.

इसके बाद हम लोग बाग में गये। श्री ट्राटस्की चाहर-दीवारी के बाहर कभी भी नहीं जाते थे। विचक्षण मस्तिष्क वाला यह ठिंगना मनुष्य जहाँ एक ओर संसार को अपने मस्तिष्क से प्रकाश देता था वहाँ अपने हाथों से प्रत्येक पेड़-पौधे को पालता-पोसता था। उसके इस भव्य भवन के भीतरी भाग को देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि यह किसी क्रान्तकारी का निवासस्थान है। इसे देखकर यही प्रतीत होता था कि कोई कुलीन वर्ग का अवकाश-प्राप्त व्यक्ति इस शान्त वातावरण में एकान्त-वास कर रहा है।

मैंने पूछाः—"आपका क्या अनुमान है? किस व्यक्ति के दल ने यह प्रयास किया होगा।"

ट्राटस्कीः—"मैं सब कुछ जानता हूँ। मेरे साथ आइए!"

उन्होंने यह बात इस इतमीनान और दृढ़ता से कही, मानों उनके पास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हो।

उन्होंने अपना दाहिना हाथ मेरे कन्धे पर रख दिया और मुझे धीरे-धीरे उस पिंजड़े के पास ले गये जिसमें उनके पालतू खरगोश थे। खरगोशों में उनकी खाश दिलचस्पी थी। वे अपने हाथ से ही उन्हें चारा देते थे। वहाँ पहुंच कर वे ठमक गये और चारों ओर इस तरह दृष्टि दौड़ाई मानों यह जानना चाहते हों कि आसपास, कोई है तो नहीं, उन्होंने अपना दाहिना हाथ अपने मुँह पर इस तरह रखा, मानों अत्यन्त गोपनीय बात कहने जा रहे हों। तब उन्होंने बड़ी धीमी आवाज में, पर दृढ़ विश्वास के साथ कहाः—

"इस आक्रमण का उन्नायक जोसेफ स्टालिन है और उसके सहायक जी० पी० यू० हैं।"

उनकी बात सुनकर मैं दंग रह गया। मैं उनका चेहरा देखने लगा। मुझे आशा थी कि वे कुछ लोगों का नाम बतलावेंगे जिनका हाथ इस घटना में था। मेरा पहला सन्देह और भी दृढ़ हो गया। मैंने अपने मन में कहाः—"निश्चय ही यह बनावटी घटना है।"

क्षणभर बाद श्री ट्राटस्की ने कहाः—"प्रमुख साम्यवादियों को गिरफ्तार कर स्टालिन के समर्थकों पर मुकदमा चलाइए, आप अपराधियों को पकड़ लेंगे।"

मैंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन मेरा विश्वास इस बात पर दृढ़ होता गया कि यह बूढ़ा क्रान्तिकारी [illegible] कर रहा है।

उनसे आज्ञा लेकर मैंने जाँच का काम आरंभ किया। सबसे पहले मैंने उन कमरों की जाँच कर लेना चाहा जिनमें ट्राटस्की, उनकी पत्नी और उनका पोता रहते थे। मैंने गिनकर देखा कि दरवाजों, खिड़कियों और दीवालों में कुल हत्तर छेद बन्दूक की गोलियों के थे। इनमें से दो ट्राटस्की की चारपाई और एक उनकी पत्नी की चारपाई में थे। एक जगह फर्श पर बिछी दरी में भी गोली घुस गई थी। इससे मुझे यह असंभव प्रतीत हुआ कि इस कमरे में मौजूद व्यक्ति कभी भी जिन्दा बच सकता था। क्या मैं इनकी बातपर विश्वास कर लूँ कि आक्रमणकारियों ने हर तरफ से गोले चलाने शुरू कर दिये? ऐसी हालत में तो वे एक दूसरे को ही ख़त्म कर देते।

श्री ट्राटस्की की आज्ञा से ही उनके रक्षकों ने अपनी जवान बन्द कर ली थी, तो भी मैं एक बार फिर उनसे पूछताछ कर लेना चाहता था। यह तो प्रारंभिक जाँच थी। जरूरत होने पर बाजाप्ता बयान लिये जा सकते थे। उस रात को प्रवेशद्वार पर रावर्ट शेल्डन हार्ट का पहरा था। वह गायब था। आक्रमणकारी उसे सचमुच उठा ले गये थे अथवा वह भी आक्रमणकारियों से मिला था! श्री ट्राटस्की और उनके साथी पहले विचार के थे यद्यपि इसका उनके पास कोई खास सबूत नहीं था। इस बात का स्पष्टीकरण आवश्यक था। उनके अन्य कर्मचारी थे: हेरोल्ड राबिन्स, (यह रक्षकों का प्रधान था) ओटो शुस्लर यह जर्मन था), वाल्टर कार्लें तथा चार्ल्स कार्नेल, ये लोग रक्षक भी थे और सेक्रेटरी भी, लेकिन जैक कूपर केवल रक्षक था।

मैंने पूछा:—"आपके परिवार के सिवा इस मकान में और कोई नहीं है?"

ट्राटस्की—"हमलोग और नौकर-चाकर और......"

मैं—'और' क्या?

ट्राटस्की—"रोजमर दम्पति—अल्फ्रेड तथा मारगराइट रोजमर ! ये लोग फ्रांसीसी हैं।"

ये लोग ट्राटस्की के पुराने मित्र थे। प्रथम विश्वयुद्ध के समय पेरिस में इनसे ट्राटस्की का परिचय हुआ था। अल्फ्रेड रोजमर लेखक और पत्रकार था। वह भी पुराना क्रान्तिकारी था और ट्राटस्की के विचारों का समर्थक था। कई महीने पहले ये फ्रांस से यहाँ आये थे। इस्तेवान इन्हीं के साथ आया था। ये शीघ्र ही वापस जानेवाले थे।

मैंने ट्राटस्की के कर्मचारियों से पूछाः—"आपलोगों को यहाँ कौन काम करना पड़ता है ?" उनलोगों के उत्तर से प्रगट हुआ कि ट्रारस्की के जीवन की रक्षा उनका सब से प्रमुख काम है। इसके लिये वे अपने प्राणों को भी संकट में डाल सकते हैं।

मैं–"लेकिन इन आक्रमणकारियों से तो आपलोगों ने इनकी रक्षा नहीं की ?"

ओटो ने कहा कि उसके मशीनगन का मुँह बन्द कर दिया गया था। दूसरों ने कहा कि हमला इतनी तेजी से और असामयिक तरीके से हुआ कि हमलोग स्तब्ध हो गये। इसके अलावा उनका दल संगठित था और बहुत लोग उसमें थे। हथियार भी उनके पास काफी थे।

मेरा इरादा तो हुआ कि सभी को उसी वक्त गिरफ्तार कर लूँ। लेकिन मैंने धैर्य से काम लिया और शान्ति से जाँच कर लेने का निश्चय किया।

घर में कुल तीन नौकर थेः कारमेर पाल्मा (रसोईदारिन), बेलन इस्ट्राडा (नौकरानी) और मालक्विस वेनिट्ज (नौकर)। दोनों छोकड़ियाँ तो बुरी तरह डर गई थीं। कारमेन पाल्मा की हालत तो सबसे खराब थी। वह थरथर काँप रही थी। आँखें उठाकर मेरी तरफ देखने का साहस भी उसे नहीं था। मुझे इनपर सबसे ज्यादा सन्देह हुआ और इन्हें गिरफ्तार कर लेना चाहा।

इनसे जिरह करने पर शायद मुझे वह सूत्र मिल जाय जिसकी खोज में मैं था; क्योंकि मेरे मनमेंबार-बार यही बात उठती थी कि यह हमला बनावटी था।

मैंने यह जानना चाहा कि यह केवल मेरी ही धारणा है या मेरे साथियों की भी। इससे मैंने इस्ट्राडा और गैलिएडो से पूछाः—"तुमलोगों का क्या ख्याल है?"

दोनों ने मेरे सन्देद का समर्थन किया।

मैं ऊपर कह चुका हूं कि ट्राटस्की ने अपनी हिफाजत के जो उपाय किये थे उससे वह मकान अजेय किला बन गया था। भीतर रक्षा का जो प्रबन्ध था उनसे उत्तम और पूर्ण कुछ हो नहीं सकता था। सारी बातों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता था कि यह बूढ़ा क्रान्तिकारी जानता था कि इसका जीवन खतरे में है और इसके दुश्मन बड़े ही बलशाली हैं। इसलिये इसने अपने बचाव के लिये कोई कोर-कसर नहीं रख छोड़ी थी।

सदर दरवाजे में दो सीखचे लगे थे। एक सीखचा हटा देने से दरवाजा पेंच पर ही खुल सकता था। वहाँ बिजली का प्रकाश इतना तेज था कि बाहर खड़े आदमी को भलीभाँति देखा और पहचाना जा सकता था। बुर्ज पर मशीन-गन लगी थी और वहाँ चौबीसो घंटे पहरा रहता था। वहाँ से वह बाग और रास्ता दोनों स्पष्ट दीख पड़ते थे। वहाँ से दोनों स्थानों पर गोलाबारी भी की जा सकती थी। बुर्ज से ही फाटक का नियंत्रण होता था। वह बिजली के स्प्रिंग से खुलता और बन्द होता था। मुलाकाती के पहचान लेने पर स्प्रिंग दबाकर फाटक खोल दिया जाता था। इस तरह फाटक खोलने के लिये दोनों जगहों के पहरेदारों का एकमत होना आवश्यक था। क्योंकि एक लोहे के सीखचों को हटाता था और दूसरा स्प्रिंग दबाता था।

मैंने चकित होकर पूछाः---"इतनी सतर्कता के बाद भी आक्रमणकारी भीतर किस तरह आ सके?"

ओटोः—"हमलोग भी अभी तक इसका कोई निश्चत उत्तर नहीं पा सके हैं। हमलोगों का अनुमान है कि शेल्डन को धोखा हुआ। उसने किसी एक आक्रमण-कारी को दोस्त समझ लेने की भूल की।"

इस उत्तर के बाद मैं चुप हो गया और जाँच के काम में लग गया। मकान के प्रत्येक भाग को सचेत करने के लिये वहाँ घंटी का प्रबन्ध भी था। बाग के चारों ओर जो दीवाल थी उस पर बिजली के तारों का इस तरह जाल फैला था कि उन्हें छूए बिना दीवाल पर चढ़ जाना असंभव था। उन तारों के स्पर्श से ही सचेत करनेवाली घंटी बजने लगती थी और रक्षक के बुर्ज में लगे छोटे बल्ब जल उठते थे। ये बल्ब एक तख्ते पर लगे थे। इनसे केवल इतना ही नहीं प्रगट होता था कि खतरा उपस्थित है बल्कि यह भी मालूम हो जाता था कि खतरा दीवाल के किस हिस्से में उपस्थित है। इसके साथ ही, इन सारी क्रियाओं का संबंध अहाते से बाहर पुलिस के कैम्प से था जो बाहर पहरा देते थे। इसलिए यदि यह आक्रमण बनावटी नहीं था तो इसमें ट्राटस्की के किसी न किसी रक्षक, खासकर राबर्ट शेल्डन का हाथ अवश्य था जो उस समय सदर फाटक के पहरे परथा। इस बात की बहुत अधिक संभावना प्रतीत होती थी। इन सारी बातों को देखते हुए मेरा सन्देह दृढ़ से दृढ़तर होता गया कि यह आक्रमण किसी भी हालत में वास्तविक नहीं हो सकता। यह अवश्य ही बनावटी था।

मैंने पूछा—"मोटरों की कुंजी किसके पास रहती है?"

मुझ से कहा गया कि सावधानी और सतर्कता के ख्याल से कुंजियाँ मोटरों में ही लगी रहती हैं ताकि खतरे के समय उन्हें ढूँढना न पड़े।

यदि इसे सही मान लें तो तुरत यह प्रश्न उठता है कि आक्रमणकारियों को यह बात कैसे मालूम हो गई थी कि वे गाड़ियों पर चढ़ कर भागने के

लिये आये थे। उन्हें यह बात किसने बतलाई कि कुंजी गाड़ी में ही लगी रहती है। यह काम भी शेल्डन का ही हो सकता है!

यहाँ से कुछ ही दूरपर वाइना स्ट्रीट और सैनपेड्रो स्ट्रीट के मोड़ पर एक पुरानी फोर्ड गाड़ी मिली थी।

मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि सड़क कीचड़ से लथपथ थी। गाड़ी कीचड़ में फँस गई थी। आक्रमणकारियों में घबराहट थी, इसीलिये उनलोगों ने उसे ठेलकर बाहर निकालने की कोशिश नहीं की और उसे योंही छोड़ दिया नहीं तो वे सहज में उसे निकाल कर बाहर कर सकते थे। हमलोगों ने सहज में ही मोटर बाहर कर ली। इस गाड़ी के गन्तव्य मार्ग से इतना तो विदित होता था कि आक्रमणकारी परबुस्को नदी को पार कर उत्तर की तरफ जाना चाहते थे। यह नदी ट्राटस्की के मकान के पीछे बहती है। मैंने हुक्म दिया कि सभी निशानों का पता लगाया जाय और जो भी सूत्र मिलें उनकी जाँच की जाय।

परबुस्को नदी के किनारे मुझे रस्से की सीढी मिली जिसमें लकड़ी के डंडे लगे थे और रस्से के एक सिरे पर लोहे का अंकुसा था। इससे यह प्रगट हुआ कि आक्रमणकारी पूरी तैयारी के साथ आये थे। अगर सदर फाटक से भीतर जाने का मौका न मिलता तो वे इससे काम लेते। गाड़ी से थोड़ी दूर पर हमलोगों को बिजली की आरी मिली, लोहे के छड़ मिले, जिससे चोर लोग दरवाजा खोलते हैं। वे बन्दूकें, जो फाटक पर पहरा देनेवाले सिपाहियों के पास थीं, बहुत से कारतूस तथा टामसन पिस्तौल में आपसे आप गोली मारने वाला यंत्र भी मिले।

थोड़ी देर बाद मुझे खबर मिली कि मेरिडा स्ट्रीट में एक लावारिस डॉज गाड़ी पड़ी है। मेरिडा स्ट्रीट वहाँ से काफी दूर थी। मैं वहाँ फौरन पहुँचा।

यह भी ट्राटस्की की ही गाड़ी थी। गाड़ी में नीला पायजामा, उसी रंग क जाकेट, दो चमड़े की कमर-पेटियाँ (बेल्ट), कारतूस रखने का चमड़े का केस और एक कुल्हाड़ा मिले। इन सब सामानों को मैंने अपने हवाले किया क्योंकि जाँच के काम में ये बड़े सहायक साबित हो सकते थे! इन सामानों के मिलने से इतना और भी स्पष्ट हो गया कि आक्रमणकारियों में कुछ-एक ने पुलिस का वेप भी धारण किया था।

वहाँ से मैं ट्राटस्की के मकान पर वापस आया। मेरे मन में यह धारणा प्रबल होती जा रही थी कि यह आक्रमण बनावटी था लेकिन इस धारणा को पुष्ट करने के लिये मुझे कोई सबूत नहीं मिल रहा था; क्योंकि सारी घटना पलक मारते हो गई थी। इस आक्रमण में अनेक लोग—कम से कम बीस शामिल थे, इससे जाँच के काममें सहूलियत नहीं हो सकती थी! तब क्या इस तरह के षड्यंत्र को सफल बनाने के लिये बीस आदमियों का आपस में मिल जामा संभव था? घटना तो प्रत्यक्ष थी। बीस आदमियों ने साथ मिलकर आक्रमण किया था। इसलिये यदि स्टालिन को बदनाम करने के लिये ट्राटस्की ने इस आक्रमण का आयोजन अपने ही आदमियों से नहीं कराया था तो निश्चय ही इस में स्टालिन का हाथ है क्योंकि स्टालिन के सिवा ट्राटस्की का दूसरा कोई ऐसा शत्रु नहीं था जो उनकी जान का ग्राहक होता। यहाँ बसने के लिये राज्य को उन्होंने जो वचन दिया था उसका उन्होंने पूरी तरह पालन किया था अर्थात् राज्य की राजनीति में उसने कभी भी किसी तरह का दखल नहीं दिया। किसी राज्य ने उन्हें शरण नहीं दी। मैक्सिको सरकार ने उन्हें शरण दे कर बड़े साहस का परिचय दिया। मैक्सिको के साम्यवादियों ने उसी समय से उन पर आक्रमण करना शुरू कर किया था। जब कभी उन्हें मौका मिला उन्होंने मैक्सिको की सरकार को उभाड़ा कि वह ट्राटस्की को देश से निकाल दे।

इसलिये मेरे सामने दो संभावनाएँ उपस्थित हो गईं जिन्हें मुझे सुलझाना था। या तो यह आक्रमण खुद ट्राटस्की की चाल थी या स्टालिन के गोयन्दों ने इसकी तैयारी की थी। मैं यह बात जानता था कि जी० पी० यू० साम्यवादियों सदा दूर रहता है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और वह ऐसे लोगों से काम लेता है जिन्हें बहुत लोग नहीं जानते या जो लोग साम्यवादी दल से अलग ही रहना चाहते हैं। ट्राटस्की भी मेरे इस मत से सहमत थे। तो भी उन्होंने मुझ से कहा कि मैं मैक्सिको के साम्यवादियों को गिरफ्तार करूं क्योंकि इससे आक्रमणकारियों का पता लग जायगा। ऐसा कहने में उनका क्या उद्देश्य था, जब वे अच्छी तरह जानते थे कि बिना पक्का सबूत के मैं किसी को गिरफ्तार नहीं कर सकता?

लेकिन यदि यह आक्रमण बनावटी हुआ तब तो मेरा काम हल्का हो जायगा। लेकिन यदि इस आकमण में जी० पी० यू० का हाथ था तब तो मुझे ऐसे लोगों का सामना करना था जो बड़े ही होशियार थे और इस तरह की हरकतों के लिये सिद्धहस्त थे। ऐसी हालत में, मेरा काम बहुत ही जटिल और संगीन हो जाता था। ट्राटस्की का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि संसार के कोने कोने के लोग जाँच के हरेक काम का गौर से अध्ययन करेंगे। मेरे जीवन में इस तरह के संगीन और जटिल काम से कभी मोकाबला नहीं पड़ा था।

मैंने पूछताछ तुरत शुरू कर दी। मुझे आशा थी कि इससे मुझे सही सूत्र मिल जायगा। बाहर जिन पुलिसवालों का पहरा था उनसे आक्रमण के बारे में कुछ व्यौरा मिला। उनका बयान इस प्रकार है:—

रात को तीन बजे के बाद पुलिस की वर्दी में हमलोगों ने तीन आदमियों को आते देखा। उनके साथ एक आदमी फौजी पोशाक में था। पोशाक से वह

लेफ्टिनेन्ट मालूम होता था। हमलोगों ने समझा कि पुलिस सदर दफ्तर से गश्ती के लिये लोग भेजे गये हैं। ये लोग हमलोगों के पास आये और पूछाः—कहो दोस्तो! क्या हाल चाल है?

हमलोगों ने कहाः—कोई नया समाचार नहीं है!

इसी समय हमलोगों ने अन्य कई आदमियों को वहाँ आते देखा। हमलोग आगे बढ़कर उनसे बातचीत करना चाहते थे। इसी समय उन तीनो ने हमलोगों की ओर पिस्तौल तान दी और कहाः—खबरदार! हाथ-ऊपर!

हमलोग उनका मोकाबला नहीं कर सके। उन तीनों ने हमारे हथियार छीन लिये और खीमे के भीतर ले गये। वहाँ तीन और आक्रमणकारी आ गये। दो पुलिस की वर्दी में थे। तीसरा फौजी वर्दी में था। यह तीसरा बरसाती पहने था। उसकी टोपी पर मेजर का बिल्ला था। भीतर पुलिस के जो सिपाही सो रहे थे उनके हथियार भी छीन कर उनलोगों ने सबको बाँध दिया। मेजर के बैज वाले ने चिल्ला कर कहाः—"दोस्तो! अलजमन चिरंजीवी हो। नूनेज का नाश हो! हमलोगों ने पुलिस की सभी चौकियों पर कब्जा कर लिया।"

वहाँ जो भी हथियार थे, सबको लेकर वे वहाँ से चले गये। पहरे पर उन्होंने एक आदमी को तैनात कर दिया जो सादी पोशाक में था। इसके बाद ही गोलों की आवाज सुनाई पड़ी जो मशीनगन के छूटने की थी। गोलाबारी बन्द होते ही हमलोगों की रखवाली करनेवाला भी चम्पत हो गया। हमलोगों ने देखा कि आक्रमणकारी भागे जा रहे हैं और उनके साथ ट्राटस्की का एक रक्षक भी है, जिसे हमलोग बाब के नाम से जानते थे।

मैंने पूछाः—"वे लोग बाब को जबर्दस्ती लिये जा रहे थे या वह उनके साथ अपनी मर्जी से चला जा रहा था?"

पुलिस अफसर अवेल गोजलिज ओर्टिज ने उनलोगों को अच्छी तरह देखा था। उसने कहाः—

"वे लोग उसे घसीट नहीं रहे थे। वह चुपचाप उनके साथ चला जा रहा था मानों वह अपनी मर्जी से जा रहा हो।"

मैं—"तुम लोगों ने गाड़ी ले जाते देखा था ?"

पुलिस—"हमलोगों को ठीक-ठीक दिखाई नहीं दे सका। हमलोगों ने केवल इतना देखा कि उनमें से कुछ लोग गाड़ी पर सवार हो कर तेजी से भागे।"

मैं—"वे लोग घर के अन्दर किस तरह घुसे ?"

पुलिसः—बाव को उनके साथ जाते देख कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसने ही उन्हें भीतर जाने दिया। उस समय वही सदर फाटक के पहरे पर था। इतना तो निश्चय है कि यदि मकान के अन्दर भेदिया नहीं होता तो वे भीतर कभी नहीं घुस सकते थे।

ट्राटस्की के निवास-स्थान के रक्षकों का सर्दार जीस राड्रीगेज कसास था। यह पुलिस की १७ वीं कम्पनी का छोटा अफसर था। यह इस पद पर तीन साल चार मास अर्थात् रूस के इस क्रान्तिकारी के पहुंचने के समय से ही तैनात था। इसलिये इसके बयान को मैंने महत्वपूर्ण समझा।

आरंभ में यहाँ तैंतीस आदमी पहरे के लिये रखे गये थे। इस पर यहाँ के साम्यवादियों ने आन्दोलन शुरू किया कि रूस के इस निकलुआ के पहरे की हिफाजत के लिये राज्य का बहुत अधिक धन बर्बाद किया जा रहा है। परिणाम यह हुआ कि पहरेदारों की संख्या घटा कर दस कर दी गई। ये दो दल में बाँट दिये गये और प्रत्येक दल लगातार चौबीस घंटा पहरा देता था। उनके साथ जो हथियार थे उनके अलावा उन्हें पाँच बन्दूकें, पाँच टामीगन और २५० कार्तूस दिये गये थे। इस तरह मैक्सिका राज्य की सरकार ने बोल्शेविकों के

इस बूढ़े सर्दार की रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर दिया था, जिसे संसार में कहीं शरण नहीं मिली थी।

ट्राटस्की को राड्रीगेज कसास पर अटूट विश्वास था। उसे वह अपना दोस्त मानता था। जब कभी ट्राटस्की बाहर जाता यह अफसर उसके साथ अवश्य रहता। ट्राटस्की अकसर उसे खिलाता पिलाता भी था। ट्राटस्की की पत्नी और उसके पोते के साथ भी यही बाहर जाता था। आक्रमण के समय इसकी ड्यूटी नहीं थी, यह अपने घर पर था। दुर्घटना का संवाद पाते ही वह वहाँ दौड़ा आया। सारी बातें मालूम हो जाने पर उसने कहाः—

"यह बनावटी कार्रवाई नहीं है।"

आरंभ से ही उसे शेल्डन के तौर-तरीके पर सन्देह था। उसने कहाः—

"पहरे के पुलिस अफसरों के लिये भी यह फाटक नहीं खुलता था। तब उसने आक्रमणकारियों के लिये फाटक कैसे खोल दिया। मेरे सिवा तो किसी को भीतर जाने की आज्ञा नहीं थी।"

मुझे रसोईदारिन तथा नौकरानी पर सन्देह था। इसलिये उन्हें गिरफ्तार कर मैंने घुड़सवारों के बैठक में भेज दिया। वे लोग इतने आतंकित थे कि उन्हें मुँह खोलने के लिये मुझे किसी तरह का प्रयास नहीं करना पड़ा। उन लोगों के बयान के अनुसार ट्राटस्की बहुधा अपने सेक्रेटेरियों के साथ बैठकर विचार विनिमय किया करता था। उसी तरह की एक बैठक आक्रमण के ठीक एक दिन पहले हुई थी। उसमें सभी सक्रेटरी तथा दोनों फ्राँसीसी मेहमान भी शामिल थे। बैठक गुप्त थी और ढाई घंटे तक चलती रही। शाम को साढ़े तीन बजे से ६ बजे तक। बैठक के बाद—खासकर भोजन के बाद ओटो शुसलर और चार्ल्स कार्नेल बड़े चंचल और परीशान दीख पड़े। वे लोग लगातार अपने कमरों

में से निकलकर ट्राटस्की के कमरे में जाते थे और उससे कुछ सायँ-सायँ बातें करते थे।"

वे दोनों औरतें कुछ सुन नहीं सकी थीं। इस तरह आने-जाने की ओर नौकरानी का ध्यान रसोईदारिन ने आकृष्ट किया था। ये दोनों प्रायः दस बजे सोने चली गईं, गोली की आवाज से इनकी नींद खुली और ये चौंक पड़ीं। रसोईदारिन ने ओटो को उस तरफ से पैजामा पहने आते देखा था। उनके हाथ में रिवाल्वर थी। वे चुपचाप रसोई घर के पास जाकर खड़े हो गये और एक गोली भी नहीं चलाई। यदि आक्रमणकारी शत्रु थे तो इन्होंने गोली क्यों नही चलाई?

कमरे से बाहर निकलकर रसोईदारिन ने देखा कि सभी सेक्रेटरी ट्राटस्की के सोने के कमरे में जमा हैं। थोड़ी देर के बाद ही ट्राटस्की हाथ में रिवाल्वर लिये भोजन करनेवाले कमरे में गया। सभी शान्त थे। केवल ओटो रह-रहकर परीशानी का चिह्न प्रगट करता था। रसोईदारिन को देखकर ट्राटस्की ने उससे पूछा थाः—

"तुझे तो चोट वगैरह नहीं लगी?

"जी नहीं।"

ट्राटस्की ने उससे कहा कि वह जाकर नौकरानी को देख आवे। वह दौड़ी गई और नौकरानी को साथ लेती आई। बारूद से उसके शरीर का अगला भाग काला हो गया था। बतलाये जाने पर उसने हाथ से नाक पोंछ लिया और मुस्कुरा दिया।

६ बजे क करीब रसोईदारिन भोजन करनेवाले कमरे में थी। उसने चार्ल्स कार्नेल को राड्रीगेज कसास के साथ प्रवेश करते देखा था। उसने राड्रीगेज को यह कहते सुना थाः—

"तुमने देखा न? मैंने कहा था कि यह बड़ा ही खतरनाक होगा।"

दोनों औरतों का ख्याल था कि यह बनावटी कार्रवाई थी। इसमें उसके मालिक और सभी सेक्रेटरियों का हाथ था। यदि इनका बयान सही था तब तो मेरा पहला अनुमान ही सच निकलता था।

इस बयान के बाद तो मेरे लिये क्षणभर भी रुकना संभव नहीं था। मैंने तुरत ओटो शुसलर और चार्ल्स कार्नेल को गिरफ्तार कर लिया। चार्ल्स कार्नेल क बयान से कोई नयी बात नहीं प्रगट हुई। उसने कहा:—"मैं सोया हुआ था। मशीनगन की आवाज से मेरी नींद खुली। मैंने समझा कि मेरे साथी किसी आक्रमणकारी को खदेड़ रहे हैं। उसी समय किसीने अंग्रेजी में चिल्ला कर कहा:—"अपनी जगह से हिलो डुलो मत! तुम्हें कुछ नहीं होगा।"

मैंने अपनी रिवाल्वर को ढूंढ़ा पर वह नहीं मिली। मुझे सहसा याद आ गया कि मैंने अपनी रिवाल्वर हेरोल्ड राबिंस को दिन में ही दे दी थी। हमलोग अपनी बन्दूकें अकसर एक दूसरे को दे दिया करते थे। इसके बाद मैं अपने कमरे के दरवाजे की तरफ गया। मुझे देखते ही हेरोल्ड ने चिल्ला कर कहा —चार्ल्स! अपना सिर नीचा कर लो ताकि वे तुम्हें देख नहीं सकें।"

इस आदेश के बावजूद भी मैंने बुर्ज की ओर देखा जहाँ रक्षक पहरा देता था। मैंने वहाँ तीन आदमियों को खड़े पाया। इनमें से दो काली पोशाक में थे और एक की पोशाक हलके रंग की थी। मैं अपनी राइफल लेने के लिए पीछे मुड़ा क्योंकि मैं आँगन में जाना चाहता था। मैं हलके काले रंग का पायजामा पहने था। मैंने काले रंग का कोट पहन लिया ताकि अँधेरे में दुश्मन मुझे अपना निशाना आसानी से नहीं बना सकें। मैं बाहर निकल ही रहा था कि हेरोल्ड ने फिर चिल्लाकर कहा:—

"अपना सिर नीचा कर लो ताकि वे तुम्हें देख नहीं सकें।"

"इस आदेश ने ही मेरे प्राण बचाये। हेरोल्ड टामी गन चलाने वाले को स्पष्ट देख रहा था। वह अपने दरवाजे पर राइफल ताने खड़ा था। जहाँतक मेरा अनुमान है आक्रमणकारियों का पूरे मकान पर कब्जा नहीं था। उस समय मैंने किसीको आँगन में दौड़ते देखा था पर मैं उसे पहचान नहीं सका। मैंने उसपर वार किया पर वार खाली गया। मैंने ओटो को अपने कमरे से ट्राटस्की के कमरे में जाते हुए देखा था। हेरोल्ड ने उसे भी चेतावनी दी थीः—

"ओटो ! सावधान ! तुम खतरे में हो।"

गोलाबारी बन्द होने के बाद हमलोग पहरे के रक्षकों के कमरे में हेरोल्ड से जा मिले। मैंने कहाः—ट्राटस्की के कमरे में जाकर उन्हें देख आऊँ क्या?" इसपर हेरोल्ड ने कहाः—"पहले मुझे रोशनी जला लेने दो।"

इसके बाद हमलोग ट्राटस्की के अध्ययन कक्ष की ओर दौड़ पड़े। कमरे के दरवाजे पर ताला लगा था। तब मैं आँगन की तरफ दौड़ा। आक्रमण के पहले या बाद मोटर की आवाज मेरे कान में नहीं पड़ी थी। बाद को ही हमलोगों को मोटर गाड़ियों तथा शेल्डन के गायब होने का समाचार मिला।"

इस बीच मेरे अफसरों ने बिजली की उस आरी का भी पता लगा लिया जो ट्राटस्की के मकान के पास मिली थी। इस आरी को सुसेसर्स आफ जेम्समेएट की दूकान से खरीदी गई थी। कोई सज्जन पुरुष काली मोटर पर चढ़कर वहाँ गये थे। गाड़ी पर न्यूयार्क अथवा न्यूजर्सी का नम्बर था। उसने आरी ले ली और कोयकन में २३ लन्दन स्ट्रीट में बिल भेजने के लिये कह दिया। खोज करने पर यह पता गलत साबित हुआ। इससे इतना तो मालूम हो गया कि इस आक्रमण की तैयारी में अथवा इस आक्रमण में मैक्सिको से बाहर रहनेवालों का भी हाथ था!

अड़तालीस घंटे के भीतर ही मैंने ट्राटस्की के दोनों सेक्रेटरियों को गिरफ्तार कर लिया था। इसी समय मुझे नुनेज का फोन मिला। इसलिये मैं पुलिस सदर दफ्तर के लिये रवाना हो गया। जेनरल ने संक्षेप में मुझ से कहाः—"मैंने तुम्हें यह कहने के लिये बुलाया है कि ट्राटस्की ने प्रजातंत्र के राष्ट्रपति के पास विरोध का एक पत्र अभी भेजा है। उस पत्र में उन्होंने इस बात की शिकायत की है कि उनके सेक्रेटरियों और नौकरों को अकारण गिरफ्तार कर लिया गया है और मुझे निराश्रय छोड़ दिया गया है। उनका कहना है कि उनके आदमी निर्दोष हैं। इस दुर्घटना से राष्ट्रपति झुंझला उठे हैं। उनका हुक्म है कि तुम ट्राटस्की के मकान पर जावो, अपने साथ उनके आदमियों को भी लेते जावो और उनसे माफी माँगो।"

इससे मुझे गहरी चोट लगी। मैंने कहाः—"मैं राष्ट्रपति के आदेश का पालन करूँगा। लेकिन मैं इतना स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरी कोई भी कार्रवाई निरंकुश तरीके से नहीं हुई है। यदि मुझे इस घटना का सही सही पता लगाना है तो मुझे सभी जायज और उचित उपायों से काम लेने के लिये स्वतंत्रता होनी चाहिये। यह मामला बहुत स्पष्ट नहीं है। मैं यह स्वीकार कर लेना चाहता हूं कि अभी तक मुझे कहीं से भी प्रकाश नहीं मिला है, कोई भी विश्वसनीय सूत्र नहीं मिला है। अभी तक जो बातें मालूम हो सकी हैं उनसे तो यही प्रगट होता है कि यह बनावटी कार्रवाई है।"

इसी समय मुझे ट्राटस्की का वह पत्र मिला जिसे समाचार पत्रों में प्रकाशित कर वह इस घटना का वर्णन संसार को देना चाहता था। अन्य बातों के साथ साथ उन्होंने मुझे लिखा था।

"इस आक्रमण को आप अप्रत्याशित घटना नहीं समझ लें जिसका संबंध

डाइस[1] या डीगोरिबेरा[2] से हो...“इस तरह का यह पहला आक्रमण नहीं है। मैंने इतनी सावधानी और सतर्कता से इसलिये काम लिया था कि मुझे आशंका थी कि जी० पी० यू० मुझपर अवश्य हमला करेगा। आज जब मुझ पर आक्रमण हो गया तब मेरे ही मित्रों और सहायकों को गिरफ्तार किया जाता है, मेरे ही पुराने मित्रों पर सन्देह किया जाता है, लेकिन मेरे वास्तविक दुश्मनों की ओर आँख उठा कर देखा भी नहीं जाता, जिन्हें संसार जानता है।”

अन्त में उन्होंने लिखा थाः—“आक्रमणकारियों ने जो जाल फैलाया था उससे उनकी चालों का साफ पता चल जाता है। उनलोगों ने ‘अलमजन चिरंजिवी हो’ का नारा लगा कर यह दिखलाना चाहा था कि मैक्सिकों के नागरिक ही उत्तेजित हो गये हैं और उन्होंने ही यह आक्रमण किया है। समाचार पत्रों से ही प्रगट होता है कि जेनरल अलमजन के एक आन्दोलन में रिबेरा का नाम आ गया है। जी० पी० यू० का यही स्थिर सिद्धान्त रहा है कि दुश्मन के प्राण भी ले लो और हत्या का अपराध दूसरे के सिर मढ़ दो।” इसके बाद उन्होंने बाइसेण्ट लोम्बार्डो टोलेडनो तथा मैक्सिको के साम्यवादी दल के अन्य सर्दारों के सिर दोष मड़ते हुए लिखा थाः—“उनलोगों ने मेरे खिलाफ इसी उद्देश्य से आन्दोलन किया था कि जी० पी० यू० को मुझ पर आक्रमण करने के लिये राजनितिक आड़ मिल जाय। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे आदमियो को गिरफ्तार करने के पक्ष में आप के पास उतना ही कच्चा सबूत है जितना डिगोरिवेरा

१—सुप्रसिद्ध डाइस कमेटी का अध्यक्ष। यह कमेटी अमेरीका विरोधी कार्रवाइयों की जाँच के लिये तैनात की गई थी।

२—शिल्पी डीगोरिवेरा जेनरल अलमजन की उमीदवारी का समर्थक था। उसने ट्राटस्की से अपना संबंध तोड़ लिया था। आरंभ में उस पर भी सन्देह किया गया था कि इस षड्यंत्र में उसका भी हाथ था।

के पक्ष में था। मैं समझता हूं कि आपकी जाँच में जिच पड़ गई है। प्रत्येक दिन कुछ न कुछ ऐसी नयी बात मालूम होती है जिससे उस बनावटी ढाँचे का परदा खुलता जा रहा है और असली अपराधी तथा उनके संरक्षक और उत्तेजित करनेवाले सामने आते जा रहे हैं।"

अन्त में उन्होंने लिखा थाः—जाँच के काम में बाधा न पड़ने देने के ख्याल से मैं अबतक चुप रहा। लेकिन जांच के काम ने जो गलत रास्ता पकड़ा है उसे देखते हुए मुझे मजबूर होकर मैक्सिको की सरकार तथा दुनिया का ध्यान आकृष्ट करना पड़ता है।

अखबारों में जो सनसनी पैदा करनेवाले लेख, समाचार तथा संपादकीय प्रकाशित हुए वे मेरे काम में सहायक न होकर बाधक ही हुए। जनता असली बात जानने के लिये आतुर थी लेकिन मुझे तो हर उचित तरीके से ही काम लेकर अपने ढंग पर जाँच का काम करना था।

यहां यह भी लिख देना उचित होगा कि डीगोरिवेरा आक्रमण की इस घटना से अपना नाम संबधित देखकर संयुक्त राष्ट्र के लिए रवाना हो गया। वहां जाकर वह अखबारों में वाहियात वक्तव्य देने लगा। वह बहुत बड़ा कलाकार था, लेकिन नाम के लिये मरता था, इसलिये अपने को प्रकाश में लाने के लिये इस घटना से लाभ उठाने के प्रलोभन को वह नहीं रोक सका। तीन मास पहले ट्राटस्की से उसकी अनबन हो गई थी तो भी उनका हवाला देते हुए उसने लिखा कि मैं भी आक्रमणकारियों का इसी तरह शिकार हो सकता हूँ क्योंकि मेरे ही प्रयत्नों के फलस्वरूप मैक्सिको की सरकार ट्राटस्की को अपने राज्य में शरण देने के लिये राजी हो सकी।

इसका परिणाम यह हुआ कि जनमत का ध्यान किसी दूसरी ओर आकृष्ट हो गया और इससे जाँच का काम और भी कठिन हो गया।

उसी दिन तीसरे पहर चार बजे क करीब मैं अपनी ही गाड़ी में ट्राटस्की के दोनों सेक्रेटेरियों को लेकर उनके यहाँ पहुंचा। उन्होंने मित्रता का ऊपरी प्रदर्शन कर मेरा स्वागत किया। उनकी हरकतों से स्पष्ट झलक रहा था कि बड़ी कठिनाई से वे अपने क्रोध को दबा रहे थे। उनकी नुकीली सफेद दाढ़ी बराबर काँपती रहती थी। वे रह रहकर उसपर हाथ फेरते थे और और बड़बड़ा उठते थे।

मैंने कहाः—आपके सेक्रेटेरियों को गिरफ्तार करने के लिए मैं आपसे क्षमा माँगता हूं। पूछताछ तथा जिरह के बाद मुझे इतमीनान हो गया कि ये निर्दोष हैं। वे आपके विश्वास के योग्य हैं।"

इसके बाद मैंने उनकी रसोईदारिन और नौकरानी के बयानों की चर्चा की और कहा कि इस बयान के बाद मुझे आपके सेक्रेटेरियों को गिरफ्तार करना अनिवार्य हो गया था। मेरी बात सुनकर उन्हें अतिशय विस्मय हुआ। उन्होंने कहाः—

"मसविरा तो हमलोग रोज ही करते रहते हैं। भोजन के वक्त भी हमलोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की चर्चा करते रहते हैं। इसके अलावा मेरा अध्ययन-कक्ष हमारे सभी साथियों के लिए सदा खुला रहता है। लेकिन ता० २३ को तो हमलाग कभी एक साथ बैठे ही नहीं क्योंकि मैं संयुक्त राष्ट्र अमेरीका संबंधी काम में अतिशय व्यस्त था। उस दिन तो मैं उस काम में सबेरे साढ़े सात बजे से रात को ग्यारह बजे तक जुटा हुआ था।

मेरे यहाँ टाइप करने का काम करनेवाली महिला मैडम फनी यानोविच प्रतिदिन केवल तीन चार घंटे तक काम करती हैं। लेकिन उस दिन उन्हें बराबर मेरे साथ रहना पड़ा। बगल के कमरे में उनका दफ्तर है लेकिन डिक्टा-फोन रेकर्ड लेने के लिये उन्हें मेरे अध्ययन-कक्ष में बार-बार आना पड़ता था। मैं अकेला ही काम करता हूँ। मुझे यह भी याद है कि उस दिन पाँच बजे शाम के लगभग शेल्डन मेरे अध्ययन-कक्ष में आया था। उसने मुझ से कहा था—

"मैं चेतावनी की लाइनों की जाँच करना चाहता हूं।" काम में वाधा पड़ने के कारण मैंने झुंझलाकर कहा:—इस तरह की वाधाओं में काम करना कठिन हो जाता है। मुझ पर रहम करो। मुझे तंग न करो।" वह चुपचाप चला गया। उसके आने के थोड़ी देर बाद कूपर मेरे यहाँ आया था। उस दिन यही दो व्यक्ति मेरे यहाँ आये थे और तो कोई नहीं।"

मैंने कहा:—तब तो आपकी रसोईदारिन ने झूठ कहा है। ऐसी हालत में तो उसे निकाल देना चाहिए।"

पहले तो उन्होंने मेरे सुझाव का विरोध किया लेकिन बाद को स्वीकार किया कि वह आवश्यक है।

लेकिन उनकी पत्नी का क्रोध शान्त नहीं हुआ था। उन्होंने मुझ से कुछ कहा नहीं, लेकिन जब मैंने अभिवादन किया तो मेरी ओर घूरकर देखा। साथ ही उन्होंने ओटो और चार्ल्स को गले लगाकर बहुत अधिक स्नेह दिखलाया।

मेरा काम हो जाने के बाद वहाँ से मैं विदा हो गया। अपने साधारण शिष्टाचार के अनुसार ट्राटस्की मेरे साथ दालान तक आये।

बनावटी आक्रमण की धारणा मेरे दिमाग से हटने लगी। मेरे सामने अब प्रश्न यह था कि में कौनसा सूत्र पकड़ूँ। कम्यूनिस्ट और उनसे सहानुभूति रखनेवाले अपनी सारी ताकत लगाकर यही सिद्ध करना चाहते थे कि यह आक्रमण या तो बनावटी था या जेनरल अलमजन के समर्थकों की तरफ से हुआ था। वे लोग जाँच के काम को इसी स्रोत से ले जाने के लिये तरह तरह की प्रेरणायें दे रहे थे ताकि सारा दोष शिकार के ही मत्थे मढ़ा जाय। लेकिन इतना तो अब मैं भी महसूस करने लग गया कि उन्हीं लोगों की तरफ मुझे जाने की दिशा को मोड़ना होगा। इस काम में मुझे संसार के सबसे अधिक संगठित और भयानक जल्लाद जी० पी० यू० पुलिस संगठन का सामना करना था।

(२) जी० पी० यू० की हरकतें

उस आक्रमण के सात दिन बाद ट्राटस्की ने पबलिक प्रोजीक्यूटर (सरकारी वकील) पुलिस के मुख्य अफसर तथा मैक्सिको के परराष्ट्र मंत्री के पास बहुत बड़ा खत लिखा । उस पत्र का उद्देश्य यथासंभव पुलिस की जाँच को मदद पहुंचाना तथा जनमत को सही रास्ते पर ले जाना था । वास्तव में उस आक्रमण के बारे में ट्राटस्की का यह वक्तव्य था । जी० पी० यू० की हरकतों का उसमें पूरा विश्लेषण था । इसीलिए यह पत्र यहाँ ज्यों का त्यों उधृत किया गया है ।

"ता० २४ मईको इस आक्रमण के बारे में मेरा बयान लिया गया । बयान के सिलसिले में सरकारी वकील ने मुझसे पूछा था कि मुझे किस पर सन्देह है । उत्तर में मैंने कहा कि जोसेफ स्टालिन । मैंने उन्हें विस्तृत रूप से यह भी बतलाया कि विदेशों में जी० पी० यू० का संगठन किस तरह चलता है । अन्तर्राष्ट्रीय सौजन्यता के ख्याल से मेरे बयान का यह अंश हटा दिया गया है । चूंकि अधिकारी वर्ग इस आक्रमण का पता लगाने के लिए आतुर हैं, इसलिए मैं इस पत्र में अपने बयान की संक्षिप्त चर्चा कर देना आवश्यक समझता हूँ क्योंकि जाँच के काम के पथ-प्रदर्शन के लिए वह बहुत अधिक सहायक होगा ।

"मैं इस बात पर बहुत अधिक जोर देना चाहता हूं कि इस तरह के आक्रमण की तैयारी केवल क्रेमलिन और स्टालिन ही जी० पी० यू० के विदेशी एजेंसी के द्वारा कर सकते थे । विगत कई वर्षों में स्टालिन ने सैंकड़ों ऐसे लोगों को मरवा डाला जिन पर मेरे मित्र या सहायक होने का उसे सन्देह हुआ । मेरी पत्नी, एक

पौत्र तथा मुझे छोड़कर उसने मेरे समूचे परिवार को खत्म कर डाला। उसने जी० पी० यू० के सर्दार इगनस रीस को विदेश में अपने एजेंएटों द्वारा मरवा डाला क्योंकि उसने खुल्लम-खुल्ला मेरे विचारों का समर्थन किया था। यह बात फ्रांस की पुलिस तथा स्विट्जलैंण्ड की अदालत ने साबित कर दी है।

जी० पी० यू० के जिन एजेण्टों ने इगनस रीस की हत्या की; उन्होंने ही मेरे पुत्र का पेरिस में अन्त किया। १९३६ ई० की ७वीं नवम्बर को उन्हीं लोगों ने पेरिस के साइण्टिफिक इनस्टीट्यूट पर हमला किया और मेरे बहुत से महत्व-पूर्ण कागज पत्रों को चुरा ले गये। मेरे दो सेक्रेटरी इरविन उल्फ और रुडल्फ क्लेमेण्ट जी० पी० यू० के एजेण्टों द्वारा मार डाले गये। पहला स्पेन में और दूसरा पेरिस में। सन् १९३६ में मास्को में जो मुकदमें चलाये गये थे उनका एकमात्र उद्देश्य यही था कि मुझे कोई देश अपने यहां टिकने नहीं दे और मैं जी० पी० यू० के हवाले कर दिया जाऊँ।

"इन सभी हत्याओं का एकमात्र उद्देश्य मेरा अन्त करना था। इनके पीछे स्टालिन का हाथ है। उसका साधन रूस की खुफिया पुलिस है। इसके गुप्त एजेण्ट सभी देशों में हैं। उसी ऐजेंसी का नाम जी० पी० यू० है। जो लोग इन हत्याओं पर परदा डालना चाहते हैं वे ही मेरे उपरोक्त कथन का खण्डन कर सकते हैं या उसपर सन्देह प्रगट कर सकते हैं।

"ऊपर मैंने जो कुछ कहा है उससे मेरा मतलब यह नहीं है कि इस काम में इनकी मदद करने में हिट्लर की खुफिया पुलिस जेस्टापो के सहयोग की संभावना नहीं है। संप्रति जी० पी० यू० और जेस्टापो में संपर्क स्थापित है। इस बात की सभावना है कि कभी-कभी वे दोनों एक ही एजेण्ट से काम लेते हैं। जर्मनी के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों का कहना है कि जेस्टापो मुझे मानव समाज का शत्रु समझता है। इसलिये इस आक्रमण में दोनों की खुफिया पुलिस का संचालन-सूत्र

जी० पी० यू० के हाथ में हो सकती हैं क्योंकि मेरी हरकतें हिटलर की अपेक्षा टालिन को ज्यादा खटकती हैं।

"जी० पी० यू० के विदेशी संगठन की एक स्थिर नीति है। जेनरल क्रेविजकी, इगनस रीस तथा जी० पी० यू० के अन्य विदेशी एजेण्टों ने उससे नाता तोड़ कर इस विषय पर काफी प्रकाश डाला है। इन्हीं के आधार पर मैं जी०पी०यू० के तरीकों का वर्णन करने जा रहा हूँ।

"यह बात भी प्रकाशित कर देना नितान्त आवश्यक है कि जी० पी० यू० की सारी हरकतों का संबंध कोमिण्टर्न से है। उसी के हाथ में इसका संचालन सूत्र है। उसके सदस्य बड़े ही महत्त्वपूर्ण और गोपनीय ऊँचे ओहदों पर हैं। अपने कारनामों के लिये जी० पी० यू० को कानूनी अथवा अर्द्ध कानूनी आड़ की जरूरत पड़ती है तथा ऐसे सहायकों की जिनकी सहानुभूति के कारण उसे एजेण्ट मिल सकें। यह संरक्षण और सहयोग उसे भिन्न-भिन्न देशों के साम्यवादी दल से मिल जाता है।

"जी० पी० यू० के वैदेशिक संगठन की साधारण योजना निम्न प्रकार है:—जिस देश का साम्यवादी दल कामिण्टर्न से संबद्ध है, वहाँ की केन्द्रीय समिति में जी० पी० यू० का एक प्रमुख नेता सदस्य के रूपमें अवश्य रहेगा। उसके इस गुप्त भेद को केवल दल के मंत्री तथा एक दो प्रमुख सदस्य ही जानते हैं। दूसरे लोग उसकी विशेष प्रतिष्ठा के कारण केवल अनुमान ही कर सकते हैं। क्सिको में जी० पी० यू० के एजण्टों का क्या साधन और तरीका है, यह मैं हीं जानता, लेकिन और देशों में उनका जो रूप है उससे अनुमान किया जाता कि माक्सिको में भी उनका अड्डा उसी तरह से कायम होगा।

"जी० पी० यू० का प्रतिनिधि केन्द्रीय समिति का सदस्य होने के नाते समिति के सभी सदस्यों से मिल-जुल सकता है, उनका अध्ययन कर सकता है,

उनकी योग्यता और क्षमता के अनुसार उन्हें अपने काम के लिए चुन सकता है और इस तरह धीरे-धीरे उन्हें जुल्म, अत्याचार और हत्या के काम में लगा सकता है। आवश्यक होने पर घूस देकर भी उनसे काम ले सकता है।

"फ्रांस तथा स्विट्जलैंण्ड में इगनस रीस की हत्या तथा मेरे पुत्र तथा अन्य व्यक्तियों को आतंकित करने के लिए जो कारवाइयाँ की गईं थीं उनका भण्डा-फोड़ होने पर इन बातों का पता लगा था। संयुक्त राज्य अमेरिका में वाल्टर क्रिविस्की ने स्पष्ट दिखला दिया था कि अमेरीका के साम्यवादी दल के प्रधान मंत्री ब्राउडर की बहन ही उसकी सिफारिश पर जी० पी० यू० के गुप्तचर का काम करती थी। यह एकाकी उदाहरण नहीं है। बल्कि यही साधारण नियम है।

"हरेक बात से यही प्रगट होता है कि इस आक्रमण के मुख्य संगठनकर्त्ता बाहर से आये थे। यह संभव है कि सारी व्यवस्था कर चुकने के बाद प्रत्येक को अपना-अपना काम सौंपकर उनलोगों ने मैक्सिको छोड़ दिया हो। जी० पी० यू० की कार्रवाइयाँ प्रायः इसी तरह की होती हैं क्योंकि रूस की सरकार की संस्था होने के कारण वह दूसरे देशमें अपना कोई निशान नहीं छोड़ना चाहती।

"रूस के जो भी वैदेशिक राजदूत किसी विशेष काम से किसी देश में जाते हैं, वे जी० पी० यू० के प्रतिनिधि की राय से ही सारा काम करते हैं। बिना उसके सहयोग के न तो उन्हें उस देश की वास्तविक दशा का पता ही लग सकता है और न अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए उन्हे आवश्यक साधन ही प्राप्त हो सकता है क्योंकि वहाँ के साम्यवादी दल पर उसका पूरा प्रभाव रहता है। विदेशी राजदूत जी० पी० यू० के उस प्रतिनिधि तथा उसके गुप्तचरों के सहयोग से अपने काम की सारी तैयारी करता है, जिनसे सहयोग मिलने की संभावना होती है। उनकी जाँच पड़ताल करता है और धीरे-धीरे अपना उद्देश्य उनपर

प्रगट करता है। इस काम में प्रधान हाथ स्थानीय प्रतिनिधि तथा उसके गुप्तचरों का रहता है।

"मेरे निवास-स्थान पर जिन पाँच पुलिसवालों का पहरा था, उनका तथा उनके अफसर सार्जेण्ट कसास का इस आक्रमण में कोई हाथ था या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। पर यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वे पूर्ण तथा अनभिज्ञ या निर्दोष थे क्योंकि जी० पी० यू० के हाथ में दबाव डालने, राजी करने तथा घूस देने के जो साधन हैं, वे संसार की किसी भी संस्था को प्राप्त नहीं होंगे। वे उन्हें समझा सकते थे कि मैक्सिको के नागरिकों का मैं दुश्मन हूं, अथवा उन्हें किसी ऊँचे पद का प्रलोभन दिया हो या बहुत बड़ी रकम घूस में दी गई हो। मैक्सिकों की पुलिस तक पहुंचने का जरिया मिलना संभव नहीं था। इसके लिये उन्होंने स्थानीय एजेण्ट ही नियुक्त, किया होगा। इन्हीं एजेण्टों ने आक्रमण की व्यवस्था की होगी और ये निश्चय ही साम्यवादी दलकी केन्द्रीय समिति के सदस्य होंगे।

आक्रमण की तैयारी के राजनीतिक पहलू से जिन बातों का संबंध रहता है उसे जी० पी० यू० बहुत महत्व देता है—खासकर यदि किसी ऐसे व्यक्ति की हत्या करनी है जो विश्व में आदर की दृष्टि देखा जाता है। तैयारी के इस अंश का भार साम्यवादियों के पत्रों तथा हिमायतियों पर तथा रूसके दोस्तों पर पड़ता है। इसलिये मेरा मत है कि साम्यवादी दलसे संबंध तथा सहानुभूति रखनेवाले जो पत्र हैं उनकी भी छानबीन होनी चाहिए। मेरा इस बात से विरोध नहीं है कि वे लोग मेरे विचारों का खण्डन करते हैं क्योंकि यह तो प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। इससे भी कड़ी आलोचना मेरे विचारों की हो सकती है लेकिन उन लोगों ने इस तरह की कभी कोई आलोचना नहीं की है। उनका विशेष उद्योग मुझे बदनाम करने का ही रहा है। मैं जब

से यहाँ आया हूं तब से वे पत्र सदा यही चेष्टा करते आये हैं कि यहां का जनमत मेरा दुश्मन हो जाय। मेरे बारे में उन्होंने सदा यही लिखा है कि मैक्सिको तथा अन्य देशों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों से मेरा संपर्क है। सिनेटर टोलेन्डानो ने यहाँ तक कह डाला कि मैं मैक्सिको सरकार के विरुद्ध आम हड़ताल का गुप्त आयोजन कर रहा हूँ। इसी तरह की अन्य अनेक बातें इन पत्रों में सदा मेरे विरुद्ध प्रकाशित होती रहती हैं।

"अभी हाल में ही इन्हीं पत्रों में यह संवाद छपा था कि संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिक्रियावादी डिपटी टाइस से मेरा संबंध है और मैक्सिको की सरकार के खिलाफ में उनके पास समाचार भेजता रहता हूं। साधारण बुद्धि से भी परे ये बातें हैं क्योंकि जो दोष मुझ पर लगाये जाते हैं वे मेरे सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं जिनके लिये मैंने सारे जीवन भर काम किया है और मेरे वर्तमान स्वार्थ के भी खिलाफ हैं क्योंकि कोई पागल या महामूर्ख ही अपने आश्रयदाता के विरुद्ध आचरण कर सकता है।"

"आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं कि अनेक अवसरों पर समाचारपत्रों द्वारा मैंने इन अभियोग लगानेवालों को सुझाया है कि इन अभियोगों की जाँच के लिये एक विशेष कमीशन बैठाया जाय जिसके सदस्य सरकार तथा मैक्सिको के क्रान्तिकारी दल द्वारा चुने जायं। लेकिन लोम्बार्डो टोलेन्डानो तथा साम्यवादी दल के अन्य नेताओं ने इसे स्वीकार नहीं किया।

"यह प्रश्न सहज में उठ सकता है कि सिनेटर लोम्बार्डो टोलेन्डानो तथा अन्य साम्यवादी नेता मुझे मैक्सिको सरकार तथा यहाँ की जनता में बदनाम करने की दृष्टि से मुझपर लाञ्छन लगाने के लिए क्यों आतुर रहते हैं? मेरे साथ इनकी व्यक्तिगत अदावत नहीं हो सकती क्योंकि हमलोग एक दूसरे के संपर्क में कभी नहीं आये, इसलिए संघर्ष का कोई प्रश्न नहीं उठ सकता। वे इतनी आतुरता

तथा तत्परता से इसीलिये काम करते हैं कि उन्हें इस तरह के आदेश मिले हैं। और उन्हें यह आदेश कौन दे सकता है? निश्चय ही क्रेमलिन का मालिक, जोसेफ स्टालिन।

"मेरे कहने का यह मतलब कदापि नहीं है कि लोम्बार्डो टोलेडनो तथा मैक्सिको के साम्यवादी दल के नेताओं ने इस आक्रमण की तैयारी में प्रत्यक्ष भाग लिया है। इस संबंध में जी० पी यू० काम का बँटवारा बड़ी खूबी और होशियारी से करता है। वह प्रमुख व्यक्तियों के जिम्मे केवल बदनाम करने का काम सौंपता है और हत्या का काम उन एजेण्टों से करवाता है जो विश्वसनीय हैं पर जिन्हें कम ही लोग जानते हैं।

तोभी सिनेटर टोलेडनो कोई अनुभवहीन युवक नहीं हैं कि वे अपने काम की जिम्मेदारी को न समझते हों। वे जी० पी० यू० के तरीकों से पूर्ण अवगत हैं। वे यह भी जानते हैं कि मेरे परिवार के लोगों तथा मित्रों के साथ क्या बर्ताव किया जा रहा है। दुनिया के कोने-कोने में हम लोग किस तरह सताये जा रहे हैं। यह बात उनसे छिपी नहीं है कि जी० पी० यू० मेरा अन्त करना चाहता है। इसलिये मेरा यह अभियोग सर्वथा जायज है कि मेरे खिलाफ इस तरह के झूठे अभियोगों का प्रचार कर उन्होंने मेरे ऊपर होनेवाले आक्रमण का समर्थन किया है। इसलिये जाँच के लिये यह आवश्यक है कि टोलेडनों से पूछताछ की जाय और उनका बयान लिया जाय।

"यह तो निर्विवाद है कि साम्यवादी दल के नेता जानते हैं कि मैक्सिको में जी० पी० यू० के प्रतिनिधि कौन हैं। मैं यह भी लिख देना उचित समझता हूं कि डेविड अलफरो सिक्विरो स्पेन, मैक्सिको तथा अन्य स्थानों के जी० पी० यू० के प्रमुख सदस्यों का नाम जानते होंगे जो भिन्न-भिन्न अवसरों पर पेरिस

होकर मैक्सिको आये हैं। मुझे मार डालने के लिये जो प्रयास किया गया है तथा उसमें जिन लोगों का हाथ था, उनका पता लगाने के लिये साम्यवादी दल के भूतपूर्व तथा वर्तमान प्रधान मंत्रियों तथा सिक्विरो से पूछताछ करना अत्यन्त आवश्यक होगा। [१]

१—डेविड अलफरो सिक्विरो का नाम प्रस्तावित कर ट्राटस्की ने पुलिस के काम में बड़ी सहूलियत पहुँचाई। आगे की घटनाओं से मालूम होगा कि इस हमले का सारा आयोजन उसी ने किया था।

(३) गिरफ्तारी और बयान

ट्राटस्की के दोनों सेक्रेटरियों को रिहा कर देनेके बाद आनेवाले दिन मेरे लिये यदि वेदना के नहीं तो चिन्ताके अवश्य थे। जिन लोगों को इस तरह के अवसरों से नहीं गुजरना पड़ा है, वे इस बात का अनुमान नहीं कर सकते कि इतनी संगीन घटना के हो जाने तथा सही सूत्र के पता लग जाने के बीच की अवधि पुलिस जाँचकर्ता के लिए कितनी कठिन होती है। एक तो यह घटना यों ही संगीन थी दूसरे उसका संबंध राजनीति से होने के कारण यह और भी संगीन बन गई।

ट्राटस्की के लिखने के अनुसार ही जी० पी० यू० की प्रेरणा से साम्यवादी दल हर तरह का शोरगुल मचाकर अपने को सन्देह से दूर रखना चाहता था, और अपराधियां का पता लगाने का जो एकमात्र सूत्र था उससे पुलिस का ध्यान दूसरी तरफ खींचना चाहता था। ट्राटस्की अबतक तो चुप बैठे थे और विवेक से काम ले रहे थे, लेकिन उन्होंने भी अपनी शान्ति त्याग दी और समाचार पत्रों में विज्ञप्ति पर विज्ञप्ति भेजने लगे जिससे जनमत उनके पक्ष में हो और पुलिस अधिक मुस्तैदी तथा तत्परता से काम ले। ट्राटस्की तथा स्टालिन के दलवालों का झगड़ा इस वक्त और भी जोर पकड़ गया और उसका राजनीतिक प्रभाव स्पष्ट होने लगा।

इन सब बातों के फलस्वरूप पुलिस की बदनामी होने लगी। पुलिस को इस बदनामी से बचाने का भार भी मेरे ही ऊपर था। मुझे उन अभियोगों का खंडन करना पड़ता जो पुलिस को लापरवाह और काहिल साबित करने की

गरज से अखबारों में प्रकाशित होते रहते। अखबारों के संवाददाता मुझे अलग तंग करते। उनलोगों की धारणा थी कि जाँच से हमें जो जानकारी प्राप्त होती है उसे मैं उनसे छिपाता हूँ। अखबारो के पाठक इस घटना के बारे में नयी बातें जानने के लिए व्यग्र रहते थे। उनको संतुष्ट करना इनका कर्त्तव्य था। ट्राटस्की पर आक्रमण अन्तर्राष्ट्रीय घटना थी। इसलिए इनसे संबंध रखनेवाली बातें जानने के लिए यदि संसार के लोग उत्सुक थे तो यह स्वभाविक बात थी।

इस घटना का सबंध युद्ध की प्रगति से भी होने की संभावना थी। यह संभव था कि इस षड्यन्त्र में जेस्टापोके एजेएट भी शामिल थे। इस समय तक हिटलर और स्टालिन में समझौता था इससे यह भी कल्पना की जा सकती थी कि जी० पी० यू०तथा जेस्टापो दोनो के एजएटों ने मिलकर यह काम किया है। यदि यह वात सही साबित हो जाय तो क्या यह नहीं कहा जा सकता था कि वर्लिन और मास्को का संबंध प्रत्यक्ष जितना दिखाई पड़ता है उससे कहीं अधिक गहरा है। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता था कि मैं इस घटना की वास्तविकता का जल्द से जल्द पता लगाऊँ लेकिन संप्रति मैं असमर्थ था। यदि मैं यह कहूँ कि इन दिनों मुझे खाना और सोना तक नहीं अच्छा लगता था तो यह मेरी अत्युक्ति नहीं होगी।

लेकिन नियति मेरी सहायता करने के लिए आप से आप मेरी ओर पैर बढ़ा रही थी। पुलिस की ७५ सैकड़े जाँचों में ऐसा ही होता है। एक दिन की बात है कि मैं लूईमोया स्ट्रीट और अरकोस डेयेलन के चौराहे पर के बार (शराब की दूकान) में गया। दिन के एक बजे का समय रहा होगा। एक टेबुल को घेरकर ट्राम कम्पनी के पाँच कर्मचारी बैठे थे और उसी घटना की चर्चा कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा:—

"इतना तो स्पष्ट हो गया कि पुलिस इस मामले को दबा देना चाहती है और इसके यथेष्ट कारण भी हैं।"

मैंने अपना कान उधर ही लगा दिया। वे लोग शराब पी रहे थे और नशे में भी हो गये थे। जिसने उपरोक्त बात कही थी वह अधेड़ उम्र का था। मोटा भी काफी था। वह नीले रंग का पोशाक पहने था। उसकी बगल में एक बेग लटक रहा था। उसने कहाः—

"अखबार वाले लिखते हैं कि पुलिस जाँच के काम में बहुत आगे बढ़ गई है! यह पढ़कर मुझे हँसी आती है। अभी हाल की बात है। मैं यहीं अपने साथियों के साथ पी रहा था। बगलवाले टेबुल पर टोकबाया का पुलिस मजिस्ट्रेट अपने एक दो साथियों के साथ बैठा था। उसने कहा कि उसने पुलिस की दो वर्दी किसी को मंगनी दी थी और उन्हीं वर्दियों का इस्तेमाल इस आक्रमण में किया गया था। इतने पर भी पुलिसवाले हमलोगों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उन्हें कोई सूत्र नहीं मिल रहा है।"

पहले तो मैंने यही समझा था कि इस बूढ़े ने मुझे पहचान लिया है और मुझे ही लक्ष्य कर यह कह रहा है, लेकिन कोई भी सूत्र मिल जाने पर उसके लिए दौड़ पड़ना मेरी आदत सी थी। चाहे उसमें सार हो या न हो। मैंने तुरत फोन कर अपनी मोटर मंगाई और अपने दफ्तर पहुंचा। मैंने मेजर गैलिण्डो को बुलाकर सारी बातें कह डालीं।

मैंने उससे कहाः—तुम फौरन टोकबाया जाकर उस मजिस्ट्रेट को मेरे पास बुला लावो।

क्षणभर सोच कर उसने कहाः—"सेण्ट्रल डिपार्टमेण्ट (केन्द्रीय विभाग) में मेरा एक दोस्त काम करता है। वही आजकल मजिस्ट्रेट के पद पर है। उसे ही शराब पीने की बहुत आदत है। मैं उसे बुला लाता हूँ।

गैलिण्डो चला गया और अपने दोस्त को खोज ढूंढ कर ले आया। मैं उसे अपने निजी कमरे में ले गया ताकि हमलोगों के काम में किसी तरह की बाधा न

पड़े। उसे देखते ही मेरा मन कहने लगा कि निश्चय ही वह यही व्यक्ति है जिसकी चर्चा उस बूढ़े ने की थी। मैंने यों शुरू किया:—

"सरकारी नौकर की हैसियत से तुम्हारा काम सरकार की मदद करना है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैने तुम्हे यहा क्यों बुलाया है। तुम इसे अच्छी तरह समझते हो और तुम अपने आचरण की सगीनी को भी समझते हो। मैं चाहता हू कि तुम सारी बाते सचमच कह दो।"

क्षण भर के लिये वह भौंचकसा खड़ा मेरा चेहरा देखता रहा। लेकिन उसके चेहरे से प्रगट होने लगा कि वह अपनी गलती महसूस कर रहा है। उसे शान्त करने के लिये और मुझपर विश्वास करने के लिये मैंने उससे कहा:—

मैं जानता हू कि तुम्हारा परिवार बहुत बड़ा है और तुमने जो कुछ किया, महज दोस्ती मे किया। यदि तुम मुझे उस आदमी का नाम बतला दो, जिसने तुमसे ये सामान मागे थे तो मै विश्वास दिलाता हू कि मैं इसकी चर्चा कहीं भी नहीं करूगा। तुम एसा कर किसी के साथ विश्वासघात भी नही करोगे क्योंकि तुम न्याय की मदद करने जा रहे हो। सबसे बड़ा विश्वासघाती तो वह है जिसने धोखा देकर तुम्हे इस स्थिति में डाल दिया है।',

मुझे इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नही पड़ी।

उसने कहा:—कर्नल! अपनी इच्छा के विरूद्ध मैं इस झंझट में फंस गया। ता० १७ मई को चार बजे के लगभग मैं ११ वीं पुलिस डेलिगेशन में अपनी ड्यूटी पर था। उसी समय मेटियो मार्टिनेज मुझसे मिलने आया……

"मेटियो मार्टिनेज? उसका पूरा नाम क्या है?'

"लूई मेटियो मार्टिनेज। बाद को मुझे मालूम हुआ कि वह अपने को केवल लूई भी कहता है।

"ठीक है। आगे क्या हुआ?

"उसने मुझ से कहा कि मेरे लिये पुलिस की तीन वर्दी ऊपर कर दो। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि उसकी आवश्यकता केवल एक जगह प्रवेश पाने के लिये है। उसके दोस्तों से उसे मालूम हुआ था कि कुछ लोग हथियार छिपाये हुए हैं, उसका सही सही पता लगाकर वे लोग सरकारी वकील को उसकी खबर देना चाहते थे। उस समय मुझे किसी दूसरे तरह की शंका नहीं हुई। वह दो तीन बार मेरे पास आया लेकिन मैं इन्तजाम नहीं कर सका। अन्त में मैंने दूसरे दिन सुबह उसे अपने घर पर बुलाया। रात भर मैं उस प्रश्न पर विचार करता रहा और इस नतीजे पर पहुंचा कि वे लोग गैर-कानूनी काम करना चाहते हैं इसलिये उन्हे पुलिस की वर्दी देना जायज नहीं होगा। किसी आवश्यक काम का बहाना बना कर नियत समय पर घर से गायब हो जाने का निश्चय मैंने किया। उसके बाद से मेरी भेंट उससे नहीं हुई।"

"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि तुमने उसे वर्दी नहीं दी ?"

"जी हां। लेकिन मैंने उसे कही और से अवश्य वर्दी दिला दी। पर मैं अब देखता हूँ कि मेरा वह काम की नितान्त अनुचित था।"

इस व्यक्ति से मुझे जो कुछ मालूम हो सका, वह मेरे लिये अत्यन्त मूल्यवान सूत्र था मैंने उसे अनेक धन्यवाद दिये। अब मुझे सही सूत्र मिल रहा था। लूई मेटियो मार्टिनेज का नाम ही सारी घटना की सही कुंजी मुझे प्रतीत हुई। मैंने उसे पूछाः—

"क्या तुम मेटियो मार्टिनेज का पता जानते हो।"

"जी हाँ।"

उसने मुझे उसका पता बतला दिया। मैंने तुरत उसकी गिरफ्तारी का हुक्म जारी कर दिया। जोसे जोपेज मेजिया ने यह काम अपने हाथ में लिया और

चन्द घंटों में ही मेटियो मार्टिनेज को मेरे सामने हाजिर कर दिया। यह किसी स्कूल में शिक्षक था। उम्र लगभग २६ साल की थी। मैक्सिको के साम्यवादी दल का यह सदस्य था। उसने शान्त बने रहने की असफल चेष्टा की। वह डरसा गया। भयभीत होने का कारण भी था। मैंने उससे सीधा प्रश्न किया :–

"पुलिस की वर्दी तुमने किसके लिये प्राप्त की थी? छिपाने या झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं है।"

मेरी धारणा थी कि अनुशासित साम्यवादी होने के नाते वह कड़ा रूख अख्तियार करेगा। लेकिन मेरी धारणा गलत निकली। शायद वह समझता था कि मैं उसके संबंध में बहुत कुछ जानता हू। उसने कहा:—"स्पेन के गृह-युद्ध के समय के भूतपूर्व साम्यवादी मेयर डेविड सेरानो अण्डोनेगुई ने मुझ से वर्दी मांगी थी।

"उसे उसकी क्या जरूरत थी?"

उसने घबराहट के साथ कहा:—"मै ठीक ठीक नहीं जानता। उन्होंने मुझसे केवल इतना ही कहा था कि अलमजन के अनुयायियों ने एक जगह हथियार छिपा रखा है। हमलोग उस जगह की तलाशी लेना चाहते हैं। उसके लिये वर्दी चाहिए। तुम उसे प्राप्त करने की कोशिश करो। मैं उसके लिये यत्न करने लगा।

मैंने देखा कि जितना उसने मुझे बतलाया है उससे कहीं अधिक वह जानता है। मुझे यह भी शक हुआ कि उसने ट्राटस्की के मकान पर के आक्रमण में भी भाग लिया था लेकिन मैंने संप्रति उन बातों की चर्चा नहीं की। मैंने देखा कि मुझे सबसे पहले उस आदमी का पता लगाना चाहिए क्योंकि सारी बातों का केन्द्र वही था। उसे पा जाने के बाद मेरा काम आसान हो जायगा और मैं मुलजिमों को पकड़ सकूंगा।

सेरानो अएडोनेगुई ८५, बावोलेटा स्ट्रीट में रहता था। मैंने अपने साथ पन्द्रह पुलिस के जवानों को लिया और वहाँ जा पहुँचा। रातको ६ बजे थे। मौसम अनुकूल नहीं था। हमलोगों ने दरवाजा भीतर से बन्द पाया। हमलोगों ने बहुत जोर लगाया लेकिन दरवाजा नहीं खोला गया। भीतर से जो उत्तर हमलोगों को मिला उससे मैंने अन्दाज लगाया कि मकान के अन्दर स्पेन जाति के अनेक स्त्री पुरुष हैं।

उस मकान के पास ही एक दूसरा मकान बन रहा था। मैंने चार सिपाहियों को उस मकान से होकर ऊपर चढ़ जाने का हुक्म दिया। वे उस बगलवाले मकान की छत पर चढ़ गये। मकान में रहनेवालों के तीव्र विरोध के बावजूद भी मेरे आदमियों ने नं० ८५ वाले मकान का द्वार खोल दिया।

उसमें स्पेन के शरणार्थी रहते थे। उनमें ५।६ नवयुवक थे जिनका इस घटना से कोई संबंध नहीं था। इस होटल की मालकिन एक अधेड़ औरत थी। उसने बड़े तपाक से कहा:—"मैं अएडोनेगुई की पत्नी हूँ।" उसने हर उपायों से तलाशी को रोकना चाहा। उसने हमलोगों पर यह रोब भी जमाना चाहा कि मैक्सिको के राष्ट्रपति से उसकी घनिष्ठता है। लेकिन इसका हमलोगों पर कोई असर नहीं पड़ा हमलोगों ने डेविड सेरानो अएडोनेगुई को गिरफ्तार कर ही लिया। हमलोगों को कुछ कागजी सबूत भी वहां मिले।

मैं उसे अपने दफ्तर में ले गया। यह साम्यवादी दल का प्रमुख व्यक्ति था। इसने स्पेन के गृह-युद्ध में प्रमुख भाग लिया था। मैक्सिको के साम्यवादी दलकी केन्द्रीय समिति का भी वह सदस्य था।

ये सब सबूत मेरा ध्यान स्टालिन के साम्यवाद की ओर अर्थात् जी० पी० यू० की ओर लिये जा रहे थे। एक नई बात मुझे यह भी मालूम हुई कि इस

व्यक्ति की दो शादियाँ हुई थीं एक स्पेनमें और दूसरी मैक्सिको में। जरूरत पड़ने पर यह भी इसके खिलाफ जबर्दस्त प्रमाण साबित होगा।

उसके घर में जो कागजात बरामद हुए थे उनमें एक पत्र भी था। लिफाफे पर "होटल मैजेस्टिक" का नाम छपा था। लिफाफे पर कैप्टेन नेस्टर, ५४ एवेन्यू गोटेमाला, पता लिखा था। यह बड़े काम का सबूत निकला। यह बात मुझे मालूम थी कि अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड का भूतपूर्व कप्तान नेस्टर सेन्चेज हर्नाण्डेज इस पते पर ठहरा था। इस लिफाफे के मिलने के साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि स्पेन के गृह-युद्ध में भागलेनेवाले साम्यवादियों को ट्राटस्की की हत्या के लिये तैयार किया गया था। इसके पीछे निश्चय ही जी० पी० यू० का हाथ था।

नेस्टर सेन्चेज हरनाण्डेज एवेन्यू गोटेमाला से गायब हो गया था। सेरानों के कागजों में दूसरा पता १०१, कोरेजिडोरा स्ट्रीट भी मिला था। मैंने अपने दो अफसरों—पेड्रो सी० वाल्डेरस और लिबोरियो आर० सैण्टस को वहाँ भेजा। वहाँ नेस्टर का चाचा पहरे पर था। उसकी उम्र पचास के लगभग रही होगी। जिस समय वह मेरे सामने हाजिर किया गया, वह घबराया हुआ था। मैंने उससे कहा: –"तुम्हारे भतीजे नेस्टर के एक दोस्त उसकी तलाश में हैं। स्पेन के गृह-युद्ध में दोनों साथ ही लड़े थे। वह उसके नाम एक पत्र लाये हैं। क्या तुम उसका पता जानते हो?"

या तो वह जानता नहीं था या कुछ बतलाना नहीं चाहता था। मुझे सन्देह हुआ कि शायद वह उसी के साथ रहता हो। इससे मैंने पूछा:—

"तब तुम्हारे मकान में उसका असबाब पत्र कैसे आया!"

इस पर उसने घबरा कर कहा:—"उसका कोई सामान मेरे पास नहीं है। चमड़े का एक छोटा-सा बक्स वह मेरे पास रख गया है।

मैं—"उसी बक्स के बारे में ही तो मैं सब कुछ जानना चाहता हूं। सारी बातें सच सच कह दो।"

इस पर उसने कहाः—"ता० २८ या २६ मई की बात है सबेरे नव बजे नेस्टर मेरे यहाँ आया। उसके हाथ में चमड़े की एक सन्दूक थी। उसके ऊपर नीले रंग का लेवल था और सफेद क्रास का चिह्न था। उस बक्स को वह मेरे यहाँ रखना चाहता था। मैंने उसे अपने कमरे में ले जा कर रख दिया।

"तीन दिन बाद वह आया और पूछा कि क्या मेरे नाम कोई खत आया है? मुझसे नकारात्मक उत्तर पाकर वह मुड़ा और बक्स में से कोई चीज निकाल कर अपनी बरसाती में छिपा लिया। इसके बाद वह चला गया। तीन दिन बाद वह फिर आया। उसके नाम एक खत आया था। यह खत उसके पिता ने लिखा था। मैंने खत उसे दे दिया। खत पढ़कर उसने कहाः—

"इस बक्स को हिफाजत से रखियेगा। यदि कोई पूछने आवे तो कह दीजियेगा कि मैं यहाँ नहीं रहता और मैं कभी आता भी नहीं।"

उस दिन के बाद वह फिर कभी नहीं आया।

मैं—"और तुम्हें उसका वर्तमान पता भी नहीं मालूम है?"

वह—"जी नहीं, मेरा विश्वास कीजिये। मैं उसका पता नहीं जानता।"

मैं—"लेकिन वह सन्दूक? तुम्हारे भतीजे के दोस्त उसी सन्दूक की खोज में हैं। यदि बक्स तुम मेरे हवाले नहीं कर देते तो तुम और तुम्हारा भतीजा दोनों संकट में पड़ सकते हो।"

उसने कहाः—"मैं वह बक्स आपके हवाले कर दूंगा।"

मैंने अपने दोनों अफसरों को उसके साथ भेज दिया। मैं उस बक्स के लिये बेचैन था। उनके वापस आते ही मैंने उस बक्स को खोला। उसके खुलते ही उस घटना की सारी बातें स्पष्ट हो गयीं। उसमें ७वीं कम्पनी के बैज लगे

पुलिस के दो वर्दी थे, दो रस्सी की सीढी और एक स्टार, अपने से छूटने वाली दो पिस्तौल और दो पिस्तौल भरने के यन्त्र।

इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि आक्रमण के वक्त इन्हीं वर्दियों से काम लिया गया था। पिस्तौल उन पुलिस पहरेदारों की थी जो ट्राटस्की के निवास-स्थान पर पहरा दे रहे थे। ये दो सबूत बड़े काम के निकले।

लेकिन बिना नेस्टर को गिरफ्तार किये इस रहस्य का उद्घाटन नहीं हो सकता था। उस रातको मैंने अपने दो अफसरों को नेस्टर के चाचा के मकान पर तैनात कर दिया। मुझे विश्वास था कि नेस्टर अपनी चिट्ठियों की खोजमें तथा अपने बक्स की देखभाल के लिये किसी न किसी वक्त जरूर वहाँ आवेगा। दो दिन की परीशानी के बाद वह पकड़ा गया। मुझे देखते ही उसने बड़े तपाक से अभिवादन किया और कहा:—"कर्नल! मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूं।"

मैं—"तुम मुझे कैसे जानते हो?"

नेस्टर—"मैं ओकसाका का रहनेवाला हूं। आप वहां जब सैनिक अफसर थे तब मैं आपके मातहत काम करता था।

इस तरह हमलोग परिचित निकले और इस परिचय से मैंने पूरा लाभ उठाना चाहा। नेस्टर की उम्र तेईस साल की थी। वह कानून पढ़ता था। उसने साफ साफ मुझे कुछ नहीं बतलाया लेकिन उसके बयान से सारी बातें स्पष्ट हो गईं।

मै—"तुमने ट्राटस्की के मकान पर होनेवाले आक्रमण में भाग क्यों लिया था?"

नेस्टर—"मैं डेविड अल्फरो का दोस्त हू। उसके आग्रह से मैं उसमें शामिल हुआ।"

मैं—"क्या वह भी इसमें शामिल था ?"

नेस्टर—"वही इसका प्रधान सूत्रधार था। स्पेन के गृह-युद्ध के समय डेविड अलफरो से मेरा परिचय हुआ था। विगत अप्रेल में अलफरो ने मुझ से कहा कि मैं तुम्हें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काम में शामिल करना चाहता हूँ। लेकिन उसने विस्तार के साथ कुछ नहीं बतलाया था।"

मैं—"पर बिना कुछ जाने तुम किस तरह राजी हो गये और उसे वचन दे दिया ?"

नेस्टर—"मैं क्रान्तिकारी हूं। रोमांचकता मेरी चिर सहचरी है। डेविड की बात सुन कर मैंने समझ लिया कि कोई रोमांचक काम ही होगा। इससे मैंने पूछने की आवश्यकता नहीं समझी। बादको बातचीत के सिलसिले में मुझे मालूम हो गया कि वह जिस असाधारण काम में मुझे शामिल करना चाहता है उसका संबंध ट्राटस्की के खत्म करने से है। मैंने सुन रखा था कि ट्राटस्की क्रान्ति का भी विरोधी है।

"उसने मुझसे कहा कि उसने नक्शा तैयार कर लिया है। समय पर उसके पास रुपया भी काफी आ जायगा। मैंने देखा कि बहुत बड़ी तैयारी वे लोग कर रहे थे। वे लोग बहुत बड़ी संख्या में बम और पिस्तौल वगैरह खरीद रहे थे। रुपया तो पानी की तरह बहाया जा रहा था। उसने मुझसे यह भी कहा था कि मैं इतने बड़े पैमाने पर तैयारी कर लेना चाहता हूं कि सफलता में किसी तरह का सन्देह नहीं रह जाय। जब काम हाथ में लें तो उसे पूरा ही कर दें।"

नेस्टर अपना बयान दे रहा था और मैं ट्राटस्की की बात सोच रहा था। उन्होंने ठीक ही कहा था कि जी० पी० यू० की तैयारी बड़ी पूर्ण होती है। उसे जिस तरह के आदमी मिल जाते हैं उसी तरह वह अपने काम को बांट देता है। एक तरफ तो उसने ऐसे लोगों को तैयार किया जो अखबारों में

ट्राटस्की को,प्रतिक्रियावादी, क्रान्ति का शत्रु कह कर बदनाम करें और दूसरी ओर उसने ऐसे लोगों को जमा किया जिन्हें मारने और मरने में ही मजा आता था जो स्पेनमें इसी तरह का खेल खेल चुके थे।

जॉच से अबतक जो बातें प्रकाश मे आई थीं उनसे ट्राटस्की का अनुमान सच साबित हो रहा था। अपने वक्तव्य मे उसने अलफरो सिक्विरो का नाम सुझाया था। यह बात अब प्रत्यक्ष हो रही थी कि आक्रमण की तैयारी उसीने की थी और वही इसका सचालक था।

मैंने—"क्या बाहर के लोगों ने भी इसमे भाग लिया था या इसकी कार्रवाई मे शामिल थे ?"

नेस्टर—मैं किसी को पहचानता नही लेकिन मेरी धारणा है कि इस षड्यंत्र का असली सूत्र बाहरवालों के हाथ मे ही था जो केवल इसी काम के लिये यहाँ आये थे। मेरे इस अनुमान का कारण यह है कि सिक्विरो आक्रमण की तैयारी के खास कामों के लिये बराबर गुप्त बैठके किया करता था। असल बात तो यह है कि वह मैक्सिको में रहता था। इसलिये आवश्यक आदमी ढूंढ़ निकालने तथा आक्रमण के निमित्त सामान बटोरने के लिये जी० पी० यू० के एजेन्टों ने सिक्विरो को ही ठीक किया था।

"उन्होंने उसके एक दूसरे चित्रकार दोस्त अण्टोनियो पूजल को भी फांस लिया था। पूजल ने पुलिस की वर्दी प्राप्त करने के लिये मुझपर बहुत दबाव डाला। लेकिन मैंने साफ इन्कार कर दिया। अन्त मे सिक्विरो ने मुझसे कहा कि मैं अप्रत्यक्ष रूप से ही उसकी मदद करता रहू।"

इसके बाद उसने आक्रमण का विस्तृत वर्णन इस प्रकार किया:—

ता० २३ मई को सिक्विरो ने चिली स्ट्रीट और क्यूबा स्टीट के नुक्कड़ पर मुझसे मिलने का वादा किया। रात को दस बजे थे। हमलोग क्यूबा स्ट्रीट के एक

मकान में दाखिल हुए। मकान का नम्बर मुझे याद नहीं है। आधी रात के करीब कई आदमी वहाँ आ गये। मैं किसी को जानता नहीं था। उनके पास चमड़े के बक्स थे। उनमें से उन लोगों ने पुलिस की दो वर्दी और कई हथियार निकाले। हथियारों में एक मशीन गन, चार रिवाल्वर, दो 'थरमोस' रस्सा तथा रबर के दस्ताने थे।

"सिक्किरो की आज्ञा से हमलोग वर्दी पहनने लगे। पूजल ने सेना के लेफ्टनेण्ट की वर्दी पहनी और दूसरे लोगों ने पुलिस की वर्दी। हमलोग इस तरह हँस खेल रहे थे मानों किसी उत्सव में शामिल होनेवाले हों। सिक्किरो बाहर चला गया। उसने हमलोगों को कुछ बतलाया नहीं। पुजल को शायद मालूम रहा हो कि वह कहाँ गया पर मुझे कुछ मालूम नहीं था।

"रात के दो बजे सिक्किरो वापस आया। वह सेना के मेजर की वर्दी में था। न तो हमलोगों ने पूछा और न उसने बतलाया ही कि वह वर्दी उसे कहाँ से मिली। उसने बरसाती कोट पहन रखा था, चश्मा और नकली मोछ लगा लिया था। उसे देखकर हमलोग हँस पड़े। उसने पूछा—"इस पोशाक में हम कैसा लगते हैं?" हमलोगों ने एक साथ ही उत्तर दिया, 'बहुत सुन्दर।" उसके बाद हमलोग उसी वर्दी में हथियार से लैस सड़क पर निकल आये।

मेरे हाथ में स्टार पिस्तौल थी और दो अपने आप भरने वाले यंत्र। पूजल के हाथ में मशीनगन था। दूसरों के पास रिवाल्वर थे। दरवाजे पर भूरे रंग की मोटर खड़ी थी मोटर पर सवार होकर हमलोग कोयकन के लिये रवाना हुए। रास्ते में सिक्किरो ने हमलोगों को आवश्यक हिदायतें दीं कि हमलोगों के बिना गोली चलाये बाहर के पुलिस गारद को अपने कब्जे में कर लेना होगा। मकान के अन्दर दाखिल होने से पहले किसी तरह का शब्द नहीं होना चाहिए। उसने हमलोगों में से प्रत्येक को २५०) रुपये के नोट दिये।

"कोयाकन रोड के पास दो आदमी हमलोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक को मैंने पहचाना। वह जुआन जूनिंग कमाचो था। सिक्विरो ने उससे कुछ बातें कीं। इसके बाद हमलोगों ने वायना स्ट्रीट के सामनेवाली सड़क पर अपनी मोटर खड़ी कर दी और उतर पड़े।

सिक्विरो ने अपनी घड़ी की ओर देखा और पुलिस गारद की तरफ बढ़ने के लिए आदेश दिया। साथ ही पुलिस की वर्दी पहने दूसरे लोग भी उसी तरफ बढ़े। ये दूसरे दल के लोग थे। सिक्विरो के नेतृत्व मे हमलोगों के दल ने ही पुलिस को अचंभे मे डाल दिया। हमलोग पुलिस की वर्दी म थ। इसलिए उन लोगों ने हमलोगों का मोकाबला नहीं किया। इसी समय किसी ने सभवतः सिक्विरो ने ही कहा था:—"अलमजन चिरजीवी हो!"

"दूसरे दलवाले भी दो पुलिसवालों को पकड़ कर ले आये। उनके हथियार भी छीन लिये गये। एक आदमी के साथ मै उनकी निगरानी करने लगा। इसी समय और लोग भी आ गये। वे सादी पोशाक मे थे। उनकी बोली से मैंने समझा कि वे विदेशी थे। वे लोग ट्राटस्की के मकान की तरफ गये। उनके पहुचते ही सदर फाटक खुल गया।"

मैं—"सदर फाटक किसने खोला?"

नेस्टर—"बाद को मुझे मालूम हुआ कि शेल्डन ने फाटक खोला था। सिक्विरो ने रास्ते मे ही हमलोगों से कह दिया था कि हमलोगों का काम आसानी से हो जायगा क्योंकि हमलोगों ने ट्राटस्की के एक रक्षक को मिला लिया है। संभवतः वह शेल्डन ही था। मैंने सिक्विरो से कहा था कि यदि यह व्यक्ति हमलोगों को धोखा दे तब तो हम सबके सब मारे जायंगे? इसके उत्तर मे उसने हसकर कहा था:—"इस तरह का कोई खतरा नहीं है। मैं कच्ची गोलियाँ नहीं खेलता!"

"अन्दर जाते ही मशीन गन ने अपना काम शुरू कर दिया। गोलियों के छूटने की आवाज मेरे कानों में लगातार पड़ने लगी। कुछ मिनट तक ही यह सिलसिला रहा। इसके बाद ही ट्राटस्की के गराज से दो मोटर बाहर की गईं। कोई विदेशी उनमें से निकला और हमलोगों को उनमें लेट जाने का आदेश दिया। बोली से वह फ्राँस का रहने वाला प्रतीत होता था। हमलोग चुपचाप गाड़ी में लेट गये। शेल्डन पहले से ही गाड़ी में था। उसके चेहरे से घबराहट और परीशानी टपकती थी।

"ट्राटस्की के मकान से कुछ दूर पर दूसरी मोटर कीचड़ में फँस गई। उसमें से एक आदमी हमलोगों की मोटर में आगया। बोली से वह क्यूबा का रहनेवाला प्रतीत होता था। कई सड़कों का चक्कर लगाती हमलोगों की मोटर शहर की ओर चली।

"मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मैं किसी फिल्म में काम कर रहा हूँ। अचानक फ्राँसीसी ने वर्दी उतार देने के लिये कहा। मैंने इन्कार कर दिया क्योंकि मैं अण्डबेयर पहन कर नहीं रह सकता था। हमलोगों की मोटर बागियों के महल्ले में पहुँची। हमलोग एक एक करके मोटर से उतर पड़े। वह शेल्डन के साथ मोटर में ही रह गया। मैं समझता हूं कि यही मोटर बाद को कोलोनिया रोका में पाई गई थी।

"मैं टैक्सी पर सवार होकर घर पहुंचा। करीब साढ़े चार का वक्त रहा होगा।"

मैं—"तुम्हारे बक्स में जो रिवाल्वर पाया गया, वह कहाँ से आया?"

नेस्टर—"उन्हीं पुलिस वालों का था जो ट्राटस्की के मकान पर पहरा दे रहे थे। किसी ने मुझे लेते आने के लिये कहा था। मेरा वाला मोटर में ही रह गया था।

मैं—हमले में कितने लोग शामिल थे ?

नेस्टर—बीस के लगभग । आक्रमण का नेता अलफेरो सिक्रिो और वह फ्राँसीसी था जो यहूदी प्रतीत होता था ।

"मेरा निश्चित मत है कि शेल्डन को मिला लिया गया था क्योंकि हमला ठीक उसी तारीख को और उसी वक्त किया गया जब शेल्डन पहरे पर था। उसने ही दरवाजा खोला था। उस फ्रांसीसी ने घूस देकर उसे फोड़ लिया था। शेल्डन से पहले से ही उसकी जान पहचान थी, यह तो हमले के समय प्रगट हो गया। वे दोनों ट्राटस्की के मोटर में साथ ही थे और शेल्डन ही उस मोटर को चला रहा था।"

मैं—क्या तुम उसका होलिया दे सकते हो ?"

नेस्टर—वह युवक है। लंबा है। उस रात को वह हल्के रंग का पैंएट और जैकेट पहने था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उस फ्राँसीसी के साथ उसका मेल-जोल है।

मैं—क्या तुम उस फ्राँसीसी का नाम जानते हो ?

नेस्टर—लोगों ने एक दो बार उसे फिलिप के नाम से पुकारा था। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता ।

नेस्टर के बयान से आक्रमण पर पूर्ण प्रकाश पड़ गया। उसके बयान से दो प्रमुख आक्रमणकारियों का पता भी चल गया। आखिर वे लोग कहाँ छिपे थे ? मुझे ऐसा लगा कि उन्हें पकड़ना आसान काम नहीं है ।

ट्राटस्की और उसके दोनों सेक्रेटरियों के वक्तव्य के बावजूद भी इस बयान के बाद क्या यह माना जा सकता था कि राबर्ट शेल्डन हार्ट अपराधी नहीं था ? इसके साथ ही दूसरा प्रश्न यह उठता था कि वह मैक्सिको से भाग गया या कहीं यहीं छिपा बैठा है ? उसे गिरफ्तार करना सबसे जरूरी था।

नेस्टर के बयान से प्रगट हुआ कि शेल्डन इस फ्राँसीसी यहूदी को जानता था। इसलिये शेल्डन को गिरफ्तार करने के बाद इस यहूदी के बारे में जानना कठिन नहीं होगा। निश्चय ही वह जी० पी० यू० का एजेण्ट और इस हमले का प्रधान सूत्रधार था।

मैंने शेल्डन की गिरफ्तारी के लिये चारों ओर तार भेज दिये। कोई भी बन्दरगाह मैंने नहीं छोड़ा। मैंने इन बन्दरगाहों की पुलिस को कड़ी हिदायत दी कि किसी भी प्रकार शेल्डन भाग नहीं जाने पावे। इसके अलावा मैंने टेलीफोन की सभी लाइनों पर यहाँ तक कि ट्राटस्की की लाइन पर भी सख्त पहरा तैनात कर दिया।

ट्राटस्की के मकान में शेल्डन जिस कमरे में रहता था उसकी तलाशी लेने पर एक कुंजी मिली जो होटल यूरोप के कमरा नं० ३७ में ठीक लग जाती थी। उस होटल में पूछताछ करने से मालूम हुआ कि ता० २१ मई की रात शेल्डन ने इस होटल में एक वेश्या के साथ बिताई थी। उस वेश्या की शिनाख्त भी हो गई। उसने बतलाया कि उस रात को शेल्डन नशे की हालत में था। उसके पास बहुत अधिक रुपये थे। दूसरे जरियों से भी मुझे मालूम हुआ कि शेल्डन के पास अमेरीकन एक्सप्रेस ट्रवलर्स के १० तथा २० डालर के बहुत से चेक थे जिन्हें वह अक्सर बैंकों में भुनाया करता था। आखिर ये रुपये उसे मिलते कहाँ से थे? उसके घर से आते थे या घूस के रुपये थे।

जाँच से मुझे मालूम हुआ कि ट्राटस्की के किसी न्यूयार्क स्थित मित्र की शिफारसी चिट्ठी लेकर शेल्डन विगत ७वीं अप्रैल को यहाँ आया था और ट्राटस्की ने उसी विश्वास पर उसे रख लिया था। इस तरह इस पद पर वह केवल सात हफ्ते से काम कर रहा था। ट्राटस्की समय समय पर अपने कर्मचारियों को बदला करते थे। ये सभी कर्मचारी चतुर्थ इण्टरनेशनल के सच्चे

अनुयायी थे। इससे ट्राटस्की ने दो लाभ सोचा था। उसकी रक्षा तो होती ही रहती थी। साथ ही उसका राजनीतिक दल बढ़ता था। लेकिन इसमें खतरा भी था। जी० पी० यू० घूस देकर आदमी को अपने तरफ मिलाने में कोई बात उठा नहीं रखता था। यदि उसने इनमें से किसी को फोड़ लिया या किसी तरह अपने ही आदमी को उस दल में शामिल कर दिया तब तो खतरा बहुत अधिक बढ़ जाता था। शेल्डन इसी तरह ट्राटस्की के यह प्रवेश पा सका।

मैक्सिको स्थित अमेरीका के राजदूत श्री जार्ज स्नो से विदित हुआ कि शेल्डन के पिता जेसी शेल्डन हवाई जहाज से मैक्सिको आये हैं। उन्हें अपनी जान का खतरा था। इसीलिये मैंने एक पुलिस उनके साथ रख दिया जो चौबीसो घंटा उनकी रखवाली करता था। इस तरह उनकी प्रत्येक हरकतो और गतिविधि का समाचार मुझे मिल जाता था। वे अनेक लोगो से टेलीफोन से बातें करते थे। उनमें से अमेरीका के फेडरल रिसर्च ब्यूरो के अध्यक्ष श्री हूवर थे। इनसे उसकी घनिष्टता प्रतीत होती थी। ट्राटस्की से भी उसने भेंट की और देर तक बातें की। लेकिन अपने बेटे के भाग्य के बारे में उसे कोई बात नहीं मालूम हो सकी। ट्राटस्की ने कहा कि पुलिस इतना तो प्रमाणित कर सकी है कि यह आक्रमण जी० पी० यू० की प्रेरणा से हुआ और इसके संचालक तथा सूत्रधार विदेशी थे।

श्री हूवर का कहना था कि इस आक्रमण की प्रेरणा देनेवाला मिंक नाम का एक आदमी था जो कई एक दिन पहले फिलाडेल्फिया से मैक्सिको आया था। यह जी० पी० यू० का प्रमुख एजेण्ट था। उसने स्पेन, जापान, अमेरीका तथा अन्य जगहों में जी० पी० यू० के लिये बड़े-बड़े काम किये थे।

जेसी शेल्डन का बयान भी काम का निकला। उससे इस बात पर प्रकाश पड़ता था कि इस हमले में उसके बेटे का क्या हाथ था। उसने अपने परिवार

के लोगों को यह नहीं बतलाया था कि वह ट्राटस्की के यहाँ काम करता था। उसने उन्हें लिखा था कि वह मैक्सिको में किसी विलियम के साथ आया। लेकिन उनसे उसकी पटरी नहीं बैठ सकी क्योंकि वे उसे ठगना चाहते थे। इसलिये वह उनसे अलग हो गया और किसी बोर्डिङ्ग हाउस में रहता है और उसके मालिक की बेटी को अंग्रेजी पढ़ाकर किसी तरह अपनी जीविका चला रहा है। उसने अपना पता भी नहीं दिया था, बल्कि अपने पत्र "[illegible]स फार्गो" के पते से मंगाता था।

आगे चलकर उसके पिता ने अपने बयान में कहा था—"मैं तो यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वह ट्राटस्की की सेवा में होगा क्योंकि मेरी तो यही धारणा थी कि वह आरंभ से ही स्टालिन का अनुयायी था। यहाँ तक कि न्यूयार्क के उसके कमरे में स्टालिन का चित्र पाया गया।" इस बयान के बाद तो शेल्डन के प्रति मेरा सन्देह और भी पुष्ट हो गया।

नेस्टर वादा कर गया था कि यदि इस घटना के संबंध में कोई नयी बात मालूम होगी तो वह मुझे खबर देगा। एक दिन उसने कहला भेजा कि वह मुझसे मिलना चाहता है। मैं तुरत उससे मिला। उसने कहा:—

"मैंने आपको इसलिये कष्ट दिया है कि मुझे एक बात याद आ गई जो इस घटना क जाँच में सहायक हो सकती है। हमले के तीन सप्ताह पहले मैं जुआन जुनिंग कमाचो (जो हमलोगों के बीच पेड्रो के नाम से मशहूर था) के साथ बायना स्ट्रीट गया था। उसने कहा था कि यहाँ हमलोगों का एक आदमी आ गया है जो पढ़ना-लिखना नहीं जानता। शायद उसके लायक यहाँ कोई काम मिल जाय। वह आदमी लम्बा चौड़ा था। सिक्विरो ने मुझ से कहा था कि उसके मकान में इसी तरह के अनेक लोग हैं जिन्हें वह हमले के लिये ले आया था वह नवागन्तुक जौलिस्को राज्य के होस्टोरियाक्विलो नगर का

रहनेवाला था। बातचीत के सिलसिले में उनने सिंको मिनास स्थान का नाम लिया था।

"मैं उसके यहाँ कई बार गया। मेरियानो वास्क्वेज नामक व्यक्ति से वहाँ मेरा परिचय हो गया। मेरे मित्र मेटियोने उससे मेरा परिचय कराया। बातचीत के सिलसिले में मालूम हुआ कि उसकी एक बहन से मेरी दोस्ती थी। उसकी शादी किसी इटली निवासी से हो गई है जो ३८ रिपब्लिक-डे-चिल में रहता है। मैंने उन बातों से यह परिणाम निकाला कि वास्क्वेज सिक्विरो का काम करता था। सिक्विरो के आदेश से ही यह १०४ लन्दन स्ट्रीट में रहने लगा था। मैं वहाँ तीन बार गया था। एक बार वहीं उस फ्राँसीसी यहूदी से भेंट हो गई थी। उसने कहा था कि यदि तुम्हें कभी मेरी अत्यन्त आवश्यकता हो तो इस नम्बर से संबंध जोड़ना। उसने टेलीफोन का कोई नम्बर बतला दिया था। उसने यह भी हिदायत दी थी कि इस नम्बर को जबानी याद रखना, कहीं लिखना नहीं। वह नम्बर मुझे आज भी याद है।"

उसने वह नम्बर मुझे बतला दिया। मैं सोचने लगाः—क्या इससे मुझे उस स्थान का पता लग जायगा जहाँ छिपकर जी० पी० यू० के एजेण्ट ने हमले का संचालन किया था? मैं वहाँ से सेन्ट्रल टेलीफोन एक्सचेंज की ओर दौड़ पड़ा। दफ्तर बन्द हो रहा था। मैंने एक कर्मचारी को रोका और उसे नम्बर बताकर उस नम्बरवाले मकान का पता पूछा। उसने मुझे जो पता बतलाया उसे जानकर मैं अवाक् रह गया। वह मेरे ही पड़ोस में था और मैं अभीतक उसे गिरफ्तार नहीं कर सका था। मैं अपने को ही धिक्कारने लगा।

जिस दिन राष्ट्रपति की आज्ञा से मैं ट्राटस्की के दोनों सेक्रेटेरियों को उनके यहाँ पहुँचाने गया था उसी दिन एक रूसी महिला से मेरी भेंट हुई थी जो मेरे पास के महल्ले में रहती थी। उसने मुझसे कहा था कि उसके महल्ले,

अकासियस में एक मकान है। महीने भरसे उस मकान में रातको लोगों का बहुत आना जाना लगा रहता है। मैंने खुद जाकर उस मकान की जाँच करना तै किया था। इससे पहले मैंने ट्राटस्की से उस महिला के बारे में पूछा था। उत्तर में उन्होंने कहा था—"मैं उसे जानता हूँ। वह सनकी और पागल है।"

ट्राटस्की के इस कथन के बावजूद भी मैंने उस मकान पर पहरा बैठा दिया। गैलिएडो के अधीन पुलिस के दस जवानों को भेज दिया कि पेड़ों की आड़ से वे उस मकान की निगरानी करते रहें। उस मकान के इर्द-गिर्द बहुत से पेड़ थे। यह इन्तजाम कर मैं अपने सहकारी कजाडा तथा अन्य सिपाहियों को साथ लेकर डीगो रिबेरा के मकान पर गया। मेरा अनुमान था कि ता० २४ मई के आक्रमण में इस चित्रकार का भी हाथ था। लेकिन वहाँ हमलोगों को कोई ऐसा सबूत नहीं मिला जिससे मेरे सन्देह की पुष्टि होती। वहाँ से हमलोग खाली हाथ लौट आये।

मैं अकासियस भी गया। वहाँ भी कोई खास बात नहीं मालूम हुई। सिपाही उसी तरह निगरानी कर रहे थे। मुझे मालूम हुआ कि इस संदिग्ध मकान के सामने वाले मकान में एक बूढ़ा पहलवान रहता है जो पैर से लाचार है। वह आँख में टेलिस्कोप लगाकर हर वक्त वहाँ की हरकतें देखा करता है। मैं गैलिएडो के साथ उसके यहाँ गया।

मैं उसकी घंटी बजाने ही जा रहा था कि सामने वाले मकान के दरवाजे पर एक शानदार मोटर आकर रुकी। मझोले कद का एक आदमी उससे उतरा और भीतर इतमीनान से चला गया। मैंने गैलिएडो से कहा कि फ्लैश रोशनी के सहारे गाड़ी का नम्बर वह ले ले। मैंने गैलिएडो के साथ दो सिपाहियों को वहाँ रख दिया।

वापस आकर मैंने पहलवान के मकान की घंटी दबाई। रात बारह बजे थे। एक अधेड़ औरत ने दरवाजा खोला। मैंने आने का उद्देश्य उसे बतलाया। उसने कहाः—"मेरा बेटा तिनतल्ले पर सोने चला गया है। आप वहीं चले जायँ।"

ऊपर जाकर मैं उससे मिला। मैंने उससे कहाः—"सामने वाले मकान के लोगों की जो हरकतें आप देखते हों उन्हें मैं जानना चाहता हूं।"

उसने कहाः—"मैं उनकी हरकतों को गौर से देखता रहता हूं। वे लोग रात को ही सब कुछ करते हैं। उनके बीच यहां के लोग और विदेशी दोनों हैं—खासकर क्यूबा निवासी। लेकिन मेरा अनुमान है कि ट्राटस्की वाले हमले से उनका कोई संबंध नहीं है। या तो ये यात्री हैं या सैलानी। मुझे बदमाश या अवारा नहीं प्रतीत होते।"

मकान मालिक का पता लेकर मैं उससे मिलने गया। वह जेनरल नुनेज का दोस्त निकला। उसने कहाः—"महीने भर से वह मकान किराये पर है। किराया मुझे पेशगी मिल जाता है। मेरा भी विश्वास है कि इस हमले से उनलोगों का कोई संबंध नहीं है। मुझसे उनलोगों ने कहा था कि वे रोजगारी हैं।

वापस आकर मैंने गैलिएडो से उस मोटर के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि कुछ मिनट बाद ही आदमी वापस चला गया। उसे देख कर मुझे किसी तरह का सन्देह नहीं हुआ?" इसके बाद उस मकान पर से हमलोगों का ध्यान हट गया।

लेकिन नेस्टर ने टेलिफोन का जो नम्बर बतलाया था वह तो इसी पते पर था। मुझे निश्चय हो गया कि उस दिन वाली मोटर में वही फ्रांसीसी यहूदी था जिसका नाम नेस्टर ने फिलिपो बतलाया था। जी० पी० यू० के ये एजेण्ट इसी तरह का अपना बनावटी नाम रख लेते हैं और अपने सहकर्मियों को भी अपनी असलियत नहीं मालूम होने देते।

मैं वहां से तुरत उस मकान पर गया। वह खाली था। हमलोग ताला तोड़कर अन्दर घुसे। जो चीजें वहां मिलीं उनमें कुछ अण्डरवेयर थे जो पेरिस में खरीदे गये थे। इससे निश्चय हो गया कि वह मास्को से पेरिस होकर यहां आया था। तब क्या वह फ्रांसीसी यहूदी था? जी० पी० यू० के खास एजेण्टों में अनेक यहूदी थे जो रूस, पोलैण्ड, लिथुयानिया, बल्गेरिया तथा हंगरी के रहने वाले थे। लेकिन सब के सब फ्रेंच भाषा अवश्य बोलते थे।

तब क्या यही जार्ज मिंक था, जैसा कि अमेरिका के फेडरल पुलिस के मुख्य अफसर की सूचना थी? अथवा यह हैकिस या जो किसी समय मैक्सिको में रूस का राजदूत रह चुका था और बाद को स्पेन के गृह-युद्ध का संचालन कर रहा था। मेरे अधिकांश साथी मेरे दूसरे विचार से सहमत थे। लेकिन हमलोग किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच सके। यह तो निश्चित था कि ता० २४ के आक्रमण का संचालन उसने ही किया था। जब उसने देखा कि पुलिस बड़ी मुस्तैदी से काम कर रही है और उसे इतने सबूत मिल गये हैं कि वह उसे गिरफ्तार कर सकती है तब उसने यह मकान छोड़ दिया। निश्चय ही वह अमेरिका चला गया और उस समूचे महाद्वीप के लिये जी० पी० यू० का एजेण्ट बन गया।

मेरी असावधानी से वह मेरे हाथ से बचकर निकल गया, इसका मुझे सख्त अफसोस था। लेकिन इसमें मेरा कोई दोष नहीं था क्योंकि ट्राटस्की के सेक्रेटेरियों की गिरफ्तारी पर राष्ट्रपति ने जो रुख अखतियार किया था उससे मेरा उत्साह भंग हो गया था और ट्राटस्की की हरकतें भी इसके लिये जिम्मेदार थीं क्योंकि उस रूसी महिला की बात को उसने उसका पागलपन कह कर टाल दिया था।

—:०:—

४—एक नई कड़ी

जाँचके आरंभ से ही मैं रोज सबेरे पैसिटो अवश्य जाता था ताकि जिन लोगों पर मेरा सन्देह था उनसे मेरा संबंध टूट न जाय। इससे कैदियों को भी एक तरह का संतोष होता है। रात भर जेलकी कोठरी में अकेले रहने बाद सबेरे किसी का मिल जाना उनकी प्रसन्नता का कारण बन जाता है। हम-लोगों को देखकर उनके मनमें यह जानने की उत्सुकता भी जाग जाती थी कि उनके भाग्य का क्या निपटारा हो रहा है। जाँच का काम कहाँ तक आगे बढ़ा है और जाँच कहाँ तक पहुंची है। हमलोगों से यह सब सूचना लेने के लिये उन लोगों को भी कुछ न कुछ कहना पड़ता था। उसमें कभी कुछ नई और काम की बातें भी निकल आती थीं। रात भर उनकी अन्तरात्मा उन्हें कचोटती रहती है। इसलिये सबेरे यदि उन्हे किसी तरह के मनबहलाव का साधन मिल जाता था और यदि उनके साथ सहानुभूति से पेश आया जाता था तो एक तरह का नया संबध भी उनके साथ कायम होने लगता था। इससे उन्हें बात-चीत करने का साहस होता था और अपने आचरण की यथार्थता प्रमाणित करने के लिये वे अपने अपराध को कबूल भी लेते थे। यह मेरा पुराना अनुभव था और इससे परिणाम भी अच्छा निकलता था।

एक दिन मैं अचानक लूई मेट्रो मार्टिनेज के सेलमें पहुंच गया। यहाँ यह स्मरण दिला देना आवश्यक होगा कि इसीने टेकुबाया के मजिस्ट्रेट से पुलिस की वर्दी मांगी थीं और इसी के बयान से मुझे साम्यवादी दलके प्रधान कार्य-

कर्ता डेविड सेरानो अरडानेगुई का पता चला था। उसकी गिरफ्तारी के बाद मैं जांच के काम में इस तरह व्यस्त हो गया था कि उसकी ओर झांकने का भी मुझे मौका नहीं मिला था। मेरा अनुमान था कि जो कुछ उसने उस दिन कहा था उससे कहीं अधिक बातें वह इस आक्रमण के बारे में जानता था। लेकिन उसने जान-बूझकर बातें छिपाईं थीं क्योंकि वह अपने साथियों को फंसाना नहीं चाहता था। मुझे यह भी मालूम हो गया था कि उसे अपनी पत्नी से अगाध प्रेम है। मैंने उससे कड़ाई से कहाः—

"यदि तुमने उस हमले के बारे में सारी बातें नहीं बतला दीं तो मुझे वाध्य होकर तुम्हारी पत्नी को भी गिरफ्तार करना पड़ेगा।"

इसका असर उसपर पड़ा। उसने हड़बड़ा कर कहाः—"मेरी पत्नी को! पर वह तो कुछ नहीं जानती।

मैं—मेरा ऐसा ख्याल नहीं है। उसे बहुत कुछ मालूम है और वह निश्चय ही उन बातों को प्रगट कर देगी जिसे तुम छिपाने की कोशिश कर रहे हो।

मेटिया—मैं आपके पैरों पड़ता हूँ। मेरी पत्नी को तंग नहीं कीजियेगा। वह निर्दोष है। उसे कुछ नहीं मालूम! मुझे भी जो कुछ मालूम था, सब बतला दिया है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता।

मैं—तुम्हें सोचने के लिये दो घंटे का समय देता हूँ। यदि इस बीच में तुमने अपना कर्तव्य निश्चय नहीं कर लिया तो तुम्हारी पत्नी पर जो कुछ बीतेगा उसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी।

इतना कह कर बनावटी क्रोध दिखलाता मैं कोठरी से बाहर निकल आया और उसके पास अपने सहायक लोपेज मेजिया को छोड़ता गया ताकि वह उसे ठीक रास्ते पर ला सके। लोपेज में यह विशेष गुण था। मैं उसकी पत्नी को किसी भी हालत में गिरफ्तार नहीं करना चाहता था लेकिन मेरे रुख से उसे

आशंका हो गई कि मैं उसे अवश्य गिरफ्तार करूँगा। अन्य कैदियों से पूछताछ कर मैं दफ्तर वापस आने की तैयारी कर रहा था। मोटर के पावदान पर मैं एक पैर रख भी चुका था कि लोपेज मेजिया मेरे यहाँ दौड़ा आया और बोलाः—"मेटियो ने अपनी नस काट डाली है। उसमें से खून की धारा बह रही है। वह मरने की तैयारी कर रहा है?"

मैं उसकी कोठरी की ओर दौड़ गया। दरवाजे पर दो अफसर थे। मैंने कोठरी खोली। वहां का दृश्य देखकर मैं चौंक पड़ा। मेटियो अपने बिस्तर पर पड़ा था। उसका शरीर खून से लथपथ था। उसका मुंह खुला था, पैर मुड़े हुए थे। उसकी गर्दन झुकी थी मानों वह मर रहा हो। उसका एक हाथ नीचे की तरफ लटका था उससे खून बह रहा था। उसने अपनी कलाई की नसको काट डाला था। बिस्तर के सिरहाने कुर्सी पर जिलेट ब्लेड पड़ा था। यह ब्लेड वह अपने साथ ही लेता आया था या यह उसे यहीं कोठरी में ही मिला? या तो वह मर चुका था या मर रहा था। मैंने अपना हाथ उसके हृदय पर रखा और कान उसकी छाती से लगाया। उसकी धुकधुकी चल रही थी। मैंने उसकी गर्दन में अपना हाथ डाल कर उसे थोड़ा ऊँचा किया और उसे हिलाया। मैंने उससे पूछाः—

"तुम्हें क्या हो गया है मेटियो। यह तुमने क्या कर डाला? इस का क्या मतलब है?

मेटिया—मुझे मरने दीजिये। मैं जिन्दा रहना नहीं चाहता। लेकिन मेरी पत्नी को छोड़ दीजिये।

मैं - इस तरह उत्तेजित नहीं होना चाहिये। न तो मैंने तुम्हारी पत्नी को गिरफ्तार ही किया है और इस तरह का मेरा कोई इरादा ही है।

मैंने जेब से रुमाल निकाली और उसके उस हाथ को बाँध दिया जिससे

बहुत खून जा चुका था। दूसरे अफसर की रुमाल लेकर मैंने उसका दूसरा हाथ भी उसी तरह बाँध दिया। इसके बाद मैंने ग्रीनक्रास टेलीफोन कर डाक्टर को बुलाया। रोगी की जांचकर डाक्टर ने कहा कि उसे तुरत रक्त दिया जाना चाहिए। डाक्टर ने रक्तदान के लिये एक आदमी को ठीक कर लिया। एक पाइण्ट रक्त के साथ-साथ हमलोगों ने कैलसियम भी उसे दिया। डाक्टर के हिदायत के अनुसार हमलोगों ने सावधानी से उसकी चिकित्सा की। आठ दिन में वह चंगा हो गया।

इस अप्रिय घटना का पता जेल से बाहर नहीं लग सका। लेकिन ट्राटस्की काण्ड के संबंध में गिरफ्तार कुछ कैदियों ने राष्ट्रपति को खानगी पत्र लिखा और उसमें इस तरह के जुल्मों की शिकायत की। राष्ट्रपति ने जेनरल नुनेज को हिदायत दी कि मैं कैदियों के साथ राष्ट्रीय भवन में उपस्थित होऊँ। उन्हें लेकर मैं वहां गया। कैदियों को भीतर जकर मैं तबतक बाहर ही रहा ताकि कैदियों पर दबाव डालने का सन्देह मुझ पर न हो। कैदियों ने राष्ट्रपति से कबूल किया कि उन पर किसी तरह का जुल्म नहीं किया जाता और उन्हें भोजन अनुकूल मिलता है। ऐसे अवसरों पर कैदी अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिये आतुर रहते हैं। मेटियो द्वारा आत्महत्या की चेष्टा के कई दिन बात की यह घटना है।

मेरे जिम्मे सबसे बड़ा काम इस हमले के सूत्रधारों का पता लगाना था कि वे लोग कहां छिपे बैठे हैं। संप्रति मेरे पास तीन खास व्यक्तियों के नाम थे। डेविड अलफरो सिक्विरो, अण्टोनियो पुजल और जुआन जुनिंग कमाचो जिसने अपना नाम पेड्रो एन० भी रख लिया था।

अपना नाम अखबारों में देखकर अलफरो सिक्विरो ने जेनरल नुनेज के पास लिखा था कि उसका बयान क्यों नहीं लिया गया है। वह बयान देने के लिये

तैयार है। उसने पत्र के अन्त में लिखा थाः—"यदि मेरा बयान लेना चाहते हैं तो टेम्पिको २१ विभाग १५ के पते पर मुझे उत्तर देंगे। मेरा कानूनी हक है और इसके प्रयोग से मैं आपके छोटे छोटे अफसरों की धांधली और अपमान से बच जाऊँगा।" उसका एकमात्र उद्देश्य अपने ऊपर से सन्देह हटाना था। लेकिन वह पुलिस के सामने कभी हाजिर नहीं हुआ बल्कि अपने साथियों के साथ गायब हो गया था।

मैंने सभी सरकारी अफसरों के पास इन तीनों व्यक्तियों तथा डेविड के भाई जीसस अलफेरो सिक्विरो की हुलिया भेज दी थी। मुझे डेविड के भाई पर भी पूरा सन्देह था कि वह भी इस साजिश में शामिल था। मैंन उस गश्ती चिट्ठी में सभी अफसरों से अनुरोध किया था कि इन तीनों व्यक्तियों को गिरफ्तार करने में वे अपनी पूरी ताकत लगा देंगे।

हर्नएडेज से जो सूचना मुझे मिली थी उसके आधार पर मैं एक दिन अण्टोनियो पुजल और मेरियानो हेरेश वास्क्वेज की खोज में कई जगह भटकता रहा। इसी सिलसिले में मैंने चाइलस्ट्रीट के एक मकान की तलाशी ली। यह दो मंजिला मकान था और इसमें कई फ्लैट थे। मैंने कई सहायकों को नीचे ही छोड़ दिया था। कुछ लोगों को मैंने उस होटल की ओर भेजा जिसे पुजल का पिता चलाता था। मेरा आदेश था कि वे लोग उसे साथ लेते आवें। मैंने क्वेजाडा तथा अन्य दो सहायक के साथ ऊपर के तल्ले को जानेवाली सीढ़ी पर कब्जा किया।

सबसे पहले मैं दक्खिन तरफवाले कमरे में घुसा। उससे सटे दो कमरे थे जिनमें कोई खिड़की वगैरह नहीं थी। दूसरे कमरे में पुजल की मां, बीस साल की एक युवती और पुजल के दो छोटे भाई रहते थे।

मैंने पूछाः—आपका बेटा अण्टोनियो कहाँ है?

उसकी मां ने कहाः—कई दिनों से उसका पता नहीं है।

एक कोने में टेबुल पर एक सफरी बक्स था। मैंने उसे खोला। उसमें किसी फेशनेबुल युवती के कपड़े थे। मैंने पूछा—"इस गन्दे मकान में इस तरह का सामान कहाँ से आया?" इस पर पुजल की मां ने कहाः—"अण्टोनियो के किसी महिला मित्र के कपड़े हैं जो अमेरिका से आई है।

मैं—यह महिला कहाँ है?

मां—हमलोगों को कुछ नहीं मालूम।

मैंने अनुमान किया कि संभव है पुजल इस युवती के साथ अमेरिका में हो। इस घटना में इस महिला का भी कुछ न कुछ हाथ प्रतीत होता है। मालूम होता है कि भागने की जल्दीबाजी में वे लोग इस बक्स को साथ लेना भूल गये।

एक दूसरे ट्रंक में मुझे दो थैले मिले जिनमें रेजगारियां भरी थीं। इसी समय पुजल क पिताको लेकर वे लो आ गये। मैंने उससे कहाः—"आप अपने पुत्र अण्टोनियो के बारे में अवश्य ही जानते होंगे। उसका पता बतला दीजिये। यह सबके हक में अच्छा होगा।"

उसने कहाः—"मैं नहीं कह सकता! उसने तो मुझसे केवल इतना ही कहा कि मैं हुक्म बजाने जा रहा हूं।"

मैं—"तुम नहीं यह जानते कि वह कहाँ गया है? यह तो ताज्जुब की बात है।"

वहाँ से मैं कुछ कागज पत्र, और पुजल का चित्र अपने साथ ले आया। इस तहकीकात से कोई लाभ नहीं हो सका। एक तरह से इसे असफल ही मैंने समझा था। म मन मारे सीढ़ियाँ उतर रहा था कि मेरे सहायक जो निचले तल्ले में तैनात थे—मेरे पास एक युवक को ले आये। उसका रंग काला

था। इसके बदन पर कमीज और ब्रीचेज थी तथा पैरों में खान के कुलियों के बूट।

मैंने उससे पूछाः—तुम्हारा नाम क्या है?"

आनाकानी के बाद उसने कोई नाम बताया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह उसका असली नाम नहीं है। मैं उसे हाजत मे ले आया और जिरह करने लगा। अन्त मे उसने अपना नाम बतलाया।

उसका नाम मेरियाने हेरेरा बास्कीज था। तीन प्रमुख मुलजिमों में से एक तो हाथ लगा। हरनाण्डेज से यह भी मालूम हो गया था कि इस पर चोरी का भी अभियोग था। जरूरत पड़ने पर मैं इसके विरुद्ध इसका भी उपयोग कर सकता था। इस तरह इस घटना के सूत्र मे मुझे एक बहुत जबर्दस्त कड़ी मिल गई।

इसका जन्म मैक्सिको में हुआ था। इसकी उम्र २६ साल की थी। यह बिजली का काम करता था। १६३४ से १६४८ तक यह साम्यवादी दल का सदस्य था। इसकी शादी नहीं हुई थी पर कई वर्षों तक इसका अना लोपेज से नाजायज संबंध था।

अना लोपेज का नाम वास्कीज से सुनते ही मैं चौंक पड़ा। ट्राटस्की के निवास स्थान के पास ही एक दूकान थी। उसके मालिक ने मुझसे जूलिया और अना नाम की दो महिलाओं के बारे में कहा था कि मेरी दूकान के सामने ये दो औरतें रहती हैं। इनकी हरकते सन्देह-जनक प्रतीत होती हैं। ट्राटस्की के निवास स्थान की रखवाली के लिये जो गारद तैनात थे उन्हें भी फंसाने का इन्होंने यत्न किया था। जुलिया के फन्दे में रूडल्फो फ्रेगोसो नाम का सिपाही आ भी गया था। हमले की रात ही में दोनों भाग गईं। पूरा कपड़ा भी इनके शरीर पर नहीं था। अना तो उसी पुलिस का दिया हुआ कम्बल ओढकर भागी थी।

दूसरे दिन सबेरे वह कम्बल मांगने भी आया था। अन्ना लोपेज इसी वास्क्वीज की रखेलिन थी और जूलिया बराडस हरनाण्डेज डेविड सेरोनो अण्डोनेगुई की दूसरी पत्नी थी।

वास्क्वीज ने अपने बयान में सब कुछ बतला दिया। उसने कहाः—"अन्ना और जुलिया डेविड अलफेरो सिक्विरो के किसी गुप्त काम में नियुक्त थीं। मैं बेकार था इसलिये मैंने अन्नासे कहा कि डेविड से मुझे भी कोई काम दिला दो। मई के लगभग अन्ना ने मुझे एक विदेशी से मिलाया जो देखने में फ्रांसीसी लगता था। उसने मुझे पांच रुपया रोज पर रख लिया और मेरा काम समझा दिया। उसने एक स्थान नियत कर दिया जहाँ प्रतिदिन दस बजे उससे मुझे मिलकर हिदायत ले लेनी पड़ती थी।

चौथे दिन डेविड अलफेरो सिक्विरो से मेरी मुलाकात हुई। उसने कहा कि तुम्हारा बेतन पांच रुपया रोंज से १० रुपया रोज कर दिया जायगा। वह मुझे अपनी मोटर में बैठा कर कोयकन के लन्दन स्ट्रीट में ले गया और मुझे मेरियो मार्टिनेज के घर पर छोड़ आया। तीन दिन तक मैं बेकार बैठा रहा। चौथे दिन जुआन जुनिगो कमाचो (पेड्रो एम०) आया, लेकिन केवल मेरा वेतन देकर चला गया। एक दिन उसने मुझसे वायना स्ट्रीट में हरनाण्डेज के यहां जाकर रहने के लिये कहा। वहाँ नरसिसो तथा एक तीसरा आदमी भी रहता था जिसका नाम मैं नहीं जानता। मैं बेरोक टोक अपनी प्रेयसी अन्ना लोपेज से मिल सकता था। वह जुलिया के साथ ट्राटस्की के निवास स्थान के पास ८५ अबसोलो स्ट्रीट में रहती थी।

"एक दिन मार्टिनेज मेरे पास आया और कह गया कि दूसरे दिन दस बजे टैम्बिको स्ट्रीट तथा चपुलटयेक एवेन्यू के चौराहे पर मेरी बुलाहट है। मैं नियत समय पर वहाँ पहुंचा। अलफेरो सिक्विरो मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मेरा

वेतन दिया और कहा कि अभी तो कोई काम नहीं है। ता० १७ को सिक्विरो ने मुझे फिर उसी जगह शाम को ५ बजे बुलाया। उसी समय डेविड भी वहाँ पहुंचा। उसके बाद ही उसकी पत्नी अंजेलिका अरनल भी मोटर में अण्टोनियो पूजल के साथ आई, सब लोग गाड़ी में बैठकर बाजार गये और एक मुड़नेवाली सफरी और चित्रकारी के कुछ सामान खरीदे। वहाँ से सबलोग साण्टा रोजा गये। वहाँ सिक्विरो की पत्नी मुझे एक खण्डहर में ले गईं। यह मकान नई सड़क से थोड़ी दूर पर था। बाजार से जो सामान खरीद कर लाया गया था उसे वहीं रख दिया गया और मुझे वहीं रहने का आदेश दिया गया।

"उस मकान में मेरे अतिरिक्त लूई अरनल, नरसिसो एन० तथा एक तीसरा व्यक्ति भी रहता था जिसका असली नाम मुझे नहीं मालूम हो सका क्योंकि लोग उसे 'अपार्टिंज' के नाम से पुकारते थे। हमलोग वहाँ सात दिन तक बेकार पड़े रहे। ता० २२ को सिक्विरो वहाँ आया और हमलोगों को रुपया दिया। नरसिसो और अपार्टिंज ने उससे शहर जाकर जूता खरीदने की आज्ञा मांगी। उनके वापस आने पर मैंने मैक्सिको जाने का निश्चय किया लेकिन शराब अधिक पी जाने के कारण मैं ठीक वक्त पर वापस नहीं आ सका। वापस आने पर मैंने केवल अपार्टिंज को वहाँ पाया। उसने कहा कि रात को अण्टोनियो पूजल हमलोगों को लेने आया था क्योंकि जिस काम के लिये हमलोगों को रखा गया था उसे पूरा करने का समय आ गया था। लेकिन वह सिर्फ लूई अर्नल तथा नरसिसो एन० को ले जा सका। यही कारण था कि मैं आक्रमण में भाग नहीं ले सका।

"ता० २३ को अरनल अपार्टिंज को लेने आया। उसने मुझे ५० रुपये दिये और वहाँ से चले जाने के लिये कहा। उसे लेकर मैं अन्ना लोपेज और जुलिया से मिलने कोयकन गया लेकिन उनके घर का दरवाजा बन्द पाया। वहाँ से मैं १३४ लिवर्टी स्ट्रीट भागा। यहाँ अन्ना के मा-बाप रहते थे। वहीं मुझे ट्राटस्की के

यहाँ के आक्रमण का समाचार मिला। अन्ना और जुलिया को ट्राटस्की के मकान पर निगरानी रखने और गारद के सिपाहियों को मिलाने का काम सौंपा गया था। उन्हें जुआन जुनिगो कमाचो के द्वारा कहला दिया गया था कि बन्दूक छूटने की आवाज के साथ ही वे मकान छोड़कर भाग जायँ। उन लोगों ने वैसा ही किया।"

वास्क्वीज के बयान से मुझे आक्रमण के बारे में पहले पहल इतनी बातें मालूम हो सकीं।

इस तरह अन्ना ल पेज और जूलिया वरडस ट्राटस्की के निवास के पास ८५ अवासोलो स्ट्रीट में रहने गई थीं। आक्रमण के साथ ही वे दोनों वहां से चम्पत हो गई थीं। उस जगह की तलाशी लेने मैं तुरत पहुंचा। दोनों फ्लैटों में ताला लगा था। मैंने सबसे पहले जूलिया का फ्लैट खोला। कमरे से भयानक दुर्गन्ध आ रही थी जो किसी सड़ी लाश की थी। मुझे शेल्डन की याद आगई। लेकिन रोशनी करने पर कहीं लाश नहीं दीख पड़ी। टेबुल पर मिट्टी का एक घड़ा रखा था। उसमें सड़ा भोजन था। उसी से दुर्गन्ध आ रही थी।

"छानबीन करने पर मुझे एक कागज मिला। उसपर ट्राटस्की के मकान का कच्चा नक्शा था। कुछ कागजात तथा पत्र भी मिले जिससे प्रगट हुआ कि जूलिया का संबंध साम्यवादी दल से था। एक कापी मिली जिसमें लिखा था कि ट्राटस्की की हत्या नहीं की जाय, बल्कि उसके संग्रहालय को जला दिया जाय क्योंकि वह साम्यवादी दल की सफलता में बाधक है। वह जूलिया का लिखा हुआ मालूम होता था। क्या उसके अफसर ने उसे यही विश्वास दिलाया था? संभावना यही थी। वहां से हमलोगों को अनेक नई बातों का पता चला। इतना तो निर्विवाद था कि अपनी अन्तरात्मा के संतोष के लिये उसने यह लिखा था और जल्दीबाजी में उसे यहीं छोड़ गई थी। लेकिन क्या सचमुच वह यही

समझती थी कि इतना बड़ा आयोजन ट्राटस्की की हत्या के उद्देश्य नहीं हो रहा है बल्कि उनके संग्रहालय को नष्ट कर देने के लिये। उसके ही तरह सभी साम्य-वादियों का यह विश्वास था कि स्टालिन के साम्यवाद की सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा ट्राटस्की था।

मुझे एक दूसरा कागज भी मिला। उसपर नीचे लिखी बातें अंकित थीं:— मैं तुम्हें लेने आया था पर तुम मौजूद नहीं थी। चार बजे पुनः आऊँगा—वेड्रो। "हमलोगों को अनेक चित्र भी मिले जिनमें मेरियानो हेरेरा वास्कीज का और जुलिया की कन्या सोविटिन का चित्र था। इस तरह का आसाधारण नाम ही सोवियत-साम्यवाद के लिये पागल माता-पिता की मनोवृत्ति का सबूत था।

"इसके बाद हमलोग अन्ना के फ्लैट की तलाशी लेने गये। चारपाई पर कपड़ों के बण्डल इस तरह पड़े थे मानों वह जगह छोड़ने की तैयारी की जा रही हो। जो कागज पत्र वहाँ मिले उससे प्रगट हुआ कि अन्ना भी साम्यवादी दल में शामिल थी। वहाँ से भी हमलोग कई चित्र ले गये।

"इन तलाशियों से इतना तो स्पष्ट हो गया कि इस आक्रमण में इन दोनों औरतों का सहयोग था। उनके जिम्मे यह देखने का काम सौंपा गया था कि ट्राटस्की के मकान में कौन आता जाता है, पहरा कब बदलता है, पहरेदारों से घनिष्टता पैदा करना और जरुरत हो तो घूस देकर उन्हें मिला लेना। जूलिया ने बिना हिचक उनमें से एक के हवाले अपने को कर दिया था। पुलिस पहरेदारों के अपने ही बयान के अनुसार उन दोनों औरतों ने इनसे कहा था कि वे शीघ्र यहाँ से शहर रहने चली जायंगी। इसलिए उसी रात को नाच गाने का आयोजन किया गया था ताकि अधिक से अधिक पहरे वाले उस स्थान से गायब रहें जी० पी० यू० के तरीके के अनुसार सारी कार्रवाई व्यापक रूप से संपन्न की गई थी।

"मुझे उन दोनों औरतों को गिरफ्तार करने की फिक्र हुई। उन्हें पाना सहज काम नहीं था क्योंकि आक्रमण की रात ही उन्होंने कोयकन छोड़ दिया था। उसके बाद से उनका कोई पता नहीं था। मैंने जूलिया और उसकी कन्या का फोटो पुलिस अफसर पेड्रो कान्स्टेनाडा को दिया और उसीके सहारे उसका पता लगाने का आदेश उसे दिया। उस फोटो को लेकर वह उस इलाके में इस तरह घूमने लगा जिस तरह सूई को खोजने के लिए कोई भूसी को उलटता पलटता हो। इस जाँच के काम ने कई दिन ले लिया। इधर अखबारवाले यह जानने के लिये लगातार शोरगुल मचा रहे थे कि पुलिस की जाँच से इस घटना के बारे में और क्या बातें प्रगट हुई हैं। लोगों की धारणा थी कि या तो पुलिस जांच के काम में कोई दिलचस्पी नहीं ले रही है या वह मौन रहने की चाल का अवलम्बन कर रही है और अन्तमें अपनी ओर से अनाप-शनाप रिपोर्ट प्रकाशित कर देगी।

एक दिन मैं बिगड़ा हुआ दफ्तर पहुंचा। एक स्थानीय दैनिक ने गलत समाचार प्रकाशित किया था कि इस मामले की जांच मुझ से लेकर किसी प्रसिद्ध जासूस को दी जा रही है। मैंने यह समझा कि वे लोग इस तरीके से मुझसे जांच के परिणाम की जानकारी हासिल करना चाहते थे। उसने लिखा था कि जांच का काम मुझसे ठीक तरह से नहीं हो रहा है, मैं टालटूल में समय गँवा रहा हूँ इसलिये मेरे हाथ से यह काम हटा लेना आवश्यक हो गया है। इससे मेरे अभिमान को गहरा धक्का लगा। संयोगवश उसी समय मुझे एक नया सूत्र मिल गया। हमलोगों को सोविटिना का पता लग गया। आक्रमण के कई दिन पहले जूलिया ने उसे अपने दादी के यहाँ भेज दिया था।

वास्कीज की तरह उसने भी हमलोगों से स्पष्ट शब्दों में कह दिया:—वे दोनों कोयकन, चरबुस्को या जकडियस्को में छिपी होंगी।"

मैंने अपना कार्य आरंभ ही किया था कि मुझे कान्स्टेनाडा का टेलीफोन मिला। वह बड़ा ही खुश था। उसने कहाः—"कर्नल! अन्तमें मेरा परिश्रम सार्थक हुआ। जुलिया को मैं गिरफ्तार कर सका। वह चरबुरको में पकड़ी गई। मैं बच्चों के अस्पताल से बोल रहा हूं।"

मेरी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। मैंने उसकी बड़ी तारीफ की और कहाः—"तुम वहीं रहो। मैं तुरत तुम्हारे पास आता हूं।"

मैं जल्दी से अपने सहकारी क्वेजाड़ा को लेकर रवाना हुआ। फाटक पर उस पत्र के संवाददाता से सामना हो गया जिसने उपरोक्त समाचार छापा था। उसने मुझसे पूछाः—"ट्राटस्की काण्ड के बारे में नया समाचार क्या है?"

मैंने कहाः—कोई नया समाचार नहीं है। मुझसे अधिक जानकारी तो आपको ही है। आप मेरे उत्तराधिकारी से मिलिये। वहीं से आपको सारा सामाचार मिलेगा।

मैंने एक क्षण भी बर्बाद नहीं किया। मोटर चला दी और कान्स्टेनाडा के पास पहुंच गया। जुलिया पुलिस की हिरासत में थी। वह अत्यन्त सुन्दरी थी। उसकी काली आँखें और केशपाश उसके सौन्दर्य को बढा रहे थे। मैं उसके बैगकी तलाशी लेने लगा तो उसने नेशनल लाटरी का टिकट छिपाना चाहा। उसके पीछे एक पता लिखा था। मैंने उस पतेपर कस्टेनाडा को फौरन रवाना किया। दो घंटे के अन्दर ही वह अन्ना लोपेज को गिरफ्तार कर ले आया।

मैंने यह अनुभव किया कि उसका बयान लेना सहज काम नहीं होगा। पुरुषों की अपेक्षा ये कहीं सख्त निकलीं। उनसे जिरह करने में मुझे ७२ घंटे लगे। जुलिया बड़ी ही बदमिजाज थी। वह रह रहकर गुर्रा उठती थी। मैंने एक उपाय से काम लिया। मैंने उससे कहा कि तुम्हारे पति डेविड सेरानो अण्डो-नेगुई ने दूसरी शादी भी कर रखी है। उसीने मुझे तुम्हारा पता दिया है।

उसने मुंह बनाकर कहाः—"यह संभव नहीं है। यह वे कभी नहीं कर सकते।"

मैं—"पर मैं इसे सावित कर दूंगा।"

मैंने उसे कमरे में बन्द कर दिया और डेविड सेरानो आएडोनेगुई को बुला भेजा। उसे मालूम नहीं था कि जुलिया उसकी बातें सुन रही है। वह मेरे प्रश्न के उत्तर में जुलिया के बारे में गन्दी-गन्दी बातें कहने लगा। उसकी बातें सुनते ही जुलिया क्रोध से पागल हो गई। वह झपट कर बाहर आई और बोली कि मैं सारी बातें सच-सच कहने के लिये तैयार हूं।

अन्ना लोपेज का मुँह खोलने के लिये मैंने दूसरे उपाय से काम लिया। मैंने उससे कहा कि जुलिया के बयान के बाद तुम्हें कोई बात छिपाकर रखना वेकार होगा। जुलिया के बयान की अनेक बातें मैंने उसे बतलाईं। मैंने यह भी कहा कि मैं तीन सप्ताह के लिए बाहर जा रहा हूँ और मेरी अनुपस्थिति में उसकी स्थिति अच्छी नहीं रह सकती। लाचार उसने भी बयान देना स्वीकार कर लिया।

यहां तक तो मैं अपने काम में पूरी तरह सफल रहा। मुझे प्रायः सभी प्रमुख मुलजिमों का पता लग गया। कुछेक को मैं गिरफ्तार भी कर चुका था। लेकिन रार्वट शेल्डन हार्ट का मुझे अभी तक कोई पता नहीं लग सका था। डेविड अलफेरो सिक्रिरो, अण्टोनियो पूजल तथा जुआन जुनिंग कमाचो को भी खोज निकालना था। इतनी दौड़धूप के बाद भी मैंने देखा कि अभी बहुत काम बाकी पड़ा हुआ है।

(५) रावर्ट शेल्डन की लाश

मेटियानो हेरेरा वास्कीज ने अपने बयान में लायन्स रोड के अन्त में साण्टा-राजा में एक मकान की चर्चा की थी जहाँ डेविड अलफेरो सिक्रिरो की पत्नी अंजोलिया अरनल उसे मोटर में बैठाकर ले गई थी। मैंनें उस मकान की भी तलाशी ले लेनी चाही। चार बजे दिन को मैं पुलिस का एक दल लेकर वहाँ के लिए रवाना हुआ। अन्य लोगों के अलावा मैंने अपने खास चार सहायक—फ्यून्स, संचेज, मोण्ड्रागन और मार्डना—को ले लिया था।

तेरह मील के बाद हमलोगों की मोटर रुकी। उसके बाद ढालवाँ चढ़ाई थी। शाम होते होते हम लोग उस मकान पर पहुंचे। आकाश में बादल घुमड़ रहे थे। सड़क से प्रायः मील भर हट कर खेतों के बीच वह मकान कच्ची ईटों का बना था और फूस से छाया हुआ था। दीवारों पर सफेदी की हुई थी। उसके चारों ओर इतने अधिक पेड़ थे कि उनकी आड़ में मकान छिप जाता था। दिन को तो प्रकृति की सुषमा में मनुष्य यहां दिन सुख से काट सकता था लेकिन यहाँ रात को रहने के लिये बड़े मजबूत कलेजे की जरूरत थी।

हमलोग अन्दर घुसे। मकान खाली था। ऊपर नीचे कमरे थे। सामने के तीनों में लकड़ी के फर्श थे। पहले में दो खिड़कियाँ थीं। कमरे के बीचों बीच एक साधारण टेबुल था, जिसपर एक दो अखबार, सिगरेट के डिब्बे तथा शराब की बोतलें थीं। टेबुल के तीन तरफ तीन कुर्सियां रखी हुई थीं।

मैंने अखबारों को उठाकर देखा। सभी अखबार ट्राटस्की के मकान पर के आक्रमण की तारीख के बाद के थे। इससे मैंने यह अनुमान लगाया कि मुलजिमों में से कुछ यहां अवश्य छिपे थे और अपनी हरकत के बारे में जानने के लिये अखबार मंगाते थे।

दूसरे कमरे में एक मुड़नेवाली चारपाई थी। उसके सिरहाने का कुछ अंश इस तरह कटा था मानो किसी ने चाकू या ब्लेड से उसे रेत दिया हो। फर्श पर चूना छिड़का हुआ था मानों किसी ने कोई निशान मिटाने के लिये ऐसा किया हो। इस कमरे में तीन खिड़कियाँ थीं। तीसरे कमरे में भी तीन ही खिड़कियाँ थीं जो साण्टा रोजा गाँव की तरफ खुलती था। इस कमरे के बीच में लकड़ी का एक स्टेण्ड (बोर्ड) खड़ा था जिस पर चित्र अंकित करने का कन्वस (कपड़ा) फैलाया हुआ था। फर्श पर एक दो ब्रुश तथा रंग के डिब्बे पड़े थे। कोने में एक चटाई थी। वह भी एक सिरे की तरफ अन्त में उसी तरह रेती हुई थी। फर्श पर कार्तूस के टोंटे तथा सिगरेट के खाली डिब्वे फेंके हुए थे। उन्ही में लक स्टाइक का एक खाली डिब्बा भी हमलोगों को मिला।

इसने मुझे चौकन्ना कर दिया। गरीब लोग तथा मैक्सिको के निवासी यह सिगरेट पीते हुए नहीं देखे जाते क्योंकि यह बहुत ही कीमती होता है। अमेरिका के लोग तथा मैक्सिको के कतिपय धनी लोग ही उस सिगरेट को पी सकते थे। लेकिन कोई धनी मैक्सिकन या अमेरिकन इस मकान में नहीं रह सकता था। हमलोगों ने इस ख्याल से उन चीजों को जहां का तहाँ छोड़ दिया कि यदि आवश्यकता प्रतीत हुई तो हम लोग किसी दूसरे समय उन्हें ले जायंगे।

इसके बाद हमलोग नीचे उतरे क्योंकि हमलोगों ने निचले कमरों को भी देख लेना चाहा। सबसे बाहर एक कोठरी थी जिसकी फर्श कच्ची थी। उसके बाद रसोई घर था। उसकी हालत भी ठीक वैसी ही थी। इसमें चार पत्थर चौकोर में

बनाकर रखे हुए थे। पक्का फर्श बनाने के सामान वहां पड़े पाये गये। इससे प्रगट होता था कि फर्श को पक्का बनाने की तैयारी भी हो रही थी।

यह यात्रा भी बेकार ही साबित हो चली थी क्योंकि इतनी दौड़धूप के बाद भी कोई मतलब की बात यहां हाथ लगी नहीं। हमलोग रवाना होने ही वाले थे कि संचेज ने मेरा ध्यान फर्शकी ओर आकृष्ट किया और कहा कि इस कमरे की एक तरफ की जमीन फुलफुली प्रतीत होती है। मालूम होता है कि इतनी जमीन हाल में ही खोदी गई है। हमलोग उस जमीन को खोदने के लिये किसी चीज को तलाशने लगे लेकिन वहा कुछ नही मिला। मैं बाहर निकल कर गाँव की ओर देखने लगा। थोड़ी दूर पर एक किसान हल चला रहा था। उसे मैंने कुदाल लेकर आने के लिये कहा। उससे कुदाल ले कर आधा गज की पारिधि में जमीम खोदी गई।

जमीन मुलायम थी इससे खोदने में दिक्कत नहीं हुई। करीब दो फुट गहरा खोदने के बाद भीतर से कड़ी·दुर्गन्ध आई। हमलोग एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

हमलोगों ने और देखने के लिये आग्रह किया। कुछ देरके बाद ही एक चीज दिखलाई पड़ी जो आदमी के पेट से मिलती जुलती थी। किसान के हाथ रुक गये और घबराकर उसने हम लोगों की ओर देखा। हमलोगों के चेहरे का रंग उड़ गया था और आँखें वहीं पर गड़ गई थीं।

मैंने कहा—"निश्चय ही यहाँ किसी की लाश है। इससे आगे खोदना ठीक नहीं होगा। किसी उपयुक्त अधिकारी के सामने ही लाश निकालना उचित होगा।

मैंने उस किसान के साथ कतिपय सिपाहियों को वहां छोड़ दिया और दो चार को अपने साथ लेकर सान एंजिल पहुंचा और वहाँ के मजिस्ट्रेट तथा सरकारी वलीक से मिला। वे लोग तैयारी करने लगे तब तक मैं टकुवाया तक दौड़ गया ताकि मैं लाशको सही सलामत निकालने के लिये होशियार खोदने

वालों को ले आऊँ। इसके बाद मैंन पुलिस सदर दफ्तर को फोन किया कि मेजर गोलिएडो के साथ फौरन सिनाख्त करनेवालों को भेज दिया जाय।

मैं करीब १२ बजे रातको सान एंजिल वापस आया। मैंने तुरत जेनरल नुनेज को फोन पर सारी बातें बतला दा। उन्होंने कुछ हिदायतें दीं। उन्हें नोट कर मैं साएटा रोजाके लिये रवाना हुआ। मूसलधार पानी पड़ रहा था। हाथको हाथ नहीं सूझता था। रास्ता कीचड़ से लथपथ हो रहा था। हमलोग गिरते पड़ते किसी तरह उस मकानतक पहुंचे। जिनलोगों को हमलोग छोड़ गये थे वे वहीं मौजूद थे। खोदाई का काम आरंभ हुआ। हमलोग अधार होकर परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे।

धीरे धीरे लाश का एक एक हिस्सा दिखलाई देन लगा। खोदनवाले इस सावधानी से खोद रहे थे ताकि उनकी कुदाल से लाशका अंगभग न कर जाय। वे लोग घुटने तक खोद गये उतना ही हिस्सा देख कर हमलोगों ने अनुमान किया कि मृतक व्यक्ति लंबा और तगड़ा जवान रहा होगा। उसकी लंबाई साढे ६ फुटसे कम नहीं रही होगी।

हमलोग बराबर ताकीद करते जाते थे कि सिरकी तरफ जमीन सावधानी से खोदी जाय। खूब गहराई तक खोदने के बाद अन्त में पूरा शरीर प्रगट हुआ। शिनाख्त का सबसे मुख्य साधन सिर के बाल थे। मैंने थोड़ा सा बाल काटा और उसे धोने के लिये मैं बाहर ले गया। टार्च की रोशनी में उसे देखा। लाल रंग के वाल थे। मैंने लोगों से कहाः—"जा विवरण हम-लोगों को मिला है उससे यह लाश शेल्डन की प्रतीत होती है।"

कभी कभी चूने के प्रभाव से बालों का रंग बदल जाता है। इसलिए रसोई घर में आने पर मैंने लाश की गौर से जांच की। लाश बहुत अधिक सड़ गई थी। उसका रंग बदल कर गहरा नीला हो गया था। सिर दाहिनी तरफ झुका

हुआ था। एक हाथ पेट पर था और एक पैर आधा मुड़ा था। उनलोगो ने अवश्य ही उसे इस खन्दक में ढकेल दिया और उसके गिरते ही पहले चूना और उसके बाद मिट्टी से उसे तोप दिया होगा।

चूने के कारण शरीर के अन्य भागो की अपेक्षा हाथ और चेहरा सबसे अधिक विकृत हो गये थे। उसके शरीर पर गहरे नीले रंग का उनी स्वेटर था। स्वेटर क नीचे उसने कमीज और अण्डरवेयर पहन रखा था।

मैंने उसके अण्डरवेयर से एक टुकड़ा काट कर अपने पास रख लिया। शिनाख्त के काम को असंभव बनाने के लिए उनलोगों ने उसके कपड़े उतार लिये थे, उसका गला पहले घोंट दिया अथवा सोते समय उसका अन्त किया गया था? जबतक लाश को साफ कर जख्मों की जांच नहीं कर ली जाय तब तक किसी निर्णय पर पहुंचना मुश्किल था। मैंने तुरत स्ट्रेचर तैयार करवाकर लाश को उसपर रखवाया। लाश का रंग इतना बदल गया था कि बिना कफन के ही वह कफन से ढँका हुआ प्रतीत होता था।

रवाना होने से पहले मैंने मकान की फिर से जाँच की! मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इसकी हत्या ऊपरी मंजिलें पर सोने वाले कमरे में की गई थी। खून को छिपाने के लिए ही फर्श पर चूना छिड़क दिया गया था। निचले मंजिल के कमरों में खून के थक्के मिले। यह निश्चय ही ऊपर से चूकर नीचे गिरा था। उसकी हत्या किस तरह की गई थी, यह मुझे स्पष्ट होने लगा।

मैंने मकान के इर्द गिर्द की भूमि की भी जाँच कराई। रात के अंधेरे में भी मकान से थोड़ी दूर पर उन्हे राख की ढेर मिली। उसमें अधजले कई कपड़े तथा चटाई और बिस्तर के अंश मिले। इससे स्पष्ट हो गया कि हत्या सोते में की गई थी और हत्या के सबूत को मिटाने के लिये उन चीजों को जला दिया गया था।

मैं नीचे उतरा और मोटर में सवार होकर तेजी के साथ कोयकन चला।

उस वक्त रात के चार बजे थे और जून महीने की २४ वीं तारीख थी। ठीक इसी तारीख को एक महीना पहले ट्राटस्की के मकान पर हमला हुआ था।

पानी का बरसना रुका नहीं था। वायना स्ट्रीट में तो बाढ़ सी आगई थी। मैं ट्राटस्की के मकान के सामने रुका। मैं लगातार बिजली का बटन दबाने लगा। फाटक पर और बुर्जपर का सन्तरी मशीनगन पर मुस्तैद खड़ा हो गया। ओटो सुशलर ने फाटक को जरा सा खोला। उसके हाथ में रिवाल्वर था। मुझे पहचानते ही उसने बुर्ज पर के गार्ड को इशारा किया।

फाटक खुलते ही मैं भीतर गया और ओटो से कहाः—"मैं तुम्हारे मालिक से फौरन मिलना चाहाता हूँ। हमलोगों ने शेल्डन की लाश बरामद कर ली है।

ओटो—"शेल्डन की लाश ! कहाँ ? कैसे ? चलिये सारी बातें हमलोगों को बतलाइये। और वह जोर से चिल्लाने लगाः—"हेरोल्ड ! हेरोल्ड !! फौरन यहां आइये।"

हेरोल्ड दौड़ा आया। उसका चेहरा भी ओटो की तरह घबराया दीखता था।

मैंने कहाः—"ठहरो ! पहले मैं यह इतमीनान कर लेना चाहता हूँ कि वह लाश शेल्डन की है। क्या उसका कोई कपड़ा यहाँ है ? मैं कमीज और अण्डर-वेयर भर चाहता हूँ।"

ओटो ने दोनों कपड़े तुरत हाजिर किये। मैंने उन्हें उन टुकड़ों से मिलाया जिन्हें काट कर मैं अपने साथ लेता आया था। वे ठीक ठीक मिल गये। इसके बाद मैंने वे बाल उन दोनों को दिखाये जिन्हें मैंने लाश से काटकर रख लिया था। उन दोनों ने कहाः—"यह उसीका बाल है। उसमें किसी तरह का सन्देह नहीं हो सकता।

हेरोल्ड ट्राटस्की के कमरे में गया। वापस आकर उसने मुझसे कहा कि वे गहरी नींद में हैं और मैंने उन्हें उस समय जगाना उचित नहीं समझा।

मुझे याद आगया कि यह बूढा क्रान्तिकारी सोने के लिये दवा खाया करता है। शायद दवा के असर से वह नींद में हो, अथवा हेरोल्ड ने उसे जगाया भी हो लेकिन उस समाचार से उसे ऐसा सदमा पहुँचा हो कि वह मुझसे मिलना नहीं चाहता हो।

मैंने कहा—"क्या तुमलोगों में से कोई लाशकी शिनाख्त के लिये मेरे साथ चल सकते हो?"

ओटो राजी हो गया। उसे गाड़ी पर लेकर मैंने तेजी के साथ साण्टा रोजा के लिये प्रस्थान किया। भोर होते होते हमलोग वहां पहुंच गये। कीचड़ के कारण ऊपर चढना मुश्किल था। किसी तरह हमलोग वहां पहुँचे। लाश स्ट्रेचर पर वहीं पड़ी थी जहाँ मैं उसे छोड़ गया था। सभी लोग उसे घेर कर बैठे थे। पानी का बरसना बन्द हो गया था। लाश को देखते ही ओटो उसे पहचान गया। उसकी आँखों से टपाटप आँसू निकलने लगे।

शेल्डन का जनाजा वहां से उठा। लाश के पीछे मजिस्ट्रेट, पुलिस के अफसर और अखबारों के संवाददाता थे। काफी दिन चढने पर हमलोग सान-एँजिल पहुँचे। लाश मैदान में रख दी गई। थोड़ी देर के बाद ही जेनलर नुनेज वहां पहुंचे। लाशको उन्होंने धुलवाया। यह समाचार चारो ओर फैल गया था और भीड़ जमा होने लगी थी। इसलिये उन्होंने चारों ओर कड़ा पहरा बैठा दिया। कानूनी कार्रवाई पूरी कर मजिस्ट्रेट चले गये। इसी समय भीड़ में हलचल मच गई औप लोग चिल्ला उठे:--

ट्राटस्की! ट्राटस्की!!

सचमुच ट्राटस्की वहां पहुँच गये थे। दस बज रहे थे। वे लाश के पास गये। वे उदास और खिन्न थे। वे देर तक उस लाश को देखते रहे। उनकी आँखों में आँसू भर आये। इस बूढ़े आदमी ने इतनी बड़ी क्रान्तिका संचालन

किया था, लड़ाई के मैदान में रक्त की नदियाँ बहाई थीं, अपने दोस्तों और अपने परिवारवालों को एकएक कर नेस्तनाबूद होते देखा था, अभी हाल में ही उसपर हमला हुआ था जिसका उद्देश्य केवल उसका ही अन्त करना नहीं था, बल्कि उसकी पत्नी तथा पौत्र का भी, तोभी यह क्रान्तिकारी धीर और शान्त बना रहा, वही आज शेल्डन की लाश पर चुपचाप रो रहा था।

शेल्डन की लाश उलटी हुई मूर्तिके समान लगती थी। धोकर साफ करने के बाद भी चूने का अंश कमर में सटा रह गया था। वह चिरनिन्द्रा में शान्ति के साथ सो रहा था। उसके चेहरे पर चिन्ता या क्रोध के कोई लक्षण नहीं थे। उसकी आँखें बन्द थीं, उसके हाथ पैर फैले हुए थे। इससे प्रगट होता था कि वह सोते में मारा गया था। उसके सिरके दाहिने भाग में दो छेद थे। इससे प्रगट हुआ कि वह बायीं करवट सो रहा था जब उन लोगोंने उस पर गोली चलाई। एक गोली उसके सिर के अन्दर रह गई थी। इससे बढकर दगाबाजी और नहीं हो सकती थी।

शान्त होने के बाद ट्राटस्की ने कहाः—"मुझे वापस पहुंचा दिया जाय।" जेनरल नुनेज स्वयं उन्हें लेकर वापस गये।

शव परीक्षा के समय सिर की गोली बाहर निकाली गई। उसके दोनों अंगूठे और बायें हाथ की मध्यमा और कनिष्ठा अंगुलियाँ काट कर रख ली गईं ताकि उसके पासपोर्ट के निशान से शिनाख्त कर पूरा इतमीनान कर लिया जाय कि मृत व्यक्ति शेल्डन ही है। गाल का एक हिस्सा इस लिये काट कर रख लिया गया कि गाल पर के बालों की जांच से यह प्रमाणित किया जा सके, कि हत्या कितने दिन पहले की गई थी।

मैंने उस बात की सूचना तार द्वारा शेल्डन के पिता को दे दी। मैंने अपनी जाँच का काम पहले की तरह जारी रखा। मुझे इस बात का पता लगाना था

कि शेल्डन हो आक्रमणकारियों से मिल गया था वह अथवा उनका शिकार बना। यदि वह उनका साथी था और जी० पी० यू० का एजेण्ट था तब उनलोगों ने उसकी हत्या क्यों की? उनमें से किसने उसका इस तरह अन्त कर लाश को गाड़ दिया? इस रहस्य का पता लगाना नितान्त आवश्यक था।

मैं इस मकान के मालिक की खोज में निकला। साण्टा रोजा में मुझे क्रुज हरनाण्डेज नाम का आदमी मिला तो कुछ दिन पहले उस मकान में रह चुका था। यह मकान डेनियल आर० वेनिटेज नामक इंजीनियर का था। उसने वहीं के एक निवासी के ऊपर इसकी निगरानी का भार सौंप दिया था। उसीने वह मकान क्रुज को रहने के लिये दे दिया था। ता० ३ मई को क्रुज का जन्म दिवस था। वह साण्टा रोजा के एक होटल में शराब पी रहा था कि उसकी मुलाकात एक आदमी से हो गई। उसने क्रुज से बड़े तपाक से कहाः—वह मकान मैंने किराये पर ले लिया है। आप उसे तुरत खाली कर दें।

क्रुज उसके साथ ही मकान तक आया। उसने इस आदमी से कहा कि आप मुझे नीचे का ही एक कमरा दे दें मैं किसी तरह निर्वाह कर लूंगा लेकिन उसने मुंह बनाकर इन्कार कर दिया। लाचार क्रुज गाँव में चला गया। कई दिन के बाद भी उसने मकान को खाली पाया। लेकिन उसके बाद ही कुछ लोग वहां आकर रहने लगे। उनमें से एक "यांक" की तरह लगता था। क्रुज को देखते ही वह आदमी जो होटल में मिला थाः—"चिल्ला उठाः—मैंने उसी दिन कह दिया था कि यहाँ जगह नहीं मिल सकती। तुम यहाँ क्यों आये। यहाँ से फौरन चले जावो और अपनी सूरत हमलोगों को कभी मत दिखलाना।"

उसके बाद क्रुज वहाँ कभी नहीं गया।

लाश बरामद होने के दूसरे ही दिन रूइज बेनिटेज और जुआन लीरा स्वयं थाने में आये। रूइज बेनिटेज ने अपने बयान में कहाः—"ता० १ मई को मैं

घर पहुंचा तो देखता हूं कि मेरे दरवाजे पर एक सुन्दर मोटर खड़ी है जिस पर न्यूयार्क का प्लेट लगा है। मुझे देखते ही एक भद्र पुरुष बाहर आये और मुझ से बोलेः—

साएटा रोजा में आपका जो मकान है उसे मैं किराये पर लेना चाहता हूँ।

मैंने कहाः—"मकान तो मेरा ही है लेकिन वह रहने लायक नहीं है।

वह सज्जनः—"मैं चित्रकार हूँ। शिक्षा विभाग का आदेश है कि मैं छात्रों को सेलुलोज मिलाकर चित्रकारी करने का तरीका सिखाऊँ क्योंकि इसके मिश्रण से किसी तरह रंग नहीं उड़ता।

मैंने कहाः—सेल्यूलोज तो भड़कने वाला पदार्थ है?

वहः–"इसकी आप चिन्ता न करें। यह हानिकर नहीं है। मेरा विश्वास मानिये। आपके मकान को किसी तरह की क्षति नहीं पहुंचेगी बल्कि मैं छत और खिड़कियों की मरम्मत करा दूँगा। कम से कम तीन महीने के लिए मुझे यह मकान दे दीजिये।"

किराया तयकर वह चला गया। लेकिन वह फिर वापस नहीं आया।

इस तरह आक्रमण से २४ दिन पहले वह मकान लिया गया था और आक्रमण में भाग लेने वालों में से कुछ को वहाँ छिपाया गया था। इस जांच से इतना तो प्रगट हो गया कि उस मकान की किराये की बातचीत करने कोई ऐसा आदमी आया था जिसे चित्रकारी से प्रेम था। अलफेरो सिक्विरो, अएटोनिया पूजल, लूई अरनल इन्हीं तीनों में से कोई रहा होगा।

ता० २ जुलाई को सेरानो अन्डोनेगुई तथा मेटियो मार्टिनेज के वकील की प्रार्थना पर कोयकन की अदालत में मुकदमे की एक पेशी हुई। रावल करांका ट्रूजिलो जज थे। सरकारी वकील मोरेना टापिया था। कई पत्रों के संवाददाता भी थे। लियोन ट्राटस्की, उनकी पत्नी तथा उनके अन्य सहयोगी भी उपस्थित

थे। उनके वकील अण्टोनियो फ्राँको रिगाल्ट उनकी तरफ से पैरवी कर रहे थे।

तीन घंटे तक जिरह होती रही। मुलजिमों के वकील के सवाल के जवाब में ट्राटस्की नें जो कुछ कहा वह अत्यन्त ही रोचक है। उनमें कुछ बातें तो ऐसी थीं जिन्हें पुलिसवाले जानते थे। रावर्ट शेल्डन हार्ट के बारे में जो जिरह हुई उसे ही यहां उधृत कर देना उपयुक्त होगा।

ट्राटस्की ने बतलाया कि यह मकान मई के आरंभ में ६८००० रुपये में खरीदा गया था। इसके बाद ही उन्होंने व्यंग से कहा—"मुझमें मकान मालिक होने की प्रवृत्ति नहीं है। मैं कभी मकान मालिक नहीं रहा। नार्वे में मुझ पर अनेक आक्रमण किये गये। आक्रमणकारियों नें कई अवसरों पर उन मकानों को खरीद लेना चाहा जिनमें मैं रहता था। इस तरह मुझपर हमला करना उनके लिये आसान हो जाता था। यहां भी इस मकान के बारे में यही हुआ। जब न्यूयार्क के मेरे मित्रों को यह बात मालूम हुई तब उन्होंने मुझसे पूछा कि आपकी पूर्णतया रक्षा के लिये कितनें रुपयों की जरूरत पड़ेगी। जी० पी० यू० यह मकान खरीदने के फेर में था। इसलिये यह मकान मेरे लिये खरीद लेना आवश्यक हो गया। मैंने अपने मित्रों को इसकी कीमत लिख भेजी। इसलिये उनलोगों ने यह मकान मेरे लिये खरीद लिया।"

वकील—यहाँ आक्रमण का भय आपको कब से हुआ?

ट्राटस्कीः—जनवरी महीने से ही मुझे इसकी आशंका होने लगी थी, यह बात नहीं है। मैं तो दो बर्षों से इसकी आशंका कर रहा था। लेकिन दिसम्बर या जनवरी से इसकी आशंका बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। साम्यवादी पत्रों ने मेरे खिलाफ इतना तीव्र जहर उगलना शुरू कर दिया था कि मुझे अतिरिक्त सतर्कता की आवश्यकता प्रतीत हुई। हमलोग इस संबंध में बराबर सलाह मशविरा करते रहते थे। पोलेण्ड और फिनलैण्ड की चढ़ाइयों की मैंनें निन्दा की थी, रूस के

साथ हिटलर की संधि की भी मैंनें निन्दा की थी। मेरा वक्तव्य संसार के सभी पत्रों में प्रकाशित हुआ था। इससे बड़ी सनसनी फैली थी। मेक्सिको के साम्य-वादियों की पिछली बैठक में मेरे और मेरे दल के विरुद्ध कार्रवाई करने की गर्मा-गर्म चर्चा थी। उसका नारा था, 'ट्राटस्की की मृत्यु।"

लेकिन उनके बयान का सबसे रोचक अंश रावर्ट शेल्डन हार्ट के बारे में था।

वकील—"रावर्ट शेल्डन की वफादारी के बारे में आपके क्या विचार हैं?"

ट्राटस्की—"मेरा दृढ़ विश्वास है कि शेल्डन अन्त तक बाफादार बना रहा और उसका उसे यह पुरस्कार मिला कि वह मारा गया। यदि मुझे उस विषय पर अधिक प्रकाश डालने का अवसर दिया जाय तो मैं सबसे पहले उन भूलों को सुधारना चाहता हूँ जो पुलिस की तरफ से हुए हैं। मैं उसकी तत्परता की तारीफ करते हुए भी यह कह सकता हूं कि शेल्डन के बारे में उन्होंने भारी भूल की है। इस संबंध में मेरी यही धारणा है कि जेनरल जे० मैन्युअल नुनेज तथा कर्नल लियाण्ड्रो संचेज सलजर से भी भूल हो गई है।"

ट्राटस्की के इस बयान से मुझे गहरी चोट लगी। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि शेल्डन के दोषी या निर्दोष होने में मुझे कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। मेरा काम केवल जांच कर सही बातको साबित कर देना था। ट्राटस्की के बयान के बावजूद भी सभी सबूत यही कह रहे थे कि शेल्डन जी० पी० यू० का हथियार बन गया था। उसके सहयोग बिना ता० २४ का आक्रमण यदि असंभव नहीं तो बहुत कठिन हो गया होता। मुझे तो किसी तरह अपनी जांच पूरी करनी थी।

ता० ४ जुलाई को मेरियानो हेरेरा वास्क्वीज से फिर जिरह की गई। उसके बयान के कारण ही साएटा रोजा के मकान का पता चला था जहाँ शेल्डन की लाश मिली थी। मैं उससे सारी बातें जान लेना चाहता था। इस बार की जिरह में उसने नीचे लिखे बयान दिये:—

"ता० २५ मई को आठ बजे शामको अलफेरो सिक्विरो का साला लूई अर्नल एक अमेरीकन के साथ साएटा रोजावाले मकान पर आया। यह नया आदमी लंबा और तगड़ा था। इसके बाल घुँघराले थे। वह टूटी फूटी स्पेन की भाषा बोलता था।

लूई अर्नल ने मुझ से कहा:—'मैं तुम्हारे लिये नया दोस्त ले आया हूं।' न तो मैंने उसका नाम पूछा और न लूई अर्नल ने ही मुझे बतलाया। उसने इतनी हिदायत अवश्य दी:—"रोज सबेरे साएटा रोजा गाँवसे एक औरत झाड़ू-बुहारू के लिये यहाँ आया करेगी। जब तक वह यहाँ रहे तब तक तुम इन्हें मकान से बाहर ही रहने के लिये कह दिया करना ताकि इन्हें वह देख नहीं सके।

वास्कीज—इन्हें अकेले जाने दिया करंगे?

लूई अर्नल—हां, इसमें कोई हर्ज नहीं है।

यह बड़े मार्के की बात थी। यदि वास्क्वीज का बयान सही मान लिया जाय तब निश्चय ही वह अमेरीकन अपनी इच्छा से यहाँ आया था और स्वतंत्रता पूर्वक जहाँ चाहे वहां जा सकता था। यदि उसे पकड़ कर लाया गया होता तो उसे भाग जाने का पूरा मौका था। कोई उसे रोकने वाला नहीं था।

"जब तक मैं साएटा रोजा में था मैं प्रतिदिन गाँव में रिकार्डो नामक व्यक्ति के यहां जाया करता था। कभी कभी मैं इसके यहाँ भोजन भी कर लेता था। एक दिन मैं दोपहर के बाद रिकार्डो के यहाँ से लौटा। उस समय तक वह अमेरीकन भी टहल कर वापस आ गया था। रिकार्डो भी मेरे साथ साएटा रोजा

आया था। हम तीनों बैठकर शराब पीन लगे। रिकार्डो का चप्पल देखकर उस अमेरीकन ने उसे रुपये दिये और कहा कि ऐसा ही चप्पल मुझे भी ला देना क्योंकि जूता पहन कर टहलने में कष्ट होता है। रिकार्डो ने रुपया ले लिया।

इसी समय लूई और लियोपाल्डो अर्नल आ गये। उन्होंने मोटर नीचे छोड़ दी थी। रिकार्डो को देख कर उनकी भौंहों में बल आ गया। लियोपाल्डो अर्नल ने मुझे एकान्त में ले जाकर कहा:—

"वह आदमी यहाँ क्यों आया है?"

वास्कीजः—"यह मेरा दोस्त है। मैं उसीके यहां खाता हूँ। मैं सवेरे उसके यहाँ गया था। उसे साथ ही लेता आया।

अर्नलः—"खैर, उसे तुरत यहाँ से जाने के लिये कह दो। मेरी अनुमति के बिना यहाँ कोई नहीं आ सकता।"

उनकी नाराजगी देख कर रिकार्डो आप से आप वहाँ से चला गया। इसके बाद ये दोनों आदमी अमेरिकन के साथ अँग्रेजी में बातें करने लगे।"

मैंः—"क्या उनलोगों की बातें दोस्ताना तौर पर हो रही थीं?"

वास्कीज—"जी हाँ। मैं। समझ तो सकता नहीं था लेकिन रंगढग से अनुमान करता था कि बातें दोस्ताना तौर पर ही हो रही थीं।

"अन्त में लूई अर्नल ने उस दिन तक का मेरा हिसाब चुकता कर मुझे विदा करते हुए कहा कि जब तक तुम्हें कोई हिदायत न मिले तब तक तुम यहाँ मत आना। मैं बाहर हो गया। वहाँ उनलोगों के साथ केवल अमेरिकन रह गया।"

मैं—"क्या उन्हीं लोगों ने उसकी हत्या की?"

वास्कीज—"दूसरा कोई तो वहाँ था नहीं। उन्होंने ही की होगी!"

ता० २५ जून को शेलडन की लाश वास्कीज को दिखलाई गई थी। उसने उसे पहचान कर कहा था कि यह उसी अमेरीकन की लाश है।

मैं—"तुम्हें उसका नाम मालूम था ?"

वास्कीज—जी नहीं। मुझे उसे पुकारना पड़ता था, इसलिए मैंने उसका नाम पूछा। उसने कहा था कि मुझे लोग टिमो टो मोटो के नाम से पुकारते हैं। उसने यह भी कहा था कि यह नाम मुझे बहुत प्रिय है। बाद को लाश देखने पर मुझे हुआ कि यह टिमो टो मोटो ही राबर्ट शेल्डन था।"

मुझे इस बात का भी इतमीनान कर लेना था कि उसने सब कुछ सच कहा है और शेल्डन की हत्या मे उसका कोई हाथ नहीं है। उसके लिये मैंने उसे आतंकित करने का निश्चय किया। उसकी प्रकृति का अध्ययन कर मैंने इतना समझ लिया था कि जो उपाय मैं करने जा रहा हू वह अवश्य कारगर होगा।

एक दिन रात को मैंने उसे हाजत से निकाला और मोटर पर बैठा कर साण्टा रोजा के उस मकान मे ले गया। रात बारह बजे थे। चारों ओर घोर अंधकार छाया हुआ था। रास्ते भर मैं गंभीर बना रहा। उससे एक बार भी बातें नहीं की। वह व्याकुल और चकराया हुआ सा था।

हमलोग हत्या के स्थान पर पहुंचे। मैंने अपने एक विश्वासी अफसर को वहाँ भेज दिया था। उसे यह हिदायत दी गई थी कि हमलोगों के पहुँचने पर हमले मे शामिल किसी व्यक्ति की नकल करे। उसके अलावा एक अफसर के अधीन चार घुड़सवार भी वहाँ तैनात कर दिये थे।

मैंने उससे कहा:—"मैं तुम्हे यहाँ इसलिये लाया हूँ कि तुम साफ साफ बतला दो कि शेल्डन की हत्या में तुम्हारा कितना हाथ है। यदि अपना अपराध कबूल नहीं करते तो मैं तुम्हे यहीं गोली मार दूँगा।

वास्कीज—जो कुछ मुझे मालूम था, सब मैंने आपको बतला दिया। मेरी ही बदौलत आप यहाँ तक पहुंच सके। इससे अधिक मैं कुछ नहीं बतला सकता।

उसे आतंकित करने के लिये मैंने उस अफसर को पेश किया जो एक मुलजिम का रूप बनाये वहां खड़ा था। मैंने कहा:—"यह व्यक्ति भी उस हमले में शामिल था। यह भी कुछ बतलाना नहीं चाहता। तुम दोनों ही गोली से उड़ा दिये जावोगे।"

मैंने उस नकली कैदी से कहा:—"मैं तुम्हें अन्तिम मौका देता हूँ। यदि अपनी जान बचाना चाहते हो तो उन लोगों का नाम बतला दो जो आक्रमण में शामिल थे।

उस नकली कैदी ने बड़ी दृढ़ता से कहा:—"मुझे जो कुछ कहना था वह कह दिया। मैं उनलोगों का नाम नहीं जानता। यदि मैं जानता भी होता तो नहीं बतलाता।

मैं:—अच्छी बात है! देखो, मैं किस तरह सारी बातें कबूल करवा लेता हूं।

उसे ढकेल कर दीवार से सटा दिया गया। पुलिस बन्दूक तान कर खड़ी हो गई। मेरे इशारे पर खाली टोटा दागा गया। नकली कैदी जमीन पर गिर गया। मैं उसके पास पहुँचा और उसे एक ठोकर मारकर वास्कीज की तरफ मुड़ा और बोला:—"इसके बाद तुम्हारी बारी है। मैं तुम्हें पाँच मिनट का समय देता हूँ। तुम इस हत्या में अवश्य ही शामिल थे। तुम्हारे साथ और कौन लोग थे।

वास्कीज:—मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं जो कुछ जानता था सब बतला दिया। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता।

मैं:—"बस पाँच मिनट का समय है।"

वास्कीज—मेरी माँ और दादी जीवित हैं। मुझे उनका भरण पोषण करना है। मैं इससे अधिक कुछ नहीं जानता।"

इस जाँच से इतना तो स्पष्ट हो गया कि वह सच बोल रहा था। मुझे पूरा यकीन हो गया कि जहाँ तक शेल्डन की हत्या का संबंध है वास्कीज सर्वथा निर्दोष है। इस मामले में उसका कोई महत्व पूर्ण हाथ नहीं रहा है।

इस जाँच से इतना तो स्पष्ट हो गया कि ट्राटस्की के आक्रमणकारियों के साथ शेल्डन बिक गया था। उनलोगों ने उसकी हत्या इसलिये कर डाली कि कहीं वह भेद न खोल दे। पुलिस के हाथ में पड़ने पर उसके द्वारा सारा भेद खुल जाने का उनलोगों को भय था। रिकार्डों को वहाँ देखकर ही इस काम में जल्दीबाजी की गई थी। यही जेनरल नुनेज का मत था।

———

६—ट्राटस्की घायल

उस आक्रमण से ट्राटस्की साफ साफ बच गये थे। यह कम आश्चर्य की बात नहीं थी। स्वयं ट्राटस्की को इस पर आश्चर्य हो रहा था लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य स्वयं आक्रमणकारियों को था। इतनी अधिक तैयारी से किया गया वह आक्रमण, ऐसे ऐसे साधनों से संपन्न उस आक्रमण का केवल मात्र परिणाम बस यह हुआ कि जनमत उत्तेजित हो गया और शिकार सतर्क। इस आक्रमण की तैयारी करने वालों की यह साधारण पराजय नहीं थी।

आक्रमण के बाद ट्राटस्की ने कहा थाः—"भाग्य ने मुझे सांस लेने का अवसर प्रदान किया है लेकिन यह स्थायी नहीं होगा। इसकी अवधि बहुत छोटी होगी।"

उन्होंने उपरोक्त वाक्य को बड़ी गंभीरता से कहा था। उस समय भी उनकी आंखों में वही तेज वर्तमान था और चेहरे पर वही ललकार का भाव था। उन्होंने उपरोक्त बात इस उपेक्षा से कही थी मानों उनके लिये यह साधारण घटना हो, यद्यपि यह उनके जीवन मरण का प्रश्न था। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि उनकी हत्या का दूसरा प्रयत्न शीघ्र ही किया जायगा। स्टालिन की सख्त आज्ञा थी कि जिस तरह भी हो ट्राटस्की का अन्त किया जाय और किसी भी हालत में जी० पी० यू० को इस आज्ञा का पालन करना ही होगा। अन्यथा अपना ही जीवन खतरे में हो जायगा। उनके सामने एक ही प्रश्न था! मरो या मारो। वे जीवन और मरण के विचित्र उलझन में फंसे थे। तब क्या वे मैक्सिको में ही हैं?

क्या उनका संबंध प्रथम के आक्रमणकारियों से कायम है जिन्हें पुलिस अभी तक गिरफ्तार नहीं कर सकी है। लेकिन उनके ये गुप्त एजेण्ट कौन लोग हैं? तब उनका नया कार्यक्रम क्या होगा? इस तरह के अनेक प्रश्न पुलिस और ट्राटस्की दोनों को परीशान कर रहे थे।

जांच तथा निगरानी के काम से आक्रमण के बाद की उस तीन मास की अवधि तक ट्राटस्की के यहाँ मेरा जाना आना बराबर जारी रहा। ट्राटस्की बड़े ही कर्मठ व्यक्ति थे, साथ ही साथ साहसी और शान्त भी। क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ यावज्जीवन संवद्ध रहने के कारण, रूस की सफल क्रान्ति में सबसे प्रधान भाग लेने के कारण, इतिहास में नये अध्याय के निर्माता होने के कारण तथा उसके बाद में अत्याचारों और गुल्मों का साहस से मोकाबला करने के कारण उनका चरित्र अद्वितीय और असाधारण बन गया था। ता० २४ मई के आक्रमण के आध घंटा बाद ही जिस शान्ति और सौजन्यता के साथ उन्होंने मुझसे बात चीत की थी उसका स्मरण कर आज भी मेरे हृदय में विस्मय के साथ साथ श्राद्ध का उदय हो जाता है। उस समय उन्हे देख कर कोई भी नहीं कह सकता था कि उन्हें इतने बड़े संकट का सामना करना पड़ा था। मैं सिपाही हूं। मैंने अनेक नृसंश युद्धों में भाग लिया है। वर्षों मैं उनलोगों के साथ रहा हू जिनका दैनिक काम ही मारना या मरना था। इसलिये मैं उनके साहस की वास्तविकता को समझ सकता था और उसकी वास्तविकता की प्रशंसा भी कर सकता था। वे उनलोगों में थे जिन्हें भयानक से भयानक खतरा विचलित नहीं कर सकते थे। वे चट्टान के समान खतरों के सामने खड़े रह सकते थे।

सच्चा सिपाही कम या वेश अपने दुश्मनों को जानता है, जिस शस्त्र का वह प्रयोग करेगा, उसकी जानकारी भी उसे रहती है, मृत्यु के खतरे के स्थान को भी जानता है, किस रास्ते से मृत्यु आवेगी उसे भी वह जानता है, तोभी

कर्तव्य के पालन के लिये, अपने उद्देश्यकी पूर्ति के लिये वह उन खतरोंका सामना करने के लिये आगे बढ़ता है। ट्राटस्की जानता था कि उसका जीवन हर वक्त खतरे में है लेकिन वह यह नहीं जानता था कि मृत्यु किस ओर आवेगी। उसे नृशंस और क्रूर खतरे का सामना करने के लिये, जिसकी कोई रूपरेखा नहीं है, असाधारण साहस की आवश्यकता थी और ट्राटस्की में यह साहस पूर्णरूपसे वर्तमान था। उसके चारोंओर मृत्यु का जो तानाबाना बुना जा रहा था उससे वह बराबर संघर्ष करता रहा। वह अपनी रक्षा के लिये हर तरह से कटि बद्ध था—अपने शरीर की ही नहीं बल्कि अपने राजनीतिक विचारों की रक्षा के लिये भी। दोनों एक दूसरे से अलग भी नहीं किये जा सकते थे क्योंकि अपने राजनीतक विचारों के लिये ही तो वह जीवित रहना चाहता था।

अपने भवन के संगीन दीवारों के भीतर—जो साथ ही जेल और रक्षा कवच का काम करते थे—ट्राटस्की स्टालिन तथा उसके जी० पी० यू० की समस्त शक्तिको बेकार बना दे रहा था। ता० २४ के आक्रमण के बाद उसने जिस सतर्कता से काम लिया था उसे देख कर भी मैंने अपने मनमें कहा था—"इस सारी सतर्कताओं के बावजूद भी वह बच नहीं सकेगा।" लेकिन उनकी कर्मठता, उनका स्वास्थ्य, उनकी दृढ़ता, उनके व्यक्तित्व का प्रभाव तथा उनके अटल विश्वास को देखते हुए मैं यह भी सोचा करता था कि यह व्यक्ति सहज में परास्त होनेवाला नहीं है। मैं उनके राजनीतिक विचारों से सहमत नहीं था—साम्यवाद मुझे कभी भी प्रभावित नहीं कर सका—तो भी मैं उनके चिरजीवन का आकांक्षी अवश्य था।

ता० २० अगस्त (१९४०) को शामके साढ़े ६ बजे के लगभग मुझे यह दुखद संवाद मिलाः—"ट्राटस्की बुरी तरह घायल कर दिये गये हैं।" इस संवाद ने मुझे बुरी तरह झकझोर दिया यद्यपि मुझे विस्मय नहीं हुआ।

।। पुलिस के प्रधान अफसर के नाते ही नहीं, बल्कि मनुष्य होने के नाते इस संवाद का मुझ पर गहरा असर पड़ा। मैंने अपने मनमें कहाः— "उतनी सतर्कता और सावधानी के बावजूद भी जी० पी० यू० उससे शक्तिशाली प्रगट हुआ और उसने मैक्सिको के पुलिस विभाग को पराश्त कर दिया क्योंकि ट्राटस्की की रक्षा का भार उस पर था। सबसे पहला विचार मेरे मन में यह उदय हुआ कि जी० पी० यू० की यह अवश्य नयी तैयारी रही होगी। क्या ट्राटस्की बचाया जा सकता है? इस बार आक्रमण किस ने किया? उन प्रश्नों का समाधान करना था।

पुलिस सदर दफ्तर में जिस समय यह संवाद पहुंचा उस सयय मैं अनुपस्थित था। गैलिण्डो कोयकन के लिये दौड़ पड़ा। पलक मारते ही पुलिस की सारी ताकत काम में लग गई थी। गश्ती पुलिस, मोटर साइकिलों पर, पुलिस से भरी लारियाँ, खुफिया विभाग के अफसरलोग, ग्रीनक्रास क अम्बुलेंस अपनी मनहूस घंटी बजाते हुए उस ऐतिहासिक स्थान पर क्षण भर में पहुंच गये, जो साधारणतः शान्त और नीरव रहा करता था।

इस घटना का संवाद सबसे पहले पुलिस के प्रधान अफसर जेनरल जोसे मनुएल नुनेज को मिला। जिस वक्त गैलिण्डो पहुँचा नुनेज आक्रमणकारी को गिरफ्तार कर चुके थे। ट्राटस्की के सिक्रेटेरियों ने उसे भी घायल कर दिया था। उनलोगों ने उसे पुलिस गारद के हवाले कर दिया था जो बाहर पहरे पर थे। आक्रमणकारी आधा घंटा पहले वहां आया था और ट्राटस्की का अन्तरंग समझ कर लोगोंने उसे अन्दर जाने दिया था। ट्राटस्की के सिक्रेटेरियों ने भी उसे अपना ही आदमी समझा था। लेकिन थोड़ी देर बाद ही खतरे की घंटी बज उठी। घंटी बजने के कारण को न जान कर उनलोगों ने यही समझा कि दोबारा आक्रमण होने वाला है। इसलिए अपना शस्त्र लेकर वे लोग अपने अपने स्थान पर मुस्तैद

हो गये। लेकिन दूसरे ही क्षण उनलोगों को मालूम हो गया कि ट्राटस्की घायल हो गये हैं और घायल करने वाला वही दोस्त है जो आधा घंटा पहले उनके अध्ययन कक्ष में गया था।

सारी घटना बड़ी तेजी से हो गई। ग्रीन क्रास के कर्मचारी रेमन क्रूज ने उसी दिन निम्नलिखित वक्तव्य दिया था :—

"हमलोगों को कोयकन की पुलिस ने ठीक ६ बजे सूचना दी। हमलोगों को भीतर जाने में कोई दिक्कत नहीं हुई लेकिन बाहर होने में भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ा क्योंकि वहाँ के लोग उन्हें बाहर जाने देने के पक्ष में नहीं थे। उन्हें इस बात का भय था कि कहीं फिर कोई उनपर गोली न चला दे।

"ट्राटस्की की पत्नी ने उन्हे सफेद दुशाले मे ढँप दिया था। उनके जख्मी खोपड़ी को अपने दोनों हाथों में लेकर वे विलख विलख कर रो रही थीं। ट्राटस्की शान्त थे। वे कराह तक नहीं रहे थे। मैंने तो यही समझा कि उनका अन्त हो गया है लेकिन उनकी सांस चल रही थी। जेनरल नुनेज की देखरेख में अम्बुलेंस को चारों ओर से घेर कर पुलिस चल रही थी। दूसरे अम्बुलेंस में आक्रमण-कारी को लोग घेर कर ले चले।"

प्राथमिक चिकित्सा के बाद ट्राटस्की सदर अस्पताल पहुँचये गये और वहाँ उनकी खोपड़ी की शल्य चिकित्सा हुई। चीर फाड़ के बाद निम्नलिखत पहली बुलेटिन ट्राटस्की के बारे में प्रकाशित हुई:—"चोट बहुत सख्त है। गोली मस्तिष्क तक प्रवेश कर गई है और उसे विदीर्ण कर दिया है। शल्य चिकित्सा का काम सफलता पूर्वक संपन्न हो सका है।"

ट्राटस्की के घायल होने का समाचार बिजली की तरह नगर में फैल गया। सनसनीखेज समाचार इतनी जल्दी फैल जाते हैं कि अनुमान नहीं किया जा

सकता। लोगों के दिमाग पर वे बैठ जाते हैं और चारों ओर इसी की चर्चा होने लगती है। लोग तरह तरह का अनुमान करने लगते हैं। एक बात सबकी जबान पर थीः—"जी० पी० यू० के एजेण्टों ने अन्त में ट्राटस्की को घायल कर ही दिया। उनका प्रयास सफल होकर ही रहा।" सभी के चेहरे आवेशपूर्ण प्रतीत होते थे। सभी अशान्त और उत्तेजित थे।

ट्राटस्की के ग्रीनक्रास पहुंचने के पहले ही उसके फाटक पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। वह भीड़ निरन्तर बढ़ती ही गई। अखबार वाले पूरी तादाद में फोटो ग्राफरों के साथ पहुंच गये थे। हमलोगों ने उन्हें भीतर नहीं जाने दिया और कई घंटे तक कोई समाचार नहीं दिया। इससे वे लोग बहुत बिगड़े हुए थे। हमलोगों को बहुत अधिक सावधानी से काम लेना पड़ रहा था क्योंकि इस बातकी आशंका बराबर बनी रहती थी कि कहीं कोई ट्राटस्की पर अथवा उनके आक्रमणकारी पर गोली न चला दे। दोनों बातों की बहुत संभावना थी।

इधर ट्राटस्की के बारे में संवाद जानने के लिये साधारण जनता हस्पिटल का फाटक घेरकर खड़ी थी, उधर मैक्सिको की पुलिस सदल-बल अपने काम में मुस्तैदी से जुटी थी। सबसे पहले जांच का काम ट्राटस्की के निवास से ही आरंभ हुआ। वे अपने अध्ययन कक्ष में घायल किये गये थे। आक्रमणकारी अपने साथ एक लेख लेकर आया था। ट्राटस्की वही लेख पढ़ रहे थे जब उसने उनपर प्रहार किया। उस समय वहां उन दो व्यक्तियों के सिवा दूसरा कोई नहीं था। अपने साथ काटने की कुल्हाड़ी लेकर वह आया था। उसी से उसने ट्राटस्की के सिर पर घातक प्रहार किया था। कुल्हाड़ी को वह अपनी बरसाती में छिपाकर ले आया था। वह जवान तगड़ा और हट्टाकट्ठा आदमी था। उसने प्रहार भी अपनी पूरी ताकत से की होगी तोभी वह उसी क्षण ट्राटस्की का अन्त नहीं कर सका। यह सबसे बढ़ कर आश्चर्य की बात थी।

बाद को इस हत्यारे और ट्राटस्की के सेक्रेटेरियों के बीच जो हाथपाई हुई थी उसके सबूत अध्ययन-कक्ष में मौजूद थे। कमरे की सारी चीजें अस्तव्यस्त थीं। ट्राटस्की की कुर्सी के पास ही खतरे की घंटी का बटन था लेकिन उसके इस्तमाल की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि चोट पड़ते ही ट्राटस्की चिल्ला उठे और उनकी पत्नी तथा सेक्रेटरी लोग दौड़ पड़े। फर्श पर अनेक भाषाओं के मासिक पत्र बिखरे पड़े थे। उनके पन्ने खून से रंग गये थे।

अध्ययन कक्ष से सटा भोजन करने का कमरा था। शामके भोजन के लिये टेबुल वगैरह साफ कर दिया था। इस कमरे में भी एक तरफ खून का थक्का जमा पड़ा था। यहीं ट्राटस्की घायल होकर गिरे थे और डाक्टरों के पहुंचने तक यहीं पड़े थे।

जिस खाकी बारसाती में वह कुल्हाडा छिपा कर ले आया था वह भी भोजन करनेवाले कमरे में पायी गयी। उसकी बरसाती की एक जेब के अस्तरों में सिलाई की हुई धूमिल रंग की एक म्यान थी। उसमें १४ इंच लंबी और सवा इंच चौड़ी कटार पाई गई। कमरे में एक तरफ उसका टोप पड़ा था और उसके पास ही कुछ शीट कागज बिखरे पड़े थे जिनपर फ्रांसीसी भाषा में कुछ लिखा था। इन पर भी खून के धब्बे थे। यह वही लेख था जिसे लेकर कातिल ट्राटस्की के पास आया था और जिसे वे पढ़ रहे थे।

हत्यारे के कपड़ों में एक पिस्तौल भी मिली जिसमें कारतूस भरे थे। इससे साफ प्रगट हुआ कि वह ट्राटस्की को केवल घायल करने की नीयत से नहीं, बल्कि उन्हें मार डालने की नीयत से आया था। प्रश्न यह उठ सकता है कि उसने पिस्तौल का प्रयोग क्यों नहीं किया? निश्चय ही वह उनका काम तमाम कर चुपचाप भाग जाना चाहता था। जिस आसानी से उसे आने जाने दिया जाता था उसका वह पूरा नफा उठा लेना चाहता था। एक दूसरा सबूत

भी उसके इस इरादे की पुष्टि करता है। ट्राटस्की के निवास पर पहुंच कर उसने अपने मोटर का रुख पहले से ही फेर लिया था अर्थात् उसका मुंह कोयनक सड़क की तरफ था। वह तीन तरह का हथियार इसलिये लेकर आया था कि यदि कुल्हाड़ी को काम में लाने का अवसर नही मिला तो कटार से काम लिया जायगा। यदि इसका प्रयोग भी संभव नहीं हो सका तब पिस्तौल काम में लाया जायगा।

अस्पताल जाते वक्त उसने अबुलेंस के अफसर को एक पत्र दिया था। पत्र फ्रेंच भाषा में लिखा था। समूचा पत्र टाइप किया हुआ था लेकिन उसपर तारीख और हस्ताक्षर पेंसिल से लिखे थे। पेंसिल से तारीख देना भी यही सूचित करता है कि हत्यारा यही नही जानता था कि उसे यह खत कब रवाना करना पड़ेगा। हस्ताक्षर के स्थान पर जैक नाम लिखा था।

हत्यारे का असली नाम जाक्क़ेज मोर्नाड वण्डेण्ड्रेस्ड था। लेकिन वह फ्रैंक जैक्सन के नकली नाम से जाली पासपोर्ट की मदद से मैक्सिको आया था। पेरिस में फोर्थ इण्टरनेशनल (विश्व साम्यवादियों की मजलिस) के किसी सदस्य ने उसे यह जाली पासपोर्ट दिया था। उसका नाम उसने नहीं बतलाया। वह वेलजियम का रहनेवाला था। लेकिन मुझे उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। प्रवासी दफ्तरसे जो सूचना मुझे मिली थी वह इस प्रकार थी। "जैक्सन, जो अब अपना नाम मोर्नार्ड बतलाता है, १६३६ में यात्री के रूप में यहाँ आया था। उसके पास जो पासपाट था वह छह मास के लिये ही था। इस अवधि के समाप्त होने पर उसने आवेदन पत्र दिया था कि उसके पासपोर्ट की अवधि पाँच महीने के लिये बढ़ा दी जाय। उसने आवेदन पत्र में लिखा था कि वह तेल तथा कच्चे माल का व्यापारी था और जिस काम के लिये वह आया था उसका वह काम तबतक पूरा नहीं हुआ था।

इस दुर्घटना के तीन घंटे बाद सिलविया अगेलाफ ट्राटस्की के निवास पर आई। यह अमेरिका की रहनेवाली ट्राटस्की की अनुयायी थी। यह ट्राटस्की के सिद्धान्त को मानने वाली थी। इसके माँ-बाप रूसी थे। हत्यारे को वह बहुत दिनों से जानती थी। इसे भी गिरफ्तार कर ग्रीन क्राम अस्पताल भेज दिया गया। उसकी उम्र तीस साल के लगभग थी। गिरफ्तारी से वह एकदम घबरा गई और कहने लगीः—"इसने यहाँ प्रवेश पाने के लिये मेरे परिचय का उपयोग किया। उसे इसी क्षण मार डालना चाहिए।" इस बात का भी पता हमलोगो को लगाना था कि वह सच कह रही थी कि वह भी जैकसन के साथ इस काम में शामिल थी।

ये दोनों माण्डेजो होटल के ११३ नम्बर के कमरे में रहते थे। उस कमरे की तलाशी लेने पर वहाँ से अंग्रेजी, फ्राँसासी तथा रूसी भाषा में लिखे अनेक पत्र मिले। लेकिन इन पत्रों से कोई नई बात नहीं मालूम हुई। इससे यह प्रगट हुआ कि हत्या का आयोजन पहले से ही किया गया था और हत्यारो ने सारा सबूत पहले ही नष्ट कर दिया था।

आरंभिक जांच में मैं ट्राटस्की के पास से बहुत कम अनुपस्थित रहा। घायल होने के बाद पचीस घंटा पैंतीस मिनट तक ट्राटस्की जीवित रहे। तारीख २१ अगस्त के दिन शाम के वक्त सात बजकर पचास मिनट पर संसार के उस अद्वितीय क्रान्तिकारी ने अपनी इहलीला समाप्त की। फाटक पर उस समय भी भीड़ लगी थी और मुझे ही उस अप्रिय शोक संवाद की सूचना लोगों को देनी पड़ी।

७—ट्राटस्की की पत्नी का वक्तव्य

मंगलवार ता० २० अगस्त को सबेरे सात बजे मेरे पति ने मुझ से कहा:—

"आज मेरी तबीयत बहुत अच्छी है। बहुत दिनों के बाद आज हलका प्रतीत हो रहा हूँ। कल रात को मैंने दो मात्रा नींद की दवा खाई थी। मैं देखता हूं कि इससे मुझे बहुत लाभ हुआ है।" इस पर मैंने कहा था:—

"नावें में हमलोगों ने इसका प्रत्यक्ष फल देखा था जब तुम यहाँ की अपेक्षा बहुत जल्द थक जाया करते थे। लेकिन तुम्हें दवा से उतना लाभ नहीं होता जितना लाभ नींद से होता है क्योंकि नींद से तुम्हें पूर्ण विश्राम मिल जाता है।

"यह तो प्रत्यक्ष है।"

प्रथम आक्रमण के बाद हमलोगों के सोने का कमरा पूरी तरह सुरक्षित कर दिया गया था। उस दिन शाम को खिड़कियों को बन्द करते समय उन्होंने कहा था:—

"अब सिक्किरो का दल हमलोगों पर हमला नहीं कर सकेगा और सवेरे उठ कर हम लोग कह सकेंगे कि रात में वे लोग हमलोगों की हत्या नहीं कर सके तोभी तुम खुश नहीं हो।"

"मैंने अपनी सफाई देने की पूरी कोशिश की। इसके बाद उन्होंने गंभीर होकर कहा ?

"इनलोगों से हमें कुछ दिन के लिये तो राहत मिली।"

१६३८ में जब हम लोग अलफा-आटा से निर्वासित कर दिये गये थे और यह नहीं जानते थे कि आगे हमलोगों के भाग्य में क्या बदा है, हम लोग रात भर गाड़ी में बात करते चले जा रहे थे। उस रात को क्षण भर के लिये भी हम लोग नहीं सो सके थे। प्रस्थान करने से पहले मास्को में हमलोगों के साथ जो व्यवहार किया गया था, उससे हम लोग इतना चंचल और अशान्त थे कि हमलोगों की मानसिक उत्तेजना किसी भी तरह घटती नहीं थी। उस समय उन्होंने मुझसे जो कहा था वह अक्षरशः आज भी याद है।

"क्या इस तरह दरदर मारे मारे फिरने की अपेक्षा क्रेमलिन में चुपचाप मर जाना अच्छा था? कम से कम मुझे यह स्वीकार नहीं था।"

लेकिन आज सुबह उनके मन में इस तरह की कोई बात नहीं थी। अपनी तबीयत की हालत देखकर वे दिन भर मजे में काम कर सकेंगे, ऐसा मैंने सोचा।

दैनिक कृत्य समाप्त कर उन्होंने कपड़ा पहना और अपने खरगोशों को खिलाने चले गये। जब वे थके रहते थे तब यह काम उन्हें बोझसा प्रतीत होता था तोभी वे इस काम को स्वयं करते थे क्योंकि उन जानवरों के लिये उनके हृदय में बड़ी ममता थी। जिस इतमीनान और खूबी के साथ वे इस काम को संपन्न करते थे, दूसरा कोई नहीं कर सकता था और उससे कम में उन्हें संतोष नहीं होता था। इसके साथ ही उन्हें सतर्क रहना पड़ता था ताकि इस काम में इतना शारीरिक श्रम न करना पड़ जाय कि वे अपने लिखने पढ़ने का काम न कर सकें। पिंजड़ों को साफ करने तथा उन जानवरों की देखभाल में उनका मन बहलाव हो जाता था लेकिन इस काममें वे इतना थक जाते थे कि कभी-कभी लिखने पढ़ने का काम पूरा नहीं हो पाता था। उनमें एक विचित्र आदत थी। बेमन होकर वे कोई काम नहीं करते थे। जो भी काम वे हाथ में लेते थे उसे पूरी शक्ति

लगाकर संपन्न करते थे। न तो वे किसी काम को अधूरा छोड़ते थे और न उस काम में आलस्य या लापरवाही दिखाते थे।

मैं उनकी हालत देखकर सदा चकित रहती थी कि उनमें इतनी शक्ति कहां से आ जाती है। मालूम होता था कि काम हाथ में लेते ही वे उसमें रम जाते थे। उनके रोम रोम में वह समा जाता था। काम बदलना ही उनके लिये विश्राम था। भाग्य ने उनके ऊपर जो भयानक प्रहार किया था उसका मुआवजा वे काम ही समझते थे और प्रहार जितना ही भीषण होता था उतने ही लगन के साथ वे काम में डूब जाते थे और अपने को भूल जाते थे।

काम के बोझ से उनका बाहर आना जाना बन्द सा हो गया था। कभी वे काम से ऊब जाते तब मुझसे कहते:—यदि आज कहीं सैर के लिये चला जाय तो कैसा हो?"

मैं हंस कर उत्तर देती:—"मालूम होता है कि दिमाग की थकावट को दूर करने के लिये शरीर को थकाना आवश्यक है। जरूर चलिये।"

"मैं खूब तड़के ही निकल जाना चाहता हूं। तुम इसे कैसा समझती हो?"

"अच्छा ही होगा। लेकिन तुम बहुत थक जावोगे।

"इससे मुझे पूरा विश्राम मिल जायगा और मैं अधिक परिश्रम नहीं करूँगा। वे अपने खरगोशों और अन्य चिड़ियों को स्वयं चारा दिया करते थे। सबेरे सात से नव बजे तक उनका समय इसी काम में बीतता था। बीच बीच में कोई नया विचार दिमाग में आ जाने पर वे उसे लिखने भी लगते थे। उस दिन वे बिना किसी बाधा के खरगोशों और चिड़ियों को खिलाते रहे। जलपान के बाद उन्होंने दोबारा मुझ से कहा था कि उनकी तबीयत उस दिन सब दिन से अच्छी थी। अमेरिका के बारे में वे उस दिन एक लेख लिखवाना चाहते थे। उन्होंने लिखाने काम आरंभ भी कर दिया था।

करीब ६ बजे हमलोगों के वकील रिगाल्ट मिलने आये। उनके चले जाने के बाद उन्होंने मुझ से कहाः—"इस लेख का काम आज बन्द रहेगा। इसे किसी दूसरे दिन लिखवा दूँगा। आक्रमण के बारे में जो काम में कर रहा था उसे ही पहले पूरा कर देना चाहिए। उन्होंने अपने वकील से कहा था कि एल-पोपुलर (साम्यवादी पत्र) के लेख का उत्तर दे देना आवश्यक है क्योंकि उसने मेरे चरित्र पर आक्रमण किया है।"

क्षण भर के बाद उन्हो ने बड़े तीखे स्वर में कहा थाः —"मैं उनलोगों पर मानहानि का दोषारोपण करने जा रहा हूं।"

मैंने कहाः—"तुमने अनिवार्य भर्ती के बारे में अपने लेख को अभी तक पूरा नहीं किया।"

"कोई हर्ज नहीं। दो तीन दिन वह और रुका रहेगा। मैंने अपने सेक्रेटरी को हिदायत दे दी है कि उस विषय की सारी सामग्री मेरे टेबुल पर रख देंगे। दोपहर के भोजन के बाद मैं उन्हें सरसरी निगाह से देख जाऊँगा।"

उन्होंने फिर एक वार कहाः—"आज मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं।"

भोजन के बाद मैंने उन्हें टेबुल पर बैठे पाया। उनकी तबीयत अच्छी थी इससे में भी आस्वस्त थी क्योंकि हाल में ही उन्होंने थकान की शिकायत की थी। वे थक कर काम भी छोड़ देते थे। वे जानते थे कि उनकी यह हालत देर तक नहीं रहेगी लेकिन उस वक्त वे बहुत चिन्तित हो जाते थे। उस दिन उनकी शारीरिक हालत बहुत अच्छी प्रतीत होती थी। उन्हें काममें वाधा न देनेके ख्याल से में कभी कभी चुपचाप खिड़की से भीतर की तरफ झांक भर लेती थी। में उन्हे हाथ में कलम लिये कागजों पर झुका पाती। सोचतीः—एक घटना के बाद यह किस्सा समाप्त हो जायगा। पुश्किन के नाटक वोरिस गोडोनोव में जार वोरिस

के गुनाहों के बारे में पिमेन ने यही वाक्य लिखा है। ट्राटस्की का जीवन कैदी या सन्त का जीवन था लेकिन अन्तर केवल इतना ही था कि इस एकान्त वास में वह केवल घटनाओं को क्रमबद्ध ही नहीं करता था बल्कि अपने राजनीतिक प्रतिद्वन्दियों के साथ घोर संग्राम भी छेड़े हुए था।

अमेरिका के अनिवार्य फौज में भर्ती के संबंध में उन्होने अपने लेख के अनेक अंश उस दिन लिखे थे। एल पोपुलर के लेख के आक्षेपों का उत्तर भी पूरा किया।

शाम को पाँच बजे रोज की भांति उन्होंने चाय पी। साढ़े पाँच बजे मैंने बरामदे से झाँककर देखा कि वे अपने खरगोशों का पिंजड़ा खोलकर उन्हें खिलाने में व्यस्त हैं। उनके पास एक आदमी खड़ा था। उसे मैं तुरत पहचान नहीं सकी—तबतक नहीं जबतक कि अपना टोप उतारकर वह बरामदे की तरफ नहीं आया। वह जैक्सन था। मैंने अपने मनमें कहा—"वह फिर आ गया। वह इतना अधिक क्यों आने-जाने लगा है?"

मुझे अभिवादन कर उसने कहाः—'मुझे बड़ी प्यास लगी है। क्या एक ग्लास पानी मिल सकेगा?"

मैंने पूछा—:"चाय दूं?"

उसने कहाः—"जी नहीं। आज देर से भोजन किया है। भोजन अभी तक पेट में उसी तरह लदा पड़ा है। केवल गला सूख रहा है।"

उसका चेहरा उदास था और वह परीशान दीखता था।

मैंने पूछाः—"इस सुन्दर दिन में भी तुमने टोप क्यों पहन रखा है और बरसाती लादकर क्यों चले हो?

उसने कहाः—" न जाने कब मौसम बदल जाय और पानी पड़ने लगे।

म उससे कहना चाहती थीः—"कम से कम आज तो पानी नहीं बरसेगा।"

वह बहुत डींग हाँका करता था कि खराब मौसम में भी वह हैट और बरसाती नहीं पहनता लेकिन मैं चुप रह गई।

मैंने पूछाः—सिलविया कैसी है?"

उसे मेरा प्रश्न सुनाई नहीं पड़ा। हैट तथा बरसाती के बारे में मेरे प्रश्न ने उसे विचलित कर दिया था। वह घबरा सा गया था। उसने मेरे प्रश्न का इस तरह उत्तर दिया मानों वह नींद से उठा हो। उसने कहाः—"सिलविया! सिलविया!! वह अच्छी तो है।' इतना कहकर वह पुनः ट्राटस्की के पास चला गया।

मैंने उससे पूछाः—क्या तुम्हारा लेख तैयार है?

उसने कहा—जी हाँ।

मैंने पूछा—टाइप कर लिया है?

जिस कन्धे पर बरसाती थी उसी हाथ से उसने टाइप किया हुआ कागज दिखलाया।' उसके हाथ काँप रहे थे और उसने दरवाजे को कसकर पकड़ रखा था।

मैंने कहाः—"ठीक है। हाथ की लिखावट पढ़ने में उन्हें कष्ट होता है।"

दो दिन पहले भी वह मेरे यहाँ यही हैट और बरसाती पहन कर आया था। उस दिन मैं घर पर नहीं थी। इससे मुझसे मुलाकात नहीं हुई थी। लेकिन ट्राटस्की ने मुझसे कहा था कि उसकी चालढाल से उन्हें विस्मय हुआ था। उन्होंने इस तरह वह बात कही थी मानों उसकी चिन्ता नहीं थी लेकिन कोई नई बात लक्ष्य करने पर वे मुझसे कह देना उचित समझते थे। उन्होंने कहा थाः—

"वह मेरे पास एक लेख का खाका लेकर आया था। लेख उलझनों से भरा था। मैंने उसे कुछ सुझाव दे दिये हैं देखें वह कैसा सुधार करता है। उसके

बाद उन्होंने कहाः—लेकिन वह फ्राँसीसी की तरह नहीं प्रगट होता। वह देरतक बैठा रहा लेकिन उसने टोप सिर से अलग नहीं किया।'

इस पर मैंने कहाः—"यह तो विचित्र बात है। वह तो कभी भी टोप नहीं पहनता। वे बात करते जाते थे और टहलते थे। उसी तरह टहलते हुए उन्होने कहाः—"लेकिन उस दिन तो टोप पहन कर आया था।"

इससे मै सचेत हो गई। इससे प्रगट हुआ कि उन्होंने जैक्सन में उस दिन ऐसी बात देखी थी जिसके बारे में अन्तिम निर्णय पर पहुँचने से पहले विचार कर लेना चाहते थे। जिस दिन उन्हे घायल किया गया उससे एक दिन पहले की यह बात है।

सिर पर टोप······बाँह पर बरसाती······डेस्क पर बैठना······क्या यह सब तैयारी का उपक्रम नहीं था ? उसने यह सब इसलिये किया था कि वह इस बात का इतमीनान कर लेना चाहता था कि इस तरीके से उसके काम में किसी तरह की बाधा तो नहीं पडेगी।

लेकिन इसकी कल्पना कौन कर सकता था कि ता० २० अगस्त ट्राटस्की के मौत का सन्देश लेकर आ रहा है ! चेतावनी का कोई भी कारण नहीं उपस्थित हुआ था। सवेरे से ही सूर्य का दिव्य प्रकाश चारों ओर फैला था। फूल हँस रहे थे। घास अपनी हरियाली चारों ओर बिखेर रही थी। सारी बाते पहले की ही तरह हो रही थीं। कौन जानता था कि हमलोगों पर इस तरह का वज्रपात होनेवाला है······

वह दिन अन्य सभी दिनों से अच्छा और अनुकूल था। दोपहर को वे नंगे सिर बाग में टहल रहे थे। धूप कड़ी थी इससे मैं दौड़कर उनका सफेद टोप ले आयी। कैसी विडम्बना थी। जिसके ऊपर मौत की छाया मँडरा रही थी उसे मैं धप के तीखेपन से बचाना चाहती थी। पर मैं क्या समझती थी कि यमराज ने

उनके लिये वारण्ट जारी कर दिया है। हमलोगों के दिल में निराशा की क्षीण रेखा भी दीख नहीं पड़ती थी।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जब हमारे निवासस्थान में खतरे की घंटी के तार फैलाये जा रहे थे तब मैंने कहा था कि खिड़की पर भी एक पहरा रहना चाहिए। इस पर ट्राटस्की ने कहा था कि इससे दस पहरेदार हो जायँगे और हमलोग खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। खिड़की के पास का गार्ड भी उन्हें नहीं बचा सकता था तोभी उस जगह गार्ड का तैनात न किया जाना मुझे सदा खटकता रहा। हमलोगों के दोस्तों ने उनके लिये एक कोट उपहार में भेजा था जिस पर गोली का असर नहीं हो सकता था। उन्होंने हंसकर कहा था कि इसी तरह की टोपी भी मेरे लिये होनी चाहिए थी। उन्होंने आग्रह के साथ उस कोट को सब से मुख्य स्थान के पहरेदार को दे दिया था।

ता० २४ मई के आक्रमण के असफल होने के बाद हमलोगों को इस बात की आशंका बढ़ गई थी कि स्टालिन चुप नहीं बैठा रह सकता। हमलोगों ने रक्षा की उसी हिसाब से तैयारी भी कर ली थी। हमलोग यह भी समझते थे कि इस बार जी० पी० यू० दूसरा ही तरीका काम में लावेगा। हमलोगों को इस तरह की आक्रमण की भी संभावना थी क्योंकि जी० पी० यू० के लोग घूस देकर लोगों को मिलाने में बड़े दक्ष हैं। लेकिन उन्हें न तो वह कोट और न उसी तरह का टोप बचा सकता था। प्रतिदिन इस तरह के रक्षा के उपायों को ढूँढते रहना तथा उन्हें प्रस्तुत करना असंभव था। अगर चौबीसो घंटा आत्मरक्षा में ही लगे रहना है तो उस जीवन की आवश्यकता ही क्या है। उसका कोई मूल्य नहीं है।

जब मैं उनके पास गई तब उन्होंने मुझसे कहाः—"क्या तुम्हें मालूम है? वह सिलिया की प्रतीक्षा कर रहा है। कल दोनों प्रस्थान कर रहे हैं।"

वे मुझसे यह कहना चाहते थे कि हमलोगो को उन्हें कमसे कम चाय पर अवश्य बुलाना चाहिए।

मैंने जैक्सन से कहा–"मुझे नहीं मालूम था कि तुम कल प्रस्थान कर रहे हो?"

जैक्सन—जी, मैं आपसे यह कहना भूल गया था।

मैंने कहाः—"अफसोस है कि तुमने पहले खबर नहीं दी नहीं तो मैं न्यूयार्क कुछ भेजती।"

जैम्सन—"मैं कल सवेरे आ सकता हूँ।"

मैंने कहा—"नहीं, नहीं, इसमें तुम्हे भी कष्ट होगा और मुझे भी।"

इसके बाद मैंने ट्राटस्की से रूसी भाषा में कहाः—"मैंने इन्हे चाय के लिये कहा था लेकिन इन्होंने यह कह कर इन्कार कर दिया कि इनकी तवीयत ठीक नहीं है। केवल एक ग्लास पानी मांगा था। इसपर उन्होंने उसकी ओर गौरसे देखकर कहा थाः—"तुम आज भी अच्छे नहीं हो। तुम्हें अपने शरीर का ख्याल रखना चाहिए।"

इसके बाद सब लोग चुप हो गये। ट्राटस्की अपने खरगोशों का साथ छोड़ना नहीं चाहते थे। वे उसका लेख पढ़ने के लिये भी शायद तैयार नहीं थे। लेकिन अपनी उदासीनता को दबाकर उन्होंने कहाः—तब क्या तुम्हारा लेख पढ़ा जाय?"

उन्होंने धीरे धीरे पींजड़े का द्वार बन्द किया और अपना दस्ताना उतार दिया। वे उंगुलियों से बड़ा सावधान रहते थे क्योंकि उनमें जल्द जख्म हो जाया करता था। इससे लिखने के काम में वाधा पड़ती थी। वे अपनी लेखनी और हाथ दोनोंको बड़ी हिफाजत से रखते थे। वे धीरे धीरे मकान के अन्दर गये। मैं और जैक्सन उनके पीछे थे। अध्ययन कक्ष के दरवाजे तक जाकर मैं दूसरे कमरे में चली गई। वे लोग अध्ययन कक्ष में चले गये और दरवाजा बन्द हो गया।

तीन चार मिनट भी मुश्किल से बीते होंगे कि मुझे किसी की चिघ्घाड़ सुनाई पड़ी। मैं नहीं समझ सकी कि इस तरह कौन कराह रहा है। मैं दौड़ पड़ी। ट्राटस्की भोजन करने के कमरे और बरामदे के बीचवाली डेटरी पर खड़े थे। उनका चेहरा खून से लथपथ था। उनके भीतर से उनकी नीली आखें उसी तरह चमक रही थीं। उनके दोनों हाथ नीचेकी तरफ लटक रहे थे मानों वे निर्जीव हों। मैं चिल्ला उठी:—"यह क्या हो गया?"

मैंने उन्हें दोनों हाथों से पकड़ लिया लेकिन उन्होंने तुरत कोई उत्तर नहीं दिया। मुझे आशंका होने लगी कि छतसे कहीं कुछ सिर पर गिर तो नहीं पड़ा क्योंकि उसकी मरमत हो रही थी। लेकिन वे इस जगह कैसे और क्यों है? उन्होंने पूर्ण शान्ति के साथ बिना क्रोध और बिना ग्लानि के केवल इतना ही कहा:—"जैक्सन!"

इससे अधिक वे कुछ नहीं बोल सके। मेरी सहायता से वे दो कदम आगे बढे और वहीं मैंने फर्श पर उन्हें लेटा दिया। उनके सिरके नीचे तकिया रखकर मैंने घाव पर बर्फ रखा और चेहरे पर के खून को पोंछ डाला।

उन्होंने धीमे स्वर में कहा:—"इस्तवान को इस घटना का पता नहीं लगने पावे। उनकी आवाज क्षीण होती चली जा रही थी। उन्होंने कहा:—तुम जानती हो कि वहां···उन्होंने अध्ययन कक्ष के द्वारकी ओर इशारा किया। मेरा अन्दाज है कि मैं उनके हृदय के भाव को समझ गई। वे चाहते थे कि···लेकिन मैंने उन्हें रोक दिया।

उनके शब्दों में संतोष के भाव थे। इसके बाद वे जिओ की ओर घूमे और उससे अंग्रेजी में बातें करने लगे। मैंने उनकी बात समझने की कोशिश की पर सफल नहीं रही। उसी समय चार्लस वहाँ आया, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसके हाथ में पिस्तौल थी।

उसने कहा—वे लोग उसे मार डालना चाहते हैं। हमलोग क्या करें ?"

उन्होने कहाः—नहीं, नहीं, उसे मार डालना ठीक नहीं होगा। उससे बातें जानने की कोशिश करो।"

एकाएक हमलोगों को किसी का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ा। मैंने प्रश्न सूचक दृष्टि से ट्राटस्की की ओर देखा। उन्होंने आंख के इशारे से अध्ययन कक्ष को दिखलाते हुए निरपेक्ष भाव से कहाः—"यह वही है···क्या डाक्टर आ गये ?"

मैंने कहाः—"वे आते ही होंगे। चार्ली मोटर लेकर उन्हें लाने गया है।"

डाक्टर आये। घावकी जाँच की। उनकी आँखें डबडबा आयीं। तोभी उन्होंने कहा कि चोट सांघातिक नहीं है। ट्राटस्की ने डाक्टर के कथन को धैर्य और शान्ति से ग्रहण किया और उन्होंने किसी तरह की उत्सुकता नहीं प्रगट की मानों इस अवस्था में डाक्टर इससे अधिक कर ही क्या सकता था। लेकिन उन्होंने 'जिओ' से अंग्रेजी में कहाः—हृदय की गति इतनी मन्द है कि मुझे चिन्ता हो रही है कि इस बार कहीं उसका प्रयास सफल न हो जाय।

डाक्टर मुझे सदमा पहुँचाना नहीं चाहते थे।

इतने में एम्बुलेंस आ गई और हमलोग घायल व्यक्तिको उस पर लाद कर ग्रीनक्राम अस्पताल ले चले। एम्बुलेंस पुलिस के घेरे में थी। उस वक्त भी उनका दिमाग सही तरह से काम कर रहा था। उनका बायाँ हाथ निर्जीवसा हो गया था। डाक्टर डुट्रन ने घर पर ही जांच करते समय यह बात मुझसे कह दी थी। लेकिन दाहिना हाथ बराबर काम करता रहा। बोलने की दिक्कत बराबर बढ़ती ही जा रही थी। उनके कानके पास झुककर मैंने पूछाः—"कैसी तबीयत है ?"

उन्होंने कहाः—"अब तो पहले से अच्छा हूँ।"

उनकी इस बात से मेरी आशा जागरित हो उठी। चारों तरफ के शोरगुल में भी मेरे हृदय में रह रहकर उनके ये शब्द गूंज उठतेः—"अब अच्छा हूं।"

फाटक के भीतर जाकर गाड़ी रुकी। लोगों ने हमलोगों को घेर लिया। उसमें दुश्मन भी हो सकते थे क्योंकि ऐसी हालत में अक्सर ऐसा होता है। स्ट्रेचर के चारों ओर तो हमारे अपने आदमियों को होना चाहिए था।

लोगों ने उन्हें बिस्तर पर सुला दिया। डाक्टर लोग चुपचाप उनकी जांच करने लगे। डाक्टरों के आदेश से नर्सें उनका केश काटने लगीं।

उन्होंने जिओ को अपने पास बुलाया और नोट बुक में कुछ लिखने का आदेश दिया। बाद को मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने अपनी अन्तिम विदाई का सन्देश उसे इस प्रकार लिखने के लिये कहा थाः—"फोर्थ इण्टरनेनशल की विजय का मुझे पूरा विश्वास है। विदा!"

लेकिन जिओ ने मुझे उस समय असली बात नहीं बतलाई। कोई दूसरी बात बतला कर टाल दिया। मुझे यह जानकर विस्मय हुआ कि उस घड़ी वह इस तरह की बात सोच सकते थे लेकिन वे अच्छे जो महसूस कर रहे थे।

मैं उनके सिरहाने बैठी सारी बातें सुन रही थी। डाक्टरों ने उनका कपड़ा उतारना शुरू किया। हिलने-डोलने में उन्हें कष्ट होगा, इसलिये कपड़ों को कैंची से काटकर अलग करने लगे। जब वे उनका पैण्ट वगैरह उतारने लगे तब उन्होंने कहाः—मैं नहीं चाहता कि वे लोग मेरा यह वस्त्र उतारें। तुम उतार दो।"

यही उनके अन्तिम शब्द थे।

कपड़ा उतारने के बाद मैंने अपना मुँह उनके मुँहमें सटा दिया। उन्होंने

उसे चूम लिया। यही हमलोगों की अन्तिम भेंट थी। लेकिन उस वक्त मैं नहीं समझती थी कि वे मुझसे विदा हो रहे हैं।

इसके बाद वे बेहोश हो गये। शल्य चिकित्सा के बाद भी उन्हें होश नहीं हुआ। मैं रात भर उनके होश में आने की प्रतीक्षा करती रही। उनकी आंखें बन्द थीं लेकिन उनकी साँस कभी गहरी और कभी मन्द हो जाती। इससे आशा जाग जाती थी। दूसरा दिन भी उसी तरह बीता। दोपहर को डाक्टरों ने हालत में कुछ सुधार बतलाया। लेकिन तीसरे पहर साँस तेज चलनें लगी। मैं डर गई। डाक्टर भी घबरा गये। सभी उन्हें घेर कर खड़े रहे। मैंने घबरा कर पूछा कि क्या बात है। मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। केवल एक ने कहा कि यह अवस्था जल्द दूर हो जायगी। लेकिन मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि वे केवल मुझे तसल्ली दे रहे हैं। उनके बचने की कोई आशा नहीं है। उनलोगों न उनको थोड़ा उठा दिया। उनका सिर उनके कन्धे पर झुक गया और उनका हाथ सूली पर चढ़े ईसा मसीह के हाथों की तरह नीचे झूल गया, फर्क केवल इतना ही था कि कांटों के ताज के बदले सिर में पट्टी बंधी थी।

चेहरा उसी तरह धीर और गंभीर था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे गहरी नींद में सो रहे हैं और पूर्ण चैतन्य होकर किसी क्षण उठ बैठेंगे। लेकिन चोट इतनी गहरी थी कि वे जाग नहीं सके। उनकी बाणी सदा के लिये बन्द हो गई। वे इस दुनियां से कूंच कर गये।

८—जैक्सन मोर्नार्ड

गिरफ्तारी के बाद फ्रैंक जैक्सन या जैक्सन मोर्नार्ड मेरे लिये बहुत बड़ी समस्या बन गया था। ट्राटस्की की मृत्यु के बाद तो वह समस्या और भी संगीन या गंभीर हो गई। ग्रीनक्रास अस्पताल के अध्यक्ष डाक्टर स्टवेन लेनेटो उसे अपने यहाँ रखने की जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार नहीं थे। उसके लिये भोजन बाहर से आता था। उन्हें इस बातकी सदा चिन्ता बनी रहती थी कि कहीं उसमें जहर न मिला दिया जाय। उसकी जिन्दगी पर दोहरा खतरा था। ट्राटस्की के अनुयायी या समर्थक उससे बदला लेने के लिये उतावले थे और स्टालिन के दल के लोग इसलिये उसका अन्त कर देना चाहते थे कि पुलिस के दबाव में पड़ कर कहीं वह इस हत्याका असली रहस्य न खोल दे। राबर्ट शेल्डन के साथ जो कुछ हुआ था उसे याद कर मुझे बड़ी सावधानी और सतर्कता बरतनी पड़ी।

कोयकन अदालत के जज–जिनके इजलास में जैक्सन पेश किया गया था—का विचार यह था कि स्थानीय जेलों में इसे रखना सुरक्षित नहीं होगा। लेकिन हमलोग उसे कहीं अन्यत्र भी भेजना नहीं चाहते थे क्योंकि वहाँ ऐसे कैदी मिल सकते थे जो इसे मार डालें। इस बातकी भी संभावना कम नहीं थी कि वह आत्महत्या कर ले। उसके वक्तव्य से ही प्रगट होता था कि ट्राटस्को की हत्या के बाद वह अपनी हत्या कर डालना चाहता था। इसीलिये वह पिस्तौल लेकर आया था। इस हत्या के भीतर की सारी बातें जान लेने के लिये हमलोग उसे जिन्दा रखना चाहते थे।

ग्रीनक्रास अस्पताल से इसे हटाने से पहले मैं नेस्टर संचेज हरनाएडेज तथा जोसे अलवरेज लोपेज से उसका सामना करा देना चाहते थे जो ता० २४ मई को ट्राटस्की के मकान पर आक्रमण करने के अपराध में गिरफ्तार होकर हवालात में बन्द थे। ट्राटस्की के सेक्रेटरियो का कहना था कि जैक्सन मोर्नार्ड ही वह व्यक्ति हो सकता है जिसने रावर्ट शेल्टन से फाटक खोलवाया था। तब क्या यही वह फ्रांसीसी यहूदी था जिसकी चर्चा नेस्टर ने अपने बयान में की थी?

मैंने उसकी पट्टी खोलवा दी और उससे बातचीत शुरू की। ता० २४ के आक्रमण के अपराध में गिरफ्तार दोनों मुलजिम उसे पहचानते नहीं थे। उनलोगो ने उसे कभी नहीं देखा था। जैक्सन ने ता० २४ के आक्रमण में भाग नहीं लिया था। वह फ्रांसीसी यहूदी इससे लंबा और अधिक उम्र का था। वह चश्मा भी नहीं लगाता था। इतना तो मैं भी समझता था कि यदि जैक्सन जी० पी० यू० का एजेण्ट होता तो उसके जिम्मे यह काम कभी नहीं सौंपा गया होता क्योंकि इस काम में गिरफ्तार हो जाने की बहुत अधिक संभावना थी और जी० पी० यू० के एजेण्ट ट्राटस्की की हत्या में अपना प्रत्यक्ष संबंध नहीं प्रगट होने देना चाहते थे।

मेरा सबसे पहला काम उसके चरित्र का अध्ययन करना था। मुझे इससे जबर्दस्त संघर्ष करना पड़ा था और इसके लिये मुझे बहुत बातों की जानकारी प्राप्त करके रखनी पड़ती थी। उसकी उम्र उसके बयान के अनुसार ३६ साल ठीक ही थी। वह काफी लंबा, दुबला पतला और बहुत अधिक पीला था। वह सदासे ही पीला नहीं था, बल्कि मानसिक चिन्ता के कारण उसका रंग ऐसा हो गया था।

इतना तो निश्चय था कि ट्राटस्की तथा अन्य लोगों का विश्वास प्राप्त कर और उनके साथ विश्वासघात कर ट्राटस्की की हत्या का भार किसी ऐसे ही आदमी के ऊपर सौंपा जा सकता था जिसका चरित्र जटिल हो। यह सब कुछ होते

हुए भी उसे अपार मानसिक वेदना सता रही थी। क्या उसे अपने उस जाती गुणोंके कारण ही चुना गया था? क्या इसके लिये उसे हर तरह से तैयार किया गया था? क्या वह पागल था या रुपये क लिये वह यह कर रहा था? अथवा इस तरह की कोई धमकी दी गई थी कि या तो ट्राटस्की की हत्या करे या खुद मरने के लिये तैयार हो? इनमें से सारी बातें थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वर्तमान थीं।

उसके शरीर की बनावट तथा चरित्र से जाँच में बहुत कुछ सहायता मिल सकती थी। उसकी दाढ़ी बड़ी कड़ी और घनी थी तोभी वह रोज दाढ़ी मूँछ बनवाता था मानों किसी थेटर कम्पनी का अभिनेता हो। उसने मुझसे यह भी कहा था कि वह अभिनेता था। वह बहुत जल्दी घबरा जाता था। तोभी उसमें आत्मसंयम की काफी मात्रा थी। घोर मानसिक उथल-पुथल में भी वह अपनी बात जल्द उगलने के लिये तैयार नहीं रहता था। वह उदार विचारों का सांस्कृतिक व्यक्ति था। उसे पढ़ने का बड़ा शौक था और बुद्धिमान प्रतीत होता था। वह खूब खाता भी था। उसका मिजाज आशिकाना था। यह भी एक प्रलोभन था। जिसका शिकार वह सहज हो सकता था। कभी-कभी वह जिद्दी और बदमिजाज भी हो जाता था। व्यंग तो वह सदा बोला करता था। लेकिन कड़ाई से पेश आने पर वह नर्म पड़ जाता था और दब जाता था। उस हालत में भी वह आत्मसंयम नहीं खोता था।

प्रश्नों का उत्तर वह बहुत सोच समझकर देता था। उसके अपराध की याद दिलाने पर क्षण भर के लिये वह आत्म-संयम खो देता था मानों उस समय की घटना उसकी आँखों के सामने नाच उठती थी और ट्राटस्की की चीख उसके कानों में गूंज जाती थी। तब क्या वह वास्तव में प्रभावित हो जाता था या नाटक करता था? जो भी हो वह उसके बाद ही शिथिल और मान हो जाता था

और घंटों चुपचाप पड़ा रहता था। मानों शोकाविष्ट हो गया हो। ऐसे समय वह दनादन सिगरेट पीने लगता था। अपनी प्रत्येक हरकतों से वह यही प्रगट करता था कि वह साहसिक है और जीवन में हार जीत की परवा वह नहीं करता।

उसके पास से एक पत्र निकला। हत्या के दिन उसने जो लिखित बयान ग्रीन क्रास को दिया था उसके मुख्य अंश से इस पत्र की बातें बहुत कुछ मिलती जुलती थीं। यह पत्र उसने पहले ही से तैयार करके अपने पास रख लिया था या तैयार कर उसे दे दिया गया था कि यदि वह मारा जाय या गिरफ्तार हो जाय तो हत्या के उसके उद्देश्य का यथेष्ट कारण लोगों पर प्रगट हो जाय और लोग जान जायें कि वह ट्राटस्की की हत्या के लिये क्यों उद्यत हुआ था। उस पत्र के मुख्य अंशों को यहाँ उधृत कर देना उचित होगा। उसने लिखा थाः—

"यह पत्र मैं इसलिये लिख रहा हूं कि लोगों को मालूम हो जाय कि यह काम जघन्य होने पर भी क्यों उचित तथा संगत है और मैंने क्यों इस ओर कदम बढ़ाया।

"मैं वेल्जियम के किसी प्राचीन वंश का हूं। मैं पेरिस में पत्रकारिता का अध्ययन कर रहा था। वहीं मैं कतिपय युवकों के संपर्क में आया जो अनेक वामपक्षी दलों के सदस्य थे। उनके संपर्क में आकर मैं भी उनके ही विचारों का हो गया। मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि मैंने पत्रकारिता को अपना पेशा बनाया था क्योंकि उस मार्ग से मैं वर्तमान सामाजिक असमानता के साथ मुस्तैदी से संग्राम कर सकता था। इस तरह मैं ट्राटस्की के अनुयायियों के सपर्क में आ गया जिन्होंने अपने आदर्श की गुरुता और मान्यता मुझे समझाई। मैं उनके संगठन में शामिल होने के लिये राजी हो गया। उसी समय से मैंने अपना सारा समय और अपनी सारी शक्ति क्रान्तिकारी आन्दोलन में लगाना शुरू

किया। मैं लियो ट्राटस्की का पक्का अनुयायी था और उनके उद्देश्यों की सिद्धि के लिये अपने शरीर के रक्त का अन्तिम बूंद तक देने के लिये तैयार था।

"उसी समय फोर्थ इएटरनेशनल के एक सदस्य से मेरी जान पहचान हुई। कई दिन की बातचीत के बाद उसने मैक्सिको की यात्रा का प्रस्ताव मेरे सामने रखा ताकि मैं ट्राटस्की का दर्शन कर सकूं। यह यात्रा मेरे लिये आकर्षक थी क्योंकि इससे मेरा स्वप्न पूरा होता था। मैंने उसके प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस साथी ने मेरी यात्रा की सारी व्यवस्था खुद की। यात्रा का खर्च और आवश्यक कागज पत्र। यह स्मरण रखना चाहिए कि फौजी भर्ती के कारण अपने कागज पत्रों के सहारे मैं यह यात्रा नहीं संपन्न कर सकता था।

"प्रस्थान करने से पहले मेरे ये साथी मुझसे बराबर कहा करते थे कि दल के साधारण सदस्यों की अपेक्षा मुझसे कहीं ज्यादा की आशा की जाती है। लेकिन कभी खुलकर अपना अभिप्राय उन्होंने कुछ नहीं कहा और न काम का कोई व्यौरा ही बतलाया। पेरिस से मैं अमेरीका गया और अमेरीका से यहाँ मैक्सिको आया।

"यहाँ पहुंचने पर मुझसे कहा गया कि कुछ दिन तक मुझे कोयकन नहीं जाना होगा ताकि लोगों की दृष्टि से मैं बचता रहूँ। इसलिये यहा पहुंचने के कुछ दिन बाद ही मैं कोयकन ट्राटस्की के आदेश के अनुसार जाने-आने लगा। वहाँ जाने पर वे धीरे-धीरे मुझे उन कामों का व्यौरा बतलाने लगे जिसे पूरा करने की आशा मुझसे की जा सकती थी।

"ट्राटस्की की बातों से मेरी आँखें खुल गईं। अबतक मेरी यही धारणा थी कि ट्राटस्की वह महान नेता है जो मजदूरों के उद्धार के लिये स्वाधीनता का संग्राम लड़ रहा है लेकिन उनकी बातों से मुझे प्रगट हुआ कि उसका सारा

प्रयास अपने बदले की आग को शान्त करने के लिये है और मजदूरों की आजादी का नारा केवल अपने इस घृणित कर्म को छिपाने के लिये आवरण मात्र है !

"कई दिनों की बातचीत के बाद उन्होंने अपना असली उद्देश्य मुझ पर प्रगट किया। उनकी बातें सुनकर मेरा हृदय घृणा से भर गया। जिस मनुष्य के लिये मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा थी और जिस श्रद्धा के कारण ही मैं यहां तक आया था वह धूल में मिल गई। मैं उनसे घृणा करने लगा।

"मुझ से कहा गया कि मैं रूस जाकर कुछ लोगों के खिलाफ षड्यंत्र का संगठन करूं और उनकी हत्या का प्रयत्न करूं। उनमें सबसे पहला नाम स्टालिन का था। इस तरह का विचार किसी भी संघर्ष के सिद्धान्त के खिलाफ था, खास कर इस संघर्ष के जो अब तक प्रगट और स्पष्ट था। इससे मेरी सारी आस्था इनके प्रति जाती रही। लेकिन मैंने अपनी जबान नहीं खोली क्योंकि मैं यह देखना चाहता था कि इस व्यक्ति का कमीनापन और घृणा का भाव इसे कहाँ तक नीचे ले जा सकता है।

"अन्य बातों के अलावा मैंने इस बात की भी जिज्ञासा की थी कि रूस में पहुंचने के साधन क्या हैं। इसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि इसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उद्देश्य की सिद्धि के लिये सभी साधन जायज माने जाते हैं। इस काम में बड़े-बड़े राष्ट्र सहायता करने के लिये तैयार हैं। एक पार्लियामेण्ट कमेटी भी सहायता प्रदान करेगी।

"उसी समय से मेरे मन में यह धारणा बैठ गई कि ट्राटस्की जो कुछ कर रहा है, केवल अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिये कर रहा है। मुझे इस बात से बड़ी व्यथा हुई कि कतिपय पूंजीवादी देशों के नेताओं से इसका घनिष्ट संपर्क था। मुझे स्टालिन का यह अभियोग सत्य प्रतीत हुआ कि ट्राटस्की को

अपने मजूर वर्ग के लिये उतनी चिन्ता नहीं है जितनी चिन्ता उन पूंजीपतियों के लिये है जो उसके लिये साधन संग्रह कर रहे हैं।

"बातचीत के सिलसिले में मुझे यह भी मालूम हुआ कि मैक्सिको की क्रान्ति तथा यहाँ के लोगों के देश प्रेम से भी वह घृणा करता है। उसकी सारी सहानुभूति अलमजन के लिये थी क्योंकि उनके तथा उनके एक दो अनुयायियों के अतिरिक्त वह मैक्सिको के समस्त लोगों को एक ही तराजू में तौलता है, राष्ट्रपति कार्डेनस तथा मैक्सिको की पुलिस की नीति की निन्दा करता है और कहता है कि वे सबके सब बेईमान हैं। उसने लोम्बार्डो टोलडेनो तथा अविलो कमाचो के बारे में जो कुछ कहा उसकी मैं यहाँ चर्चा नहीं करना चाहता क्योंकि उसे यही आशा थी कि वे शीघ्र ही मार डाले जायंगे और अलमजन के दल का रास्ता साफ हो जायगा। मैं उसे जहाँ तक समझ सका हूं उससे मैं यह निश्चय पूर्वक कह सकता हूं कि उसे किसी ऐसे षड्यंत्र का पता था, नहीं तो वह इस तरह की बातें कभीं नहीं कहता क्योंकि वह कोई भी ऐसी बात मुंह से नहीं निकालना जानता था जिसकी कहीं गंध न हो। वह तो यह प्रगट करना चाहता था कि राजनीतिक गतिविधि का उसे इतना ज्यादा ज्ञान है कि घटनाओं के क्रम से वह होने वाले परिणाम को पहले ही समझ लेता है। लेकिन उसका विश्वास न करना बुद्धिमानी होगी।

"लेकिन उसका यह आचरण असाधारण नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसे अपने ही दल के उनलोगों से घृणा है जो उससे सहमत नहीं हैं। यही कारण है कि जब अपने दल में ही वह अल्पमत की चर्चा करता है तो उसका उद्देश्य दल के अन्दर ही संघर्ष की संभावना से रहता है। जब वह यह कहता है कि अल्पमत के लोग उसपर आक्रमण करना चाहते हैं तो उसका मतलब यह होता है कि उसके दल में शीघ्र ही भयानक संघर्ष होने वाला है।

'अपने इस किलेबन्दी की चर्चा करते हुए उसने एक दिन मुझ से कहा था—'मैंने केवल स्टालिन के साथियों से अपनी रक्षा के लिए ही उतनी सतर्कता से काम नहीं लिया है बल्कि अपने दल के अल्पमत वालों से बचने के लिये भी।' इसका मतलब यह हुआ कि अपने दल के कतिपय लोगों को अलग करने की बात वह सोच रहा था।

"मैं बहुधा यह सोचा करता था कि इस मकान को खरीदने तथा उसे इस तरह सुरक्षित बनाने के लिए उसके पास इतना रुपया कहां से आया क्योंकि उसके दल की आर्थिक हालत बहुत खराब है और कितने देशों में तो उनकी आर्थिक दशा इतनी शोचनीय है कि दल के पर्चों को छपाने तक के लिये उसके पास पैसे नहीं हैं जो किसी भी आन्दोलन के लिये आवश्यक और अनिवार्य हैं। तब इतना रुपया उसके पास कहाँ से आया ? इसका उत्तर तो बड़े वड़े विदेशी राष्ट्रों के राजदूत ही दे सकते हैं जो प्रायः उसके यहाँ आया जाया करते हैं।

"जिन बातों से उसका कोई संबंध नहीं है उसमें वह कितनी कम दिलचस्पी रखता है, इसका भी एक उदाहरण मैं यहाँ दे देना चाहता हूं। मेरा एक रमणी से प्रेम संबंध है। मैं उसे दिल से चाहता हूं क्योंकि वह नेक और ईमानदार है। मैंने उससे एक दिन कहा कि मैं अभी रूस नहीं जा सकता क्योंकि सबसे पहले मैं अपना विवाह कर लेना चाहता हूं। उसके बाद मैं अपनी पत्नी को लेकर ही रूस जाऊँगा। इस पर उसने झुँझलाकर कहा कि तुम्हें उस रमणी से किसी तरह का संपर्क नहीं रखना होगा क्योंकि तुम्हें ऐसी रमणी से विवाह नहीं करना होगा जो अल्पमत वालों का समर्थन करती है। मैं जो कुछ करने जा रहा हूं उसके बाद शायद वह मेरे साथ किसी तरह का संपर्क नहीं रखे तोभी मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उसी रमणी के कारण मैं अपना बलिदान कर मजदूरों के इस महान नेता का अन्त करने जा रहा हूं जिसने मजदूर आन्दोलन

को हानि पहुंचाने के सिवा और कुछ नहीं किया है। मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि आगे चल कर केवल दल के लोग ही नहीं बल्कि भावी इतिहास के लेखक भी मजदूरों के इस शत्रु के उठ जाने से प्रसन्न होंगे।"

"यदि मुझे कुछ हो गया तो मेरा यह पत्र अवश्य प्रकाशित कर दिया जाय।"

जैक—२०-८-१६४०

गिरफ्तारी के चन्द घंटे बाद ग्रीन क्रास अस्पताल में जैक्सन ने जो लम्बा बयान दिया था वह करीब-करीब इस पत्र की व्याख्या मात्र थी। इसलिये इस स्थल पर उसका संक्षिप्त विवरण मात्र ही दे देना उचित होगा।

उसके बयान के अनुसार उसका जन्म सन १६०४ ई० की १७वीं फरवरी को तेहरान (फारस) में हुआ था। वहाँ उसके पिता राबर्ट मोनार्ड बेल्जियम सरकार के प्रतिनिधि थे। जब वह दो साल का था तभी इसके पिता तेहरान से ब्रुशेल्स चले आये। १६१४ में प्रथम जर्मन युद्ध के समय इसकी उम्र दस साल की थी। बेल्जियम पर जर्मनों का आक्रमण हुआ तो इसकी माता इसे लेकर पेरिस भाग गईं। १६१८ में वह ब्रुशेल्स वापस आया और लोयोला के सेएट इगनाटिस कालेज से ग्रेजुएट हुआ। इसके बाद यह डिक्समुड़े के रायल स्कूल में भर्ती हुआ और दो साल तक वहाँ पढ़ता रहा। १६२४ में वह पालि टेकनिक का अध्ययन करने पेरिस गया। वहाँ से उसने पत्रकारी की शिक्षा प्राप्त की। १६३० से वह पेरिस के किसी पत्र में अवैतनिक काम करता रहा। १६३६ से पहले वह अपनी पत्रकारिता की शिक्षा समाप्त नहीं कर सका। १६३६ तक वह पेरिस में ही रहा। १६२६ में ही उसके पिता का स्वर्गवास हो गया था। उसे एक बड़ा भाई भी है। लेकिन संप्रति न तो वह अपने बड़े भाई और न अपनी माता के बारे में ही कुछ जानता है कि वे लोग कहाँ हैं। यहाँ यह लिख देना उचित

होगा कि १९३४ में उसने एक युवती से विवाह किया लेकिन तीन मास बाद ही उसे छोड़ दिया और १९३९ में उसे तलाक दे दी।

१९३८ में पेरिस में ही सिलविया अगेलाफ से उसका परिचय हुआ। उसने देखा कि राजनीति का सिलविया को अच्छा ज्ञान है। मार्क्सवाद, ट्राटस्कीवाद तथा लेनिनवाद पर उससे बातें हुआ करतीं। सिल्विया ट्राटस्की के दल की थी। वह इस विचारधारा के लोगों से मिला करती। जैक्सन का भी परिचय उनलोगों से होने लगा और उनके विचारों का वह अध्ययन करने लगा। इस समय तक सिल्विया से उसे प्रेम हो गया था। वह पेरिस से चलने लगी तो उसने कहा कि उपयुक्त समय आने पर वह उससे विवाह कर लेगी। वह फ्रांस के ट्राटस्की के दलवालो से बराबर मिलता रहा और उनके द्वारा उसका परिचय फोर्थ इण्टर-नेशनल के एक प्रमुख सदस्य से हुआ। उसे उनका नाम नहीं मालूम था क्योंकि नाम जानने की उसने कभी कोशिश नहीं की।

इसी व्यक्ति ने एक दिन उससे कहा कि तुम ट्राटस्की से मिलने मैक्सिको जावो क्योंकि उन्हें तुम्हारे समान लोगों की जरूरत है। वह तुरत राजी हो गया।

उसके लिये आवश्यक तैयारी करने में किसी दूसरे का हाथ नहीं था। वह रक्षित सेना में अफसर था इसलिये वह पेरिस नहीं छोड़ सकता था। फोर्थ इण्टरनेशनल वालों की सलाह से फ्रैंक जैक्सन के नाम से उसके लिये कनाडा का पासपोर्ट लिया गया। उसने इसे दो सौ डालर खर्च के लिये दिये। यूरोप छोड़ने से पहले वह अपनी मां से मिला। उसने भी उसे ५००० डालर दिये।

फोर्थ इण्टरनेशनल के एक सदस्य की सलाह से वह न्यूयार्क एक महीने तक रुका रहा और मैक्सिको की यात्रा के लिये पासपोर्ट की दरखास्त दी। इसी सज्जन ने उसे यह भी बतलाया कि ट्राटस्की को यह लिख दिया गया है कि मैं

शीघ्र ही मैक्सिको पहुंच जाऊंगा लेकिन मैं ट्राटस्की से तबतक स्वयं नहीं मिलूं जब तक कि वे मुझे स्वयं बुलाये नहीं। सिल्विया का स्वास्थ्य खराब हो रहा था। वह मैक्सिको चली आई और मुझ से मिली। मैक्सिको पहुंचने के तीन महीने बाद फ्रांस के ट्राटस्की-दल के सदस्य अल्फ्रेड गेस्मर के साथ पहले मैं ट्राटस्की से मिला। इसके बाद उसने कहाः—

"अब मैं उन कारणों को बतलाना चाहता हूं जिनने मुझे ट्राटास्की की हत्या के लिये प्रेरित किया। उनसे कई बार मिलने के बाद मैंने देखा कि उन्होंने मेरे विश्वास और वफादारी का अनुचित लाभ उठाना चाहा है, ठीक उसी तरह जिस तरह वे मजदूर आन्दोलन से अनुचित लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने मेरा चरित्र भ्रष्ट कर दिया। इस तरह उनके कारण मेरा जीवन नष्ट हो गया।

फ्रांस में मैं बड़ा ही शान्तिप्रिय आदमी था। दिन रात अपने काम में लगा रहता था। सेना विभाग में मेरा भविष्य उज्वल था क्योंकि रक्षित सेना में मैं लेफ्टनेण्ट के पद पर था। यदि एक महीना पहले मैंने स्तीफा नहीं दे दिये होता तो मेरी तरक्की हो गई होती। अपने देश की सेवा करते मेरे प्राण चले गये होते। लेकिन ट्राटस्की ने मुझे इस उलझन में डाल दिया कि मैं अवैध जीवन व्यतीत करूँ या अपने देश को लौट जाऊँ और देश विद्रोही के नाते मौत की सजा पाऊं। नकली पासपोर्ट लेकर मैं उनके ही लिये मैक्सिको आया था और उन्होंने मुझे कागज के टुकडे की भांति मडोर कर अपनी मुट्ठी में रख लिया था।

"कई दिनों की बातचीत के बाद उन्होंने अपने दिलकी बात मुझसे कही और उसे पूरा करने का व्यौरा मुझे बतलाया। उनका उद्देश्य लाल सेनाको आतंकित करना, युद्धकी सामग्री बनानेवाले कारखानों को तोड़-फोड़ डालना और यदि संभव हो तो सोवियत रूसके नेताओं की हत्या करना था। मुझ से

उन्होंने जो कुछ कहा था उसका उद्देश्य यही था। उनके इस उद्देश्य में जो लोग सहायक हो सकते थे उनके बारे में उन्होंने कहा था कि उन्होंने एक दलको संघाई भेज दिया है, कछ को हवाई जहाज से और कुछ को नावसे। वहां वे आपस में संपर्क कायम कर लेंगे और वहां दूसरे लोग हैं, जिन्हें हिदायत दी जा चुकी है। उनकी सलाह के अनुसार वे मनचुको पार कर रूस पहुंच जायंगे और वहां ट्राटस्की के अनुयायियों से मिलेंगे।

"साथ आठ दिन पहले ही मैंने इनकी हत्या का इरादा कर लिया था लेकिन मैं अपना कार्यक्रम स्थिर नहीं कर सका था। उनकी हत्या कर चुकने के बाद मैं आत्महत्या कर डालना चाहता था। बर्फ तोड़ने का कुल्हाड़ा मैं अपने साथ फ्रांस से ले आया था। मैं उसे आजमा कर देख चुका था कि उसकी चोट घातक होगी और मैं उसे छिपाकर ले जा भी सकता था। कटार और रिवाल्वर मैं अपनी हत्या के लिये ले गया था।

"ट्राटस्की से मिलने के बाद मुझे उनसे नफरत हो गई क्योंकि मैंने अनुभव किया कि उसने अपने निजी लाभ के लिये मुझे नीचे गिराया है। अपने लाभ के लिये वह विना किसी हिचक के अपने अनुयायियों को अपना निजीअहित करने के लिये वाध्य करता है। इसीलिये मैंने उसे मार डालने का निश्चय किया क्योंकि उसे जीता छोड़ कर मैं अपनी हत्या नहीं करना चाहता था।"

"घटना के दिन मैं साढ़े ६ बजे उसके यहाँ पहुंचा। हेरोल्ड नें फाटक खोल दिया। रास्ते में ट्राटस्की के कई सेक्रेटेरियों से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने कुछ कहा पर मैं सुन नहीं सका। सिल्विया ने यहाँ आनेकी बात कही थी। इससे मैंने हेरोल्ड से उसके बारे में पूछा लेकिन उसका उत्तर नकारात्मक था। इस पर मैंने कहाः—"वह आती ही होगी।" ट्राटस्की अपने खरगोशों को चारा दे रहे थे। उसने मुझे एक निबन्ध लिखने के लिये कहा था। उसने

पूछा कि क्या निबन्ध तैयार है ? इसके बाद हमलोग उसके अध्ययन कक्ष में चले गये। मेरा निवन्ध अपने हाथ में लेकर वे मेज के सामने अपनी कुर्सी पर बैठ गये। मैं उनकी बायीं ओर खड़ा हो गया। मेरी पीठ उनकी ओर थी। मेरी ओर से वे पूर्णतया निश्चिन्त थे।

मैंने अपनी बरसाती उतार कर टाँग दी थी। उसकी बायीं जेब में कटार और दाहिनी में कुल्हाड़ी थी। टांगनें की खूंटी पूरबवाली दीवाल में ट्राटस्की के पीछे थी। जब वे मेरा लेख पढ़ने में व्यस्त हो गये तब मैंने जेब से कुल्हाड़ी निकाली और अपनी दोनों आंखें मूंद कर उनके सिर पर जोरसे उसे दे मारा। मैं केवल एक ही बार कर सका। वे चीख कर मुझ पर गिर पड़े जिससे मेरे बायें हाथ में चोट आ गई। उसके निशान मौजूद हैं। इसके बाद वे लड़खड़ाते पीछे हट गये।

"उनकी चीख सुनते ही हेरोल्ड दौड़ पड़ा और अपने रिवाल्वर के बेंट से मुझे पीटने लगा। उसके बाद चार्ल्स और हैनसेन आ पहुंचे। जो कुछ हुआ था उसका असर मेरे दिमाग पर इतना खराब पड़ा था कि मैं करीब-करीब बेहोश हो गया और भागने की कोशिश नहीं की। उसके बाद वहां कौन आया, मैं कुछ नहीं जानता। बाद को पुलिस पहुंची और मुझे पकड़ लिया गया।"

उसके बाद मैंने कुछ बातें उससे स्पष्ट कर लेना चाहा। मैंने उससे पूछाः—जो पत्र तुम्हारे पास पाया गया है उसे तुमने कब लिखा था ?

जैक—घटना से एक दिन पहले चपुलट पेक के जंगल में बैठ कर मैंने वह पत्र लिखा था।

मैं—लेकिन यह पत्र तो टाइप किया हुआ है ?

जैक—मेरे पास अपना छोटा टाइपराइटर था। यह खत टाइप कर लेने के बाद मैंने वह टाइपराइटर बारटोलो को दे दिया। उस टाइपराइटर को

इसके बाद मैं देखना भी नहीं चाहता था। मैं उसे होटल में भी नहीं ले जाना चाहता था। सिलविया यदि उसके बारे में मुझ से पूछताछ करती तो मैं क्या कैफियत देता।

मैं—यह बारटोलो कौन है ? तुम्हारा इससे परिचय कब और कैसे हुआ ?

जेक—इण्डिपेण्डेंस स्ट्रीट और डोनलसे स्ट्रीट के चौराहे पर किट-कैट क्लब नामक एक शराबखाना है। वहीं मेरी उससे मुलाकात हुई। बड़े बड़े शहरों में इस तरह के लोग बहुधा पाये जाते हैं। कुछ पैसे दे देने से उनसे कोई भी काम कराया जा सकता है। मैंने उसे पीने के लिये एक दिन निमन्त्रण दिया और बातचीत करने लगा। मैंने उससे कहा कि क्या तुम मेरे लिये एक रिवाल्वर और टाइपराइटर ऊपर कर दोगे। वह राजी हो गया। मंगल को सिल्विया के साथ भोजन करने के बाद मैं उसकी खोजमें किटकैट होटल में गया। वहां रिवाल्वर और टाइपटाइटर दोनों लेकर वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। हमलोग सेन जुआन स्क्वायर की ओर गये। मैंने अपनी जेब से कुछ रुपये निकाल कर उसे दिये। उन्हें गिन कर उसने सहेज लिया। इस काण्ड के बाद मैं जिन्दा नहीं बच सकता था, इसलिये मैंने टाइपराइटर उसे उपहार स्वरूप दे दिया। रिवाल्वर को मैंने अपनी हत्याके लिये रख लिया।

मैं—और तुमने कटार कहां खरीदी थी ?

जैक—लैंगूनिलो में। वहां हर तरह की चीजें मिलती हैं। मैंने इसे उस समय खरीदा था जब हत्या करने की कोई बात मेरे मनमें नहीं उठी थी। यह कटार मुझे पसन्द आई और मैंने योंही इसे खरीद लिया।

इस प्रसंग को बन्द करने से पहले मैंने उससे पूछाः—"क्या तुम राबर्ट शेल्डन हार्ट या 'बाब' यो जानते हो ?

जैक—अल्फ्रेड रोस्मर को देखने के लिये फ्रेंच अस्पताल में मैं प्रतिदिन जाता था। वहीं मैंने उसे देखा था। रोस्मर ने उससे मेरा परिचय कराया था। उसने मुझे बतलाया था कि वह न्यूयार्क का रहनेवाला था। वही मेरी उससे पहली और अन्तिम भेंट थी। मुझे बाद को मालूम हुआ कि उसका उपनाम 'बाव, है।

मैं—एक प्रश्न और! ता० २४ के आक्रमण के बाद ही तुम न्यूयार्क क्यों चले गये?

जेक—मैं सिलविया से मिलने गया। मैं उससे मिलने के लिये व्यग्र था।

६—स्पष्टीकरण

ट्राटस्की की हत्या के बाद पांच दिन तक मुझे रात-दिन जाँच के काम में व्यस्त रहना पड़ा। इन पाँच दिनों में मुझे क्षण भर के लिये भी आराम करने की फ़ुरसत नहीं मिली। मैंने अनुभव किया कि संसार भर के लोगों की आँखें मुझ पर लगी हैं। लोग जांच का परिणाम जानने के लिये व्यग्र हैं। लोग समझते थे कि इस जाँच से असली बात का पता लग जायगा। मैक्सिको तथा विदेशों के समाचार पत्र तथा विदेशी राज्यों के प्रतिनिधि जाँच की कार्रवाई को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। वे लोग मुझ से सवाल पर सवाल पूछा करते थे। इन बातों से प्रगट होता था कि इस हत्या से संसार में खलबली मच गई है। ऐसी अवस्था में मैं आराम की बात कब सोच सकता था। पाँच दिन के कड़े परिश्रम के बाद मैं सरकारी वकील के सामने १४४ पृष्ठों की टाइप की हुई रिपोर्ट पेश कर सका। इसमें ज्यादातर लोगों के बयान ही थे।

हत्यारा यद्यपि पुलिस की हिरासत में था। पर हमें तो उसके साथियों का पता लगाना था। सबसे पहले तो हमलोगों को यह जानना था कि उसने सच बात कही है या अपने खत और बयान में झूठी बातें लिख डाली हैं। मेरी दृढ़ धारणा थी कि असली बातों का पूरी तरह पता नहीं लग सकेगा। तोभी हमलोग यथासाध्य सत्य के निकट पहुँचना चाहते थे।

सबसे महत्वपूर्ण बयान ट्राटस्की के सेक्रेटरी जैक कूपर का था। ता० १२ जून को वह जैक्सन मोरनार्ड के साथ हवाई अड्डे तक गया था। जैसा अनुमान किया जाता है जैक्सन जी० पी० यू० के एजेण्ट से ट्राटस्की की हत्या के बारे

में अन्तिम आदेश लेने न्यूयार्क जा रहा था। ऐसी हालत में ट्राटस्की के एक सेक्रेटरी का उसे हवाई अड्डे तक पहुंचाने जाना भी विधि का व्यंग ही समझा जायगा।

हवाई अड्डे पर दोनों ने साथ ही भोजन किया था। रास्ते में तथा भोजन के समय कूपर ने उससे अनेक सवाल पूछे थे। इन प्रश्नों के उत्तर में जैक्सन ने कहा था कि मैक्सिको में ट्राटस्की के सक्रिय अनुयायियों से उसका कोई संपर्क नहीं रहा है। उसका सक्रिय संपर्क फोर्थ इन्टरनैशनल के फ्रांसीसी विभाग से ही रहा है। उसने यह भी कहा था कि वहाँ के दल के सभी प्रमुख व्यक्तियों को वह जानता था और रूडल्फ क्लेमेण्ट से भी उसका परिचय था। (रूडल्फ क्लेमेण्ट ट्राटस्की का सेक्रेटरी था जिसे जी० पी० यू० वालों ने पेरिस में मार डाला था। बाद को मारने में उसका केवल धड़ पाया गया था सिर का पता नहीं लगा।) ट्राटस्की के पुत्र लियोन सेडोव से भी उसका परिचय था। पेरिस के एक होटल में सेडोव की रहस्यमय तरीके से हत्या की गई थी। क्या इससे यह परिणाम नहीं निकाला जा सकता कि इन दोनों हत्याओं में भी इसका हाथ था? इस बात की बहुत ज्यादा संभावना थी। संभव है, यह जघन्य काम करने के लिये मैक्सिको आने से पहले पेरिस में वह अपनी योग्यता की परीक्षा दे चुका था। राबर्ट शेल्डन हार्ट की मृत्यु के लिये उसने बहुत अधिक खेद प्रगट किया और कहा कि संयोग की ही बात थी कि ट्राटस्की उस दिन साफ बच गये। अन्त में उसने कहा था—"मुझे पूरी आशा है कि पुलिस अपराधियों को शीघ्र गिरफ्तार कर सकेगी और स्टालिन के इन अपराधों का दण्ड मजदूरवर्ग उसे देंगे।"

"न्यूयार्क से वापस आने के बाद जक्सन मोर्नार्ड ने ट्राटस्की के अनुयायियों के अल्पमत और बहुमत दल के बीच न्यूयार्क में होनेवाले संघर्ष में बड़ी

दिलचस्पी प्रगट की। उसने कहा कि दोनों विचारधारा के अनेक साथियों से वहाँ उसकी मुलाकात हुई थी। उसने यह भी कहा कि यद्यपि सिल्विया अल्पदल में है तो भी मैं स्वयं बहुमत वालों के पक्ष में हूं। इस तरह उसने ट्राटस्की और उनके साथियों की सहानुभूति प्राप्त करना चाहा क्योंकि इन लोगों का झुकाव बहुमत दलवालों की ओर था।

जैक्सन जल्द घबरा जाता था। उसे सदा जल्दी पड़ी रहती थी। ट्राटस्की के मकान पर जब कभी वह जाता मुश्किल से हमलोगों को अभिवादन करता। हत्या से एक दिन पहले वह अपनी मोटर में आया। उसने उसे इस तरह घुमाया कि फाटक पर खड़ी डाज मोटर उसने तोड़ दी। अपनी इस गलती की उसने यह कैफियत दी कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है। बचपन से ही मेरा स्वास्थ्य नाजुक रहा है।"

मैंने पूछाः—ट्राटस्की के मकान में रहने वाले लोग इसका विश्वास करते थे?

कूपर—उसे हमलोग अपना मित्र समझते थे। वह ट्राटस्की की पत्नी को उपहार लाया करता था।

मैं—आक्रमण से अपनी रक्षा के लिये ट्राटस्की अपने पास किसी तरह का शस्त्र भी रखते थे?

कूपर—साधारणतः उनके पास एक पिस्तौल सदा रहती थी। उस समय पिस्तौल उनके पास थी या नहीं, इस संबंध में मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि मैं उस वक्त वहाँ मौजूद नहीं था।

मैं—सिल्विया पर भी ट्राटस्की का पूरा विश्वास था?

कूपर—वह भी दोस्त समझी जाती थी। लेकिन उससे उतनी घनिष्टता नहीं थी।

मैं—तुम्हारा इस संबंध में क्या विचार है? क्या ट्राटस्की की इस हत्या की तैयारी पहले से की गई थी?

कूपर—निश्चय ही, पन्द्रह वर्षों से यह प्रयत्न जारी था। मेरा निश्चित मत है कि जैकसन जी० पी० यू० का एजेण्ट है। उसका बयान ही प्रगट करता है।

हेरोल्ड राबिन्स का बयान भी महत्व पूर्ण है। सबसे पहले वही घटना स्थल पर पहुँचा था और उसीने जैकसन पर प्रहार किया था। हैनसन बाद को आया और कहा कि ट्राटस्की का आदेश है कि उसे मार मत डालो। उसे बांध दो और पूछताछ करो।

इसके उत्तर में हेरोल्ड ने आवेश में कहा था:—मैं उसे मार डालना ही नही चाहता बल्कि यदि वह यह नहीं बतलाता कि किसने उसे भेजा है तो मैं इसकी हड्डी चूर चूर कर डोलूँगा और गोलियों से इसके शरीर को छलनी कर दूँगा।

जैक्सन मोर्नार्ड ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर हेरोल्ड ने कहा—कबूल क्यों नहीं करता कि जी० पी० यू० ने तुझे भेजा था।

इस पर जैक्सन ने कहा:—नहीं, नहीं, जी० पी० यू० ने मुझे नहीं भेजा था। उन्होंने मुझे भेजा था, उन्होंने।

हेरोल्ड:—"उन्होंने कौन है। नाम क्यो नहीं बतलाता?

जेक्सन:—मैं उस आदमी का नाम नही जानता, लेकिन उसीने मुझ से यह काम करवाया है!

हेरोल्ड—उसने किस तरह तुझसे यह काम करवाया?

जैक्सन—मैं मजबूर था। मुझपर उसका दबाव है। उनलोगो ने मेरी माँ को कैद कर रखा है।

यह अन्तिम बात उसने जरा रुक कर कही थी मानों उसी वक्त उसे एक बहाना सूझ गया हो। हैरोल्ड ने कहा:—मुझे विश्वास नहीं हुआ कि उसकी माँ को किसी ने कैद कर रखा है। मेरा अनुमान है कि असली बात को छिपाने के लिये उसने वह बहाना निकाल लिया था। हैरोल्ड के धमकाने पर उसने कहा कि उस आदमी का नाम पेरिस है, फिर कहा कि उसका नाम बारटोलो है। पेरिस मे मुझसे उसकी जान पहचान हुई थी। तीन सप्ताह पहले वह मुझसे किटकेट होटल मे मिला था।

इसपर हैनसन उसके हाथ मे सूई गोदने लगा। वह व्यग्रता से कराह उठा और कहने लगा:—मुझे मार डालो! मुझे मार डालो! मैं जिन्दा रहने योग्य नहीं हू। यह काम मैंने जी॰ पी॰ यू॰ के आदेश से नहीं किया है लेकिन मुझे मार डालो!"

अपने पहले बयान में जैकसन मोर्नार्ड ने इस बारटोलो के बारे में कहा था कि उससे पहले पहल किटकैट होटल में उसकी भेंट हुई थी। उसीने उसे रिवाल्वर और टाइपराइटर लाकर दिया था। तब यह बारटोलो कौन था? ट्राटस्की के सेक्रटरी से उसने जो कुछ कहा था उससे प्रगट होता था कि वह उसे पेरिस से ही जानता था। पर मेरे सामने उसने जो बयान दिया था उसके अनुसार किटकैट होटल में ही उसकी जान पहचान हुई थी। तब क्या यह कोई असली आदमी है या इसने योंही एक नाम गढ़ लिया है।

क्या जी॰ पी॰ यू॰ का वह एजेण्ट जिसने जैकसन मोर्नार्ड को ट्राटस्की की हत्या के लिये अपना साधन बनाया था, इस नाम के पीछे छिपा है? अथवा खतरे के समय उसे यही नाम सूझ पड़ा? और अपनी माँ के बारे में उसने जो कुछ कहा है झूठ है? क्या यह बात सही है कि जैकसन को अपनी मां के बारे में कुछ नहीं मालूम, जैसा कि उसने अपने वक्तव्य में लिखा है अथवा सचमुच वह

उन लोगों की कैद में है और उन लोगों ने उसे धमकी देकर यह अपराध करने के लिये मजबूर किया है। यह भी एक विचित्र उलझन थी।

चार्ल्स ओलने कार्नेल ने हेरेल्ड राबिन्स के बयान का ही समर्थन किया। उसने अपने बयान में यह भी कहा कि मार खाते समय जक्सन मोर्नार्ड ने कहा था कि वारटोलो पेरिस से आ गया था और उसकी मुलाकात उस दिन भी किटकैट होटल में होनेवाली थी। क्या यह भी बनावटी बयान था या सचमुच किटकैट होटल में कोई उसका दोस्त देख रहा था जो उसे छिपाने की कोशिश करता अथवा हत्या हो जाने के बाद उसे भगाने का प्रयत्न करता। उसने अपनी मोटर जिस तरह से खड़ी की थी उससे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी नीयत हत्या करके भगाने की थी।

अगर जैक्सन मोर्नार्ड ने जी० पी० यू० की प्रेरणा से और उनके इशारे पर यह हत्या की है तो निश्चय ही अन्तिम समय तक यह उनके संपर्क में था। यदि वह हत्या करने के बाद किसी तरह ट्राटस्की के मकान से बेदाग निकल भागता तो इस बात की जिम्मेवारी उनके ऊपर थी कि वे लोग इसे भगा देते और उसका पता नहीं लगने देते। यही कारण था कि उसने अपने सभी निजी कागज-पत्रों को नष्ट कर दिया था—यहाँ तक कि अपना पासपोर्ट भी उसने नष्ट कर दिया था? क्या यह वार्टोलो ही तो जी० पी० यू० का एजेण्ट नहीं है? इसके असली नाम का पता कैसे लगे?

मैंने कार्नेल से पूछाः—क्या कभी भी तुम्हें जैक्सन पर किसी तरह का सन्देह हुआ था?

कार्नेल—लेशमात्र भी नहीं, बल्कि एक दिन मैंने ट्राटस्की को यहांतक कहते सुना था कि जैक्सन हमलोगों का अनुयायी है और पेरिस में इसने हमलोगों के दल को गहरी रकम दी है। लेकिन अब तो यह साफ हो गया कि वह स्टालिन

का अनुयायी था और जी० पी० यू० के आदेश से उसने ट्राटस्की पर यह आक्रमण किया है।

ओटो मुशलर घटना के दिन छुट्टी पर था। उस दिन करीब एक बजे उसकी मुलाकात जैक्सन मोनार्ड और सिल्विया से फाइन आर्टस पैलेस के सामने हुई थी। उन्होंने कहा था कि कल ही वे लोग अमेरीका के लिये रवाना हो जायँगे। इसलिये शाम को साढ़े चार या पांच बजे जैक्सन जाकर ट्राटस्की से विदा ले लेंगे। उन्होंने किसी होटल में साढ़े सात बजे उसे और उसकी प्रेयसी को दावत भी दी थी। सिल्विया शान्त थी और मुस्कुरा रही थी लेकिन जैक्सन के चेहरे से बेचैनी झलक रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और मुश्किल से वह मुँह खोलता था। साधारणतः वह बहुत बकवादी था। उस दिन उसका व्यवहार आसाधारण था। वह वहां देर तक ठहरा भी नहीं, बल्कि क्षण भर के बाद ही वहां से चला गया। सिल्विया ने कहा था कि उसका स्वास्थ्य टीक नहीं है। इसका प्रधान कारण उसके आहार की अनियमितता उसने बतलाये। उसके मेक्सिको छोड़ने का भी यही कारण बतलाया।

ओटो को सिल्विया के खिलाफ कुछ नहीं कहना था। उस वक्त भी उसको यही विश्वास था कि सिलिविया नेकनियती से सब कुछ कह रही थी।

ओटो ने अपने बयान में आगे चलकर कहाः—"ठीक साढ़े सात बजे अपनी प्रेयसी के साथ मैं वहां होटल में पहुंचा। करीब पन्द्रह मिनट बाद सिल्विया भी पहुंची। वह घबरायी हुई थी। जैक्सन को वहां मौजूद न पाकर उसनें कहाः—"यह तो विचित्र बात है। मेरी समझ में नहीं आता कि वह क्यों नहीं आया। जरूर कोई गड़बड़ी हुई है। क्योंकि देर होने पर वह सदा होटल वालों को फोन कर देता था। उसने मुझसे कहा था कि वह साढ़े चार बजे मेरे यहां आवेगा और हम लोग साथ ही ट्राटस्की से विदा लेने जायेंगे।

न तो वह आया और न फोन ही किया। इससे तो उसे यहां ठीक समय पर पहुंच जाना चाहिए था।

"सिल्विया ने कई बार माण्टेनो होटल में फोन किया। उसकी घबराहट बराबर बढ़ती जाती थी क्योंकि उसका कोई संवाद उसे नहीं मिल रहा था। जहां कहीं भी उसके मिलने की संभावना हो सकती थी वहां उसकी टोह लेने के लिए वे लोग रवाना हुए। आठ बजकर दस मिनट पर ओटो ने कहा कि एक बार ट्राटस्की के निवास पर भी फोन कर पूछना चाहिये। इस पर सिल्विया ने कहा—'जैक्सन वहां कदापि नहीं हो सकते क्योंकि वे मेरे बगैर वहाँ अकेले कभी नहीं जाते थे।

इसके बावजूद भी ओटो ने फोन किया। वहां से उसे जो उत्तर मिला उसे सुन कर वह दंग रह गया। उनलोगों ने कहा था:—"तुरत चले आवो। जैक्सन ने ट्राटस्की को मार डालने की चेष्टा की है।

उनलोगों ने टेक्सी पकड़ी और कोयकन के लिये रवाना हो गये। रास्ते में ओटो ने सिल्विया से वह समाचार कहा जो फोन पर उसने सुना था। उसकी बात सुनते ही सिल्विया रो पड़ी और बोली:—"अगर इस तरह की कोई बात हुई तो घटना बड़ी भीषण होगी।"

कोयकन पहुंचने पर उन्हें सारी बातें मालूम हुईं। सिल्विया बिलख बिलख कर रोने लगी। उसने कहा:—मुझे तुरत थाने में पहुंचाइये। वह गिरफ्तार कर ग्रीन क्रास अस्पताल में भेज दी गई। ओटो का उस समय भी यही ख्याल था कि सिल्विया हर तरह से निर्दोष है।

लेकिन क्या सचमुच सिल्विया निर्दोष थी? ट्राटस्की के अन्य सेक्रटरी तथा उनकी पत्नी का भी यही विचार था कि सिल्विया निर्दोष है। लेकिन मेरी धारणा ऐसी नहीं थी। इतने दिनों से जैक्सन मोर्नार्ड के साथ उसकी घनिष्टता

ही नहीं बल्कि घनिष्ट संपर्क था तो भी वह उसकी नीयत के बारे में कुछ नहीं जान सकी। सिल्विया बदहवाश थी और बिलख बिलख कर रोती रहती थी। ट्राटस्की की चर्चा होते ही वह सिसकने लगती थी। वह जैक्सन मोर्नार्ड को हर तरह से कोसती और गालियाँ देती। यदि उसकी नीयत सचमुच साफ थी तब तो उसके इस तरह विलाप करने तथा जैक्सन को कोसने में सार्थकता थी।

जैक्सन मोर्नार्ड से परिचय और घनिष्ठता का उसने जो वर्णन किया वह जैक्सन के बयान से पूरी तरह मिलता था। १६३८ के जुलाई महीने की बात है। सिल्विया के किसी दोस्त ने जैक्सन से उसका परिचय कराया। उसका नाम रूकी वेल था। वह अमेरिका का रहने वाला था। उसीके साथ सिल्विया अमेरिका से पेरिस आयी थी। थोड़े दिनों के बाद दोनों में शादी की बातचीत हो गई। अगस्त में जैक्सन उसे अपने साथ ब्रुसेल्स ले गया। उसने सिल्विया से कहा था कि उसकी मा वहीं रहती है लेकिन उसने कभी भी अपनी मां से सिल्विया की भेंट नहीं कराई।

सिल्विया अमेरिका के ट्राटस्की दल में कई वर्षों से थी। जैक्सन ने उससे कहा कि मुझे अपना कोई भी राजनीतिक विचार नहीं है। सिल्विया ने उससे मार्क्सवाद और ट्राटस्कीवाद की चर्चा की। वह उनमें रुचि दिखलाने लगा। १६३६ में वह न्यू यार्क चली आई। सितंबर तक जैक्सन के साथ उसका पत्र व्यवहार चलता रहा। उसके बाद एक दिन जैक्सन अचानक न्यू यार्क पहुंच गया। उसने उसे बतला दिया था कि नकली पासपोर्ट के जरिये वह आया है क्योंकि उसके बिना उसे विजा नहीं मिल सकता था। वह प्रायः एक महीने तक सिल्विया के साथ न्यू यार्क में रहा। इसके बाद उसने सिल्विया से कहा कि उसे मेक्सिको जाना है क्योंकि उसके नये मालिक पेटर लूवेक ने उसे वहीं बुलाया है। उन्होंने उसे ५० डालर प्रति सप्ताह देने का वादा किया है। पेटर लूवेक

ग्रेटब्रिटेन के आयात निर्यात के बहुत बड़े व्यापारी हैं। सिल्विया अन्त तक यही समझती रही कि जैक्सन कहीं नौकरी करता है, यद्यपि न्यू यार्क पहुंच कर उसने उसे ३००० डालर यह कह कर रखने के लिये दिया था कि यह रकम उसे उसकी माँ से प्राप्त हुआ था।

सिल्विया जैक्सन के साथ मैक्सिको आई। १९४० में जैक्सन ने कहा कि उसके मालिक का दफ्तर ८२०, एडिफिसियो इर्मिटा भवन में है। वहाँ का टेलीफोन नम्बर भी उसने उसे दे दिया था। कुछ दिन के बाद जब उसे फोन करने की जरूरत पड़ी तो उसने देखा कि फोन का वह नम्बर उस भवन के पते से नहीं मिलता है। उसने इस बात की चर्चा अपनी बहन गिल्डा से की जो उस वक्त मैक्सिको में थी। गिल्डा वहाँ पता लगाने गई तो उसे मालूम हुआ कि उस भवन में ८२० नम्बर है ही नहीं। इससे सिल्विया को यह सन्देह हुआ कि जैक्सन खुफिया विभाग में काम करता है। उसने उस बात की चर्चा मार्गरेट रोसमर से भी की थी। उन्होंने उसके काम धाम का ठीक-ठीक पता लगाने का वचन भी दिया था।

मार्च के अन्त में वह न्यूयार्क वापस आने लगी तो वह जैक्सन के साथ ट्राटस्की के पास विदा लेने गई थी। यह पहला अवसर था जब जैक्सन मोर्नार्ड सिल्विया के साथ ट्राटस्की के निवासस्थान कोयकन गया था। न्यूयार्क जाते वक्त मैंने उससे वचन ले लिया था कि वह कभी भी अकेले ट्राटस्की के निवास पर नहीं जायगा क्योंकि नकली पासपोर्ट के कारण झंझट पैदा होने की मुझे सदा आशंका बनी रहती थी। कुछ दिन के बाद उसने सिल्विया के एक पत्र में लिखा था कि वह अपना वचन भंग करने के लिये मजबूर है क्योंकि अल्फ्रेड रोसमर बीमार थे और उसे उन्हें लेकर डाक्टर के यहाँ जाना पड़ता था।

मैंने पूछाः—तुम जैक्सन को किस पते पर पत्र लिखा करती थी?

सिल्विया—वेल्स फर्गो ऐण्ड कम्पनी के पते पर। मैं भी जब मेक्सिको में रहती थी तब मेरा पत्र भी इसी पते पर आता था। एक दिन मेरी बहन ने न्यूयार्क से मुझे पत्र लिखा कि मेक्सिको में स्टालिन के दो प्रधान एजेण्ट हैं, वी० हेलमेन और स्टैथेल। जैक्सन ने यह प्रगट किया कि उसने न तो मेरे खत को पढ़ा है और न इन लोगों के बारे में कुछ जानता है, बल्कि उसने मुझसे ही पूछा था कि ये लोग कौन हैं। मैंने तुरत इन दोनों नामों की सूचना हेरोल्ड राबिन्स को दे दी थी।

मैं—ट्राटस्की पर आक्रमण के बारे में तुम्हारा अपना क्या विचार है?

सिल्विया—अब विचार के बारे में क्या पूछते हैं। अब तो यह स्पष्ट हो गया कि उसने मुझे अपना साधन बनाया और ट्राटस्की की हत्या करने के लिये मेरी सहायता से उनके यहाँ तक पहुंचा। मेरे पास इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है लेकिन मेरा दिल यही कहता है। निःसन्देह जैक्सन स्टालिन का अनुयायी है और उसके पीछे और भी अनेक स्टालिनवादी हैं जिन्हें मैं नहीं जानती। ट्राटस्की की हत्या के लिये सबसे अधिक व्यग्र स्टालिन ही है और उसका साधन मैं बनी।

सिल्विया के बयान से मैंने दो परिणाम निकाले। जैक्सन मोर्नार्ड ने अपने मालिक के दफ्तर का जो पता सिल्विया को दिया था वहीं ता० २४ मई के आक्रमण के संचालक अलफरो सिक्विरो का भी दफ्तर था। इसे संयोग की बात नहीं कह सकते। निःसन्देह जैक्सन और सिक्विरो एक दूसरे को जानते थे और मिलकर काम करते थे। संभव है उन लोगों को आदेश स्टालिन के उन दोनों एजण्टों से मिलता रहा हो जिनका हवाला सिल्विया के बहन के पत्र में था। तब क्या ता० २४ मई के आक्रमणवाला वह फ्रेंच यहूदी इनमें से एक था? जो भी हो इतना तो प्रगट हो गया कि जी० पी० यू० ने एडिफीसियो इर्मिटा

को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था। इसके अलावा राबर्ट शेल्डन हार्ट का भी पत्र वेल्स फार्गो एण्ड कम्पनी के पते पर आया था। यह दूसरा प्रमाण है। निश्चय ही इस आक्रमण में अनेकों का हाथ था।

इसके बाद सिल्विया ने मैजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिया उससे और भी आवश्यक बातें प्रगट हुईं। "मुझे यह नहीं मालूम था कि जेक्सन को रुपया पैसा कहां से मिलता था। लेकिन उसे रुपये का कभी अभाव नहीं रहा और खर्च में उसने कभी कंजूसी या किफायतसारी नहीं की। पैसे से जो भी आनन्द लिया जा सकता था उसका वह उपभोग करता था। मैं निश्चय पूर्वक यह नहीं कह सकती कि यह रुपया उसे जी० पी० यू० से मिलता था लेकिन वास्तविकता यही थी। इस तरह की जघन्य हत्या भी जी० पी० यू० का एजेण्ट ही करा सकता था और उसके लिये इस तरह की तैयारी करना भी उसके लिये ही संभव था।

मैजिस्ट्रेट—मैक्सिको आने के लिये जैक्सन मोर्नार्ड ने तुम से आग्रह किया था?

सिल्विया—हाँ, उसने मुझसे कहा था:—मुझे तुरत मैक्सिको अपने काम के संबंध में जाना आवश्यक है। तुम्हें भी "कुछ दिन के बाद वहाँ पहुंच जाना होगा।" अब मेरी समझ में आया कि उसका मैक्सिको में क्या काम था और उसने मुझे यहां क्यों बुलाया था। मेरी सहायता से वह ट्राटस्की से संपर्क स्थापित करना चाहता था ताकि वह उनकी हत्या कर सके।

मजिस्ट्रेट—न्यूयार्क में उसके साथ रहते समय क्या तुमने कभी उस कुल्हाड़ी को उसके पास देखा था जिससे उसने ट्राटस्की पर प्रहार किया था?

सिल्विया—न्यूयार्क में वह चीज उसके पास नहीं थी। कम से कम मैंने उस चीज को उसके पास कभी भी नहीं देखा था। पहले पहल मैक्सिको

मैंने उस चीज को उसके पास देखा। पूछने पर उसने कहा था कि पर्वतों पर चढ़ने का उसे बहुत शौक है और एक दो चढ़ाइयों में वह इसका इस्तेमाल कर चुका है। इस दुर्घटना के दिन तक मैंनें उसके पास पिस्तौल वगैरह नहीं देखा था।

मजिस्ट्रेट—क्या जैक्सन ने अपने इस इरादे की चर्चा कभी तुम से की थी? क्या तुम्हें कभी उसपर किसी तरह का सन्देह हुआ था?

सिल्विया—कभी नहीं, किसी तरह का नहीं। इसके प्रतिकूल वह सदा मुझे इस बात का आश्वासन देता रहा कि वह ट्राटस्की का बहुत बड़ा प्रशंसक और मित्र है। हत्या के दिन उसने एक ग्रास भी अन्न मुँह में नहीं डाला था। वह चिन्तित और व्यस्त प्रतीत होता था। भोजन से पहले ही वह यह कहकर चला गया था कि अमेरीका के राजदूत तथा बैंक से उसे आवश्यक बातचीत करनी है। उसने मुझे माण्टेन होटल में छोड़ दिया और कह गया कि वह चार और पांच के बीच आवेगा और मुझे लेकर ट्राटस्की से विदा लेने चलेगा।"

दोनों प्रेमियों का सामना कराना आवश्यक था। जैक्सन ने अपन बयान में कहा था कि ट्राटस्की की हत्या करने के कारणों में से एक मुख्य कारण यह भी था कि ट्राटस्की उसे सिल्विया से अलग कराना चाहता था। लेकिन वह सिल्विया को अपने से अभिन्न समझता था। सिल्विया का कहना था कि उसके प्रेमी ने ट्राटस्की की हत्या के लिये उसे अपना साधन बनाया। जैक्सन का बयान था कि उसने कुल्हाड़ी यूरोप में खरीदी थी। सिल्विया का बयान था कि उसने पेरिस या न्यूयार्क में यह कुल्हाड़ी उसके पास नहीं देखी थी। इससे यह अनुमान किया जा सकता था कि इस अपराध के लिये या तो उसने यहीं कुल्हाड़ी खरीदी या किसीने उसे लाकर दी। दोनों का सामना होने से इस बात की तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण बातों का स्पष्टीकरण हो जानेकी संभावना थी।

रात को बारह बजे यह संभव हो सका। सिल्विया का भाई न्यूयार्क से आ गया था। मैंने उसे किसी बहाने से सिल्विया के पास से हटा देने का आदेश दे दिया और सिल्विया से कह दिया कि तुम्हारे एक मित्र तुमसे मिलने आनेवाले हैं। लेकिन उसे दोस्त का नाम नहीं बताया गया। अचानक सामना होने का जो प्रभाव हो सकता था वही मैं देखना चाहता था। जैक्सन से यह कहा गया कि उसके घावों की जांच के लिये उसे डाक्टर के खास कमरे में जाना होगा। वह अत्यधिक कमजोर था। इसलिये दो सिपाही उसे सहारा देकर ले गये।

सिल्विया अपने बिस्तर पर लेटी थी। वह दोनों हाथों से अपनी आंखें बन्द कर सिसक सिसक कर रो रही थी। सिल्विया को इस हालत में देखते ही जैक्सन दोनों सिपाहियों से अपने को छुड़ा लेने के लिये छटपटाने लगा। वह चिल्ला पड़ाः—"मुझे यहाँ क्यों लाया गया। कर्नल! आपने यह क्या किया? मुझे यहाँ से वापस ले चलिये।

मैंने उससे कहाः—"यदि वास्तव में तुम्हें सिल्विया से प्रेम है तो उसके पास जाकर उससे बातें करो और उसे तसल्ली दो।"

मेरी बातें सुनते ही सिल्विया ने अपना सिर उठाया और जैक्सन की ओर देखकर बोलीः—"इस हत्यारे को मेरे सामने से दूर कीजिये। इसे मार डालिये। इसने उस महापुरुष की हत्या की है। इसे मार डालिये।"

दोनों का इस तरह सामना कराना चाहे कैसा भी दारुण क्यों न रहा हो लेकिन मैं तो उसका परिणाम अन्त तक देखना चाहता था। सिल्विया को संबोधन कर मैंने कहाः—"जैक्सन ने अपने बयान में कहा है कि वह तुम्हारे ही लिये जीवित रहना चाहता था। उसने ट्राटस्की की हत्या इसलिये की कि वे इसे तुमसे जुदा करने का षड्यंत्र कर रहे थे।"

सिल्विया—सब झूठ है। यह मक्कार और हत्यारा है।

मैंने कहा:—"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि तुम्हें हत्या की सारी परिस्थिति मालूम नहीं है। जैक्सन का बयान है कि वह ट्राटस्की का बहुत बड़ा प्रशंसक था, लेकिन उनसे मिलने के बाद उसका भ्रम जाता रहा क्योंकि उसने ट्राटस्की को झूठा और मक्कार पाया। वह उनसे इसलिये और चिढ़ गया कि वे तुम दोनों का सुख छीनने के लिये षड्यंत्र कर रहे थे।"

उसने आवेश में कहा:—"क्या वाहियात बातें आप कर रहे हैं। वह ट्राटस्की को जानता तक नहीं था। मेरे ही द्वारा इसकी जान पहचान उनसे हुई। ट्राटस्की इस पर पूरा विश्वास करने लगे थे और इसे अपना आदमी समझते थे।"

इतना कहकर उसने क्रोधभरी दृष्टि जैक्सन पर डाली और कड़क कर कहा:-"क्या मेरी बात को काटने का तुम्हें साहस है! दगाबाज! झूठ मत बोल! सच सच बातें कह दे चाहे प्राण ही क्यों न गँवाना पड़े!"

जैक्सन के चेहरे पर मुर्दनी छा गई। मेरी तरफ घूम कर वह बार बार कहने लगा:—"कर्नल? आपने यह क्या किया?"

सिल्विया की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। उसने अपने प्रेमी पर दूसरा प्रहार किया—"तू निखालिश झूठ बोल रहा है। तू जी० पी० यू० का एजेण्ट है। स्टालिन के आदेश से उनलोगों ने ट्राटस्की के हत्या के लिये तुझे बहुत पहले ही भेजा था। तुझे किसी तरह मालूम होगया कि मेरी बहन ट्राटस्की के साथ काम करती है और उनकी पत्नी से मेरी घनिष्टता है। इसलिये तू मेरा प्रेमी बन गया और मुझे धोखा दिया। तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य मुझे साधन बना कर उनकी हत्या करनी थी।"

मैंने फिर कहाः—"जैक्सन ने यह भी कहा है कि ट्राटस्की संघाई के रास्ते से उसे रूस भेजना चाहते थे ताकि यह वहाँ जाकर लोगों को स्टालिन के खिलाफ उभाड़े ।"

सिल्विया:—"झूठ । सरासर झूठ ।"

मैं:—"उसने कहा है कि उसने इस कुल्हाड़ी को स्विट्जलैंण्ड में ही खरीदी ।

सिल्विया: —"यह भी सच नहीं है । मैं हर जगह उसके साथ थी । मैं उसकी हर चीजों को जानती हूँ । उससे कहिये कि झूठ बोलना और बहानेबाजी करना छोड़े । ट्राटस्की की हत्या के लिये उसने यह कुल्हाड़ी यहां खरीदी ।"

मैं—"उसने कहा है कि यह कुल्हाड़ी न्यू यार्क में उसके पास थी ।"

सिल्विया—"वह बेशर्म है । सरासर झूठ बोल रहा है ।"

इसपर मैंने जैक्सन मोर्नार्ड से पूछाः—"सिल्विया की बातों का तुम्हारे पास क्या उत्तर है ?

हत्यारा चुप रहा । उसकी पूरी दुर्गति हो गई थी । सिल्विया की ओर आँखें उठाकर देखने का भी उसे साहस नहीं था । वह इसी चिन्ता में था कि इस मुलाकात का अन्त किस तरह किया जाय ।"

मैंने सिल्विया से फिर कहा—"जैक्सन ने यह भी कहा है कि अमेरीका जाने के लिये उसकी माँ ने ब्रुशल में उसे पाँच हजार डालर दिया था । उनमें से तीन हजार डालर उसने तुम्हे दिये हैं ।"

सिल्विया—"इतना तो सही है कि उसने मेरे पास तीन हजार डालर अमानत के तौर पर रखा है ।" इसके बाद उसने जैक्सन की ओर मुड़ कर कहाः—"तुमने मुझे भी उसी तरह धोखा दिया जिस तरह दूसरों को धोखा देने

की कोशिश करते रहे। निश्चय ही यह रकम तुम्हें तुम्हारी माँने नहीं दिया था बल्कि ट्राटस्की की हत्या करने के लिये जी० पी० यू० ने तुम्हें यह रकम दी होगी। कमीना कहीं का! यह रकम निश्चय ही उन्होंने इस हत्या के लिये तुम्हें दी थी।"

तब मैंने जैक्सन मोर्नार्ड से कहा:—तुम अपनी प्रेयसी की बातें सुन रहे हो। तुम्हारे मुकदमे में यह अभियोग के पक्ष में प्रधान गवाह होगी। तुम्हें क्या कहना है?"

जैक्सन—"कुछ नही! कुछ नहीं! मैं आपसे विनती करता हूं। मुझे यहाँ से ले चलिये।"

मैंने सिल्विया से पूछा:—"इसके बारे में तुम्हें और कुछ कहना है?"

वह फिर उसे गन्दी गन्दी गालियाँ देने लगी और उन्हीं बातों को दोहराने लगी जिन्हें वह पहले कह चुकी थी।

मैंने कहा:—"लेकिन जैक्सन मोनार्ड अपने को फोर्थ इण्टरनेशनल का सदस्य बतलाता है।"

सिल्विया—"यह भी झूठ है? वह फोर्थ इण्टरनेशनल के किसी भी सदस्य को नहीं जानता। उसने ट्राटस्की के प्रशंसक होने का फेरब किया। यह भी उनके साथ दगाबाजी करने के लिये था।

मैंने कहा:—"एक बात और पूछना है। इसके साथ रहते हुए तुमने इसके बारे में क्या मत कायम किया था? तुम्हारे लिये जिस प्रेम की यह चर्चा करता है, क्या वह सच्चा था?"

सिल्विया—नहीं। यह व्यक्ति प्रेम, दोस्ती, सब कुछ में दगाबाज है। अब मेरी समझ में आया कि मैंने एक कमीना आदमी का विश्वास किया और उसके नीच कर्म का साधन बन गई।"

और उसने जैक्सन के मुँह पर थूक देना चाहा। हमलोग उसे वहाँ से ले चले। सिल्विया चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थीः—"वह कमीना है! नारकी कुत्ता है!!"

इस बातचीत के सिलसिले में एक नये रहस्य का उद्घाटन हुआ। जैक्सन मोर्नार्ड ने अपने बयान में कहा था कि उसकी मातृ भाषा फ्रेंच है, वह अंग्रेजी अच्छी तरह जानता है, लेकिन स्पेन की भाषा बहुत कम। उसने स्पेन की भाषा का कभी प्रयोग भी नहीं किया था। लेकिन इस अवसर पर उसका नाटकीय ढंग असफल रहा। मैंने देखा कि वह स्पेन की भाषा अच्छी तरह जानता है।

१०—जैक्सन से जिरह

ता०२३ और २८ अगस्त की रात को मैंने जैक्सन मोरनार्ड से लगातार जिरह की। उसे जरा भी चैन नहीं लेने दिया। सिल्विया से उसका सामना कराने के बाद मुझे यह स्पष्ट हो गया कि उसके पहले के सभी बयान केवल झूठ का ताना-बाना है। अब मुझे उससे ही उसके बयानों को कटवाना था। इसी उद्देश्य से मैंने उससे दोबारा जिरह की थी।

मैंने बहुत ही कड़ा रुख अख्तियार किया। धमकी देते हुए मैंने उससे कहाः—"यही आखिरी मौका मैं तुम्हे दे रहा हू। सारी बातें सच सच कह दो। वह तुम्हारे ही हक मे अच्छा होगा। ट्राट्स्की की हत्या ने ससार भर में इतनी जबर्दस्त हलचल पैदा कर दी है कि सभी अखबारों के प्रथम पृष्ठ उसी समाचार से भरे रहते हैं। युद्ध के समाचार को उसके सामने गौण स्थान दिया जा रहा है। संसार भर की दृष्टि मैक्सिको की सरकार पर लगी है। लोगों का विश्वास है कि इस घटना पर वह पूरा प्रकाश डाल सकेगी। आत्म सम्मान, अपने देश की प्रतिष्ठा और मर्यादा तथा न्याय के लिये सही सही बातें जानने के लिये मैक्सिको की सरकार ने हर तरह के उपायों से काम लेने का निश्चय किया है। तुम्हीं सारी बातें छिपा कर बैठे हो और हमलोगों ने निश्चय कर लिया है कि तुमसे यह कबूल करवा ही लेंगे चाहे इसके लिये तुम्हारे साथ जो भी बर्ताव करना पड़े, अन्यथा हमारी सरकार की प्रतिष्ठा में धब्बा लग जायगा। अबतक तो हमलोगों ने तुम्हारे साथ भद्रता का व्यवहार किया है, लेकिन हमलोगों को दुख के साथ अपना रुख बदलना पड़ेगा।"

वह ध्यान से मेरी बातें सुनता रहा। उसकी आंखें मेरे चेहरे पर गड़ी थीं। मैंने देखा कि उसे भयंकर संघर्ष का सामना करना पड़रहा है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका मोकाबला करने के लिये वह अपनी सारी शक्ति को बटोर रहा है।

मैंने कहा:—"अभी तक तुमने जो कुछ कहा है सब बनावटी बातें हैं। इसमें सचाई का लवलेश भी नहीं है। न तो हमी लोग यह मानने के लिये तैयार हैं और न दुनिया ही इस बात पर विश्वास कर सकती है कि तुमने बड़े सोच विचार के बाद ट्राटस्की की हत्या की बात ठानी। वह भी महज इस कारण कि राजनीतिक नेता के रूप में उनसे तुम्हें निराशा हुई यद्यपि उन्होंने तुम्हें किसी तरह की क्षति नहीं पहुंचायी थी। इसके अलावा तुमने विरोधी बयान दिये हैं। पहले तो तुमने कहा कि ट्राटस्की ने तुम्हारा जीवन बर्बाद कर दिया क्योंकि उसने नकली नाम से फ्रांस से तुम्हें यहां आने का आदेश दिया। लेकिन अपने पत्र तुमने लिखा है कि ट्राटस्की से बातचीत होने के बाद तुम्हें उनसे बड़ी निराशा हुई और तुम्हारी आँख का परदा हट गया। इसलिए तुमने उनकी हत्या की ठानी। दोनों में कितना घोर विरोध है। आज तक तो एक भी प्रमाण ऐसा नहीं मिल सका जिससे साबित हो कि इस तरह के उद्देश्य से किसी ने इस तरह का भीषण काण्ड किया हो। हत्यायें की जाती हैं लेकिन दूसरे कारणों से न कि इस कारण से जो तुमने बतलाया है? तुम्हारा तर्क बेबुनियाद है और साधारण व्यक्ति भी उसे नहीं मान सकता। मैं तुम्हें अन्तिम मौका दे रहा हूँ कि सब कुछ सच सच कह दो। किसकी प्रेरणा से तुमने यह जघन्य काम किया? किसने तुम्हें यहाँ भेजा? किसने तुम्हारी मदद की। यह अपराध करने के लिये किन लोगों ने तुम्हें साधन प्रस्तुत किया?"

उसके रुख से मैंने स्पष्ट देखा कि मेरी धमकी का उस पर कोई असर नहीं

पड़ा। उसने धैर्य तथा दृढ़ता से उत्तर दिया:—"मैं आपकी बातें पूरी तरह समझ गया। आप मुझ से जो उत्तर चाहते है वह मैं देने में असमर्थ हूं क्योंकि मैं खुद कुछ नहीं जानता! मैं इतना ही जानता हूं कि मैंने भीषण अपराध किया है और मुझे उसका फल भोगना पड़ेगा। आप मुझे टुकड़े टुकड़े काट डालें लेकिन इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता।"

मैंने पूछा—तुमने किस उद्देश्य से यह अपराध किया?

उसने अपना वही पुराना बयान दोहरा दिया। उसने कहा.—"इस व्यक्ति ने नकली पासपोर्ट पर मुझे पेरिस से यहाँ बुलाया क्योंकि अपने काम के लिये यह मुझे आतंकवादी बनाना चाहता था। उसने मुझे धोखा दिया और मुझे घोर संकट में डाल दिया। मेरे सामने दो ही चारा रह गया था या तो मैं इसकी बात मानता या देशद्रोही होने का दण्ड भुगतता। जिस दिन मैं यहां आने के लिये राजी हुआ उसी दिन मेरी जिन्दगी बर्बाद हो गई। मैंने यह महसूस किया लेकिन तब तक बहुत देर हो गई थी।"

मैंने पूछा:—"क्या दुनिया तुम्हारे इस आचरण की सराहना करेगी?"

जैक्सन—"कदापि नहीं। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि वे मेरे घृणा के भाव को समझें जो उस तरह के व्यवहार के कारण मेरे हृदय में उदय हुआ था।"

मैं—"क्या तुममें उतनी बुद्धि नहीं थी कि तुम उससे अलग हो सकते थे?"

जैक्सन—"गैरमुमकिन था। सप्ताह भर मेरी हालत नितान्त दयनीय थी। मेरे दिमाग में केवल मात्र वही बात चक्कर काट रही थी। मै उसमें इस तरह डूब गया था कि मैं सिल्विया तक से बात नहीं कर सका। उसने चिढ़ कर यहां तक कह दिया था कि मैं आदमी से नहीं बल्कि दीवार से बातें कह रही हूं।"

मैं—ता० २४ मई के आक्रमण के बाद ही तुम यहाँ से भाग गये क्योंकि तुम्हें भय था कि तुम गिरफ्तार कर लिये जावोगे ?"

जैक्सन—"नहीं ?"

मैं—"न्यू यार्क तुम जी० पी० यू० के एजेण्टों के पास गये ताकि दूसरे आक्रमण के लिये वे लोग तुम्हें आवश्यक हिदायत और सामग्री दे सकें।"

जैक्सन—"मैं तो सिल्विया से मिलने गया था क्योंकि उसके बिना मैं रह नहीं सकता था।"

मैं—"न्यू यार्क में तुम दो तीन सप्ताह रहे। वहाँ के जी० पी० यू० के एजेण्टों से सलाह मसविरा कर तुम यहां आये और यहाँ के जी० पी० यू० के एजेण्टों से मिले। पर तुम ट्राटस्की के यहां लोगों से मिलने नहीं गये। बाद को तुमने उन लोगों से कह दिया कि तुम बीमार थे।"

जैक्सन—"मैं सचमुच बीमार था। मुझे दस्त की बीमारी हो गई थी।"

मैं—"तुमने किस डाक्टर से चिकित्सा कराई थी ?"

जैक्सन—"मुझे साधारणतः डाक्टर की जरूरत नहीं पड़ती। जिगर का रोग मुझे बचपन से ही है और मैं उसका उपचार जानता हूँ। मैंने डाक्टरों को भी कभी एक मत नहीं पाया।"

मैं—तुम्हारी बातें इतमीनान के योग्य नहीं है। तुम सच नहीं बोल रहे हो। खैर, तुमने यह पिस्तौल कितने में खरीदी थी ?

जैक्सन—मुझे ठीक-ठीक दाम याद नहीं है। मैंने वरटोलो को इसके बदले में कुछ नगद रुपया और अपना टाइपराइटर दिया था।"

मैं—"किस कम्पनी का टाइपराइटर था ?"

जैक्सन—"रेमिगंटन कम्पनी का।"

मैं—तुमने उसे कितने में खरीदा था ?"

जैक्सन—"यह भी मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है।"

मैं—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह वरटोलो हथियार बेचता है?

जैक्सन—मैं यह कुछ नहीं जानता था। इस तरह के लोग दुनिया में हर कोने में पाये जाते हैं। मैं यह भी निश्चय पूर्वक नहीं कह सकता कि वरटोलो ही उसका असली नाम है।

मैं—तुम्हींने कटार भी खरीदी थी?

जैक्सन—हाँ, लगुनीला में।

मैं—क्या तुम मुझे उस दूकान पर ले चल सकते हो?

जैक्सन—मैं उमीद तो यही करता हूं।

मैं—तुमने कब इसे खरीदा था?

जैक्सन—ठीक-ठीक तारीख मुझे याद नहीं है।

मैं—तुम न्यूयार्क कब गये?

जैक्सन—जून के शुरू में।

मैं—जब जी० पी० यू० के एजण्टों ने देखा कि उनका प्रथम आक्रमण सफल नहीं हुआ तो तुम्हें इसलिए न्यूयार्क जाने के लिये राजी किया कि वहाँ जाकर तुम दूसरे आक्रमण की तैयारी करो।

जैक्सन—आप इस परिणाम पर पहुंच सकते हैं लेकिन यह सही नहीं है।

मैं—ट्राटस्की की हत्या के लिये तुमने कौन तारीख निश्चित की थी?

जैक्सन—मैंने कोई तारीख नियत नहीं की थी।

मैं—उनकी हत्या का विचार तुम्हारे मन में कब उठा?

जैक्सन—जिस दिन उन्होंने मुझे अपना कार्यक्रम और उसे काम में लाने का तरीका बतलाया।

मैं—ठीक किस दिन?

जैक्सन—हत्या के दिन से चौदह या पन्द्रह दिन पहले।

इसके बाद उसने अपने उसी बयान को पुनः दोहराया कि ट्राटस्की ने किस तरह मंचूरिया से होकर उसे रूस भेजने की व्यवस्था की थी। उसने कहाः—रूस जाकर मुझे उनके अनुयायियों से मिलकर सेना में विद्रोह पैदा करना था, कारखानों को नष्ट-भ्रष्ट करना था और संभव हो तो रूस के नेताओं की हत्या करनी थी। ट्राटस्की ने अपने कार्यक्रम का सारा ब्योरा मुझे समझा दिया। उनकी बातों से मुझे बड़ी निराशा हुई।"

मैं—और इसी कारण तुमने उनकी हत्या का संकल्प किया?

जैक्सन—ठीक उसी समय यह विचार मेरे मनमें नहीं उठा। मैं सप्ताह भर सारी परिस्थिति पर विचार करता रहा। उसके बाद ही हत्या का विचार मेरे मन में उठा।

मैं—कब?

जैक्सन—सात-आठ दिन बाद।

इससे पहले उसने चौदह पन्द्रह दिन कहा था। इस बार वह अवधि घट कर सात-आठ दिन हो गयी।

मैं—तुमने हत्या करने का निश्चय किस तरह किया?

जैक्सन—मेरे सामने कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं था। मैंने केवल इतना ही सोचा था कि उसका अन्त कर चुकने के बाद अपना भी अन्त कर डालूंगा।

मैं—पर तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?

जैक्सन—क्योंकि मुझे मौका नहीं मिला।

मैं—तुम्हें मौका क्यों नहीं मिला?

जैक्सन—मैंने समझा था कि मेरे प्रहार से वह तुरत मर जायगा।

मैं—तुमने किस तरह प्रहार करना चाहा था ?

जैक्सन—सिरपर अथवा मैं नहीं कह सकता। मैंन अपनी आँखें बन्द कर ली थीं।

मैं—जब तुमने उन्हें मार डालने का ही इरादा किया था तब तुमने कुल्हाड़ी के बदले पिस्तौल से काम क्यों नहीं लिया ?

जैक्सन—क्योंकि मैं उसका प्रयोग जानता था ?

मैं—तुमने भाग जाने की भी संभावना देखी थी ?

जैक्सन—मेरा ऐसा कोई निश्चित इरादा नहीं था। मैं भाग भी जा सकता था और नहीं भी। मेरे मन में दोनों ही बातें थीं।

मैं—तुमने पिस्तौल इसीलिये नहीं इस्तेमाल किया कि उससे आवाज होती और तुम्हें भागने का मौका नहीं मिलता।

जैक्सन—आपका अनुमान सही है। आवाज न होने देने के लिये मैंने पिस्तौल का प्रयोग नहीं किया। लेकिन भागने का मेरा इरादा नहीं था।

मैं—क्या तुम्हें इस बात की आशंका नहीं थी कि ट्राटस्की के आदमी तुम्हें मार डालेंगे ?

जैक्सन—मैं तो यही चाहता था। मैंने तो उनसे बार बार प्रार्थना की कि मुझे मार डालिये।

अपने इस जिरह में उसने यह भी कबूल किया कि खत लिखने के लिये वरटोलो भी उसके साथ जङ्गल में गया था। इसलिये वरटोलो का काम केवल इतना ही नहीं था कि वह उसके टाइपराइटर को अपने पास रखे और खत टाइप हो जाने के बाद पिस्तौल के बदले उसे वह ले ले। इस संबंध में मैं पूरा ब्यौरा जान लेना चाहता था। इसलिये मैंने उससे पूछाः—

"इसके बाद तुम और वरटोलो एक दूसरे से अलग हो गये ?

जैक्सन—खत टाइप हो जाने के बाद हमलोग अलग हो गये और मैंने टाइपराइटर रखने के लिये उसे दे दिया।

अगर बरटोलो से उसकी नयी जानपहचान होती और कवल पिस्तौल खरीदने का काम ही उसने उसके जिम्मे सौंपा होता, जैसा कि उसने अपने बयान में कहा है तो वह बरटोलो के सामने उस तरह का खत कभी भी टाइप नहीं करता। लेकिन जिरह से साफ हो गया कि बरटोलो जंगल में भी उसके साथ था। इससे यह प्रगट होता है कि बरटोलो सब कुछ जानता था। मालूम होता है कि यही जी० पी० यू० का वह एजेण्ट है जिसने इसके साथ आक्रमण की सारी तैयारी की थी। लेकिन उसका असली परिचय क्या है और संप्रति वह कहाँ है? इस संबंध में जैक्सन के पेट से एक शब्द भी निकालना संभव नहीं हुआ क्योंकि यही तो उसका भेद था।

मैंने पूछा—तुमने टाइपराइटर कब खरीदा?

जैक्सन—जब सिल्विया न्यूयार्क के लिये रवाना हो गई उसके बाद।

मैं—तब सिल्विया ने उसे नहीं देखा था?

जैक्सन—नहीं।

मैं—देखो जैक्सन! किसी न किस दिन तो बरटोलो पुलिस के पंजे में आवेगा ही। उस दिन तुम्हें उसका सामना करना पड़ेगा?

जैक्सन—आप मुझसे क्या कहलाना चाहते हैं?

मैं—तुमने खुद यह खत नहीं लिखा था। तुम्हारे लिये दूसरे ने लिखा था।

जैक्सन—मेरे लिये?

मैं—तुम यह क्यों नहीं बतला देते कि यह खत किसने लिखा था।

जैक्सन—मैंने! उस खत को मैंने ही लिखा था।

बरसाती के बारे में भी उसका बयान विरोधी था। उसने अपने पहले बयान में कहा था कि उसने पानी से बचने के लिये बरसाती खरीदी थी। लेकिन वह कुल्हाड़ी और कटार उसी बरसाती में छिपाकर ले गया था। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि इसी उद्देश्य से उसने बरसाती खरीदी थी। एक बात और भी स्मरण रखने की है। उसने बरसाती का इस्तमाल केवल दो बार ही किया था। एक बार हत्या के दिन और एक ही बार उससे पहले। इसके बाद वह उत्तर देने में टाल मटोल करने लगा। मेरे प्रश्नो के उत्तर में कह देता:— मुझे याद नहीं, मैं नहीं जानता। मुझे कुछ नहीं कहना है।" इस पर मैंने उससे कहा भी कि तुम्हारी स्मरण-शक्ति कमजोर है इसी से तुम जी० पी० यू० के उस एजेण्ट का नाम भूल गये।

इसके बाद मैंने उससे पूछा:—ट्राटस्की के यहाँ तुम कितने दिन पहले गये थे ?

जैक्सन—मैं पिछले शनिवार को गया था।

मैं—जब तुमने उनकी हत्या का इरादा पहले से ही कर लिया था तब तुमने शनीचर को क्या किया ?

जैक्सन—मुझे ठीक ठीक याद नहीं है। ओटो तथा अन्य लोगों से मिल कर चला आया ?

उसके बाद उसने हत्या का विस्तृत वर्णन किया। उसने कबूल किया कि उसने अपना लेख ट्राटस्की को पढ़ने के लिये दिया ताकि उनका ध्यान उसकी ओर से हट जाय।

मैं—क्या तुम्हारे मन में कभी यह ख्याल नहीं उठा कि ट्राटस्की बूढ़ा आदमी है। वह अपनी रक्षा नहीं कर सकेंगे। ऐसे आदमी पर आक्रमण कर तुम बहुत बड़ी कायरता का परिचय दे रहे हो ?

जैक्सन—मेरे मन में इस तरह की कोई बात नहीं आई।

मैं—प्रहार के बाद ट्राटस्की ने क्या किया?

जैक्सन—वह इस तरह उछला मानों पागल हो गया हो। उसकी उस समय की चीख मैं कभी भूल नहीं सकता।

मेरी धमकी के बावजूद भी वह अपनी ही बातों पर अड़ा रहा। उसका मस्तिष्क तेजी से काम करता था। यह स्पष्ट था कि उसने अपनी सफाई बड़ी सावधानी से तैयार की थी। तोभी बहुत-सी बातें उससे मैं कहला सका जो परस्पर विरोधी थीं।

उसकी सबसे विरोधी बात ट्राटस्की के साथ उसके संबंध के बारे में थी? उसने अपने पहले बयान में कहा था कि फोर्थ इण्टरनेशनल के प्रमुख लोगों ने मुझे पेरिस से मक्सिको इसलिये भेजा था कि मैं यहाँ आकर ट्राटस्की से मिलूँ। दूसरी बार उसने ट्राटस्की पर यह अभियोग लगाया कि नकली पासपोर्ट पर ट्राटस्की ने उसे यहाँ बुलाया और इस तरह उसकी जिन्दगी बर्बाद कर दी। उसका यह भी कहना विश्वास के योग्य नहीं था कि ट्राटस्की उसे सिल्विया से अलग करना चाहता था क्योंकि सिल्विया के कारण ही उसका ट्राटस्की से परिचय हुआ और वह ट्राटस्की के दल की प्रमुख सदस्या थी।

टाइपराइटर का किस्सा कम दिलचस्प नहीं था? उसे किसी ने कभी देखा नहीं था। यह भी कयास से बाहर की बात है कि जो खत उसके पास पाया गया था केवल उसी को टाइप करने के लिये उसने टाइपराइटर खरीदा हो। टाइपराइटर को वह अपने होटल में क्यों नहीं ले गया? उसका यह कहना कि वह सिल्विया से इसके बारे में क्या कहेगा, कोई महत्व नहीं रखता। जब वह यह जानती थी कि जैक्सन पत्रकार और व्यवसायी है और उसके पास काफी रुपये हैं तब उसके टाइपराइटर खरीदने पर सिल्विया को विस्मय क्यों होता?

खत के अक्षरों के देखने से प्रगट होता था कि खत फ्रांस के टाइपराइटर पर टाइप किया गया था। उसने इसे पाइटी में कभी नहीं खरीदा था और न वारटोलो ने ही उसके लिये खरीद कर ला दिया था।

बात साफ थी। इस तरह का कोई टाइपराइटर इसके पास नहीं था। यह खत न्यूयार्क में टाइप किया गया था और वहाँ से यह अपने साथ इसे ले आया था। ता० २४ मई के आक्रमण की असफलता के बाद जी० पी० यू० के एजेन्ट उस फ्रेंच यहूदी ने इससे काम लेने का निश्चय किया और इसमें उसे सफलता मिली।

ता० ३० अगस्त को मजिस्ट्रेट की आज्ञा से जैक्सन को अम्बुलेंस पर चढ़ाकर ट्राटस्की के मकान पर लाया गया। गैलिएडो की देखरेख में पुलिस के चार अफसर उसे घेर कर खड़े थे। मकान में भी वर्दी में अनेक पुलिस मौजूद थे। इतनी सावधानी हत्यारे के प्राणों की रक्षा के लिए की गई थी। ट्राटस्की के मकान में जितने हथियार थे सभी एक कमरे में जमा कर दिये थे और वहां पुलिस का पहरा बैठा दिया गया था।

इन दुर्घटनाओं के बाद ट्राटस्की के मकान में रक्षा का और भी नया आयोजन कर दिया गया था लेकिन इन आयोजनों को देखकर जी० पी० यू० के एजेण्टों ने केवल हँस दिया होगा।

सबसे पहले हमलोगों ने उस रजिस्टर की जाँच की जिसमें आने-जाने वालों का नाम, पता, तारीख प्रवेश और जाने का समय तथा पहरे पर के सन्तरी का दस्तखत दर्ज रहता था। सिल्विया का नाम केवल एक बार ता० १६ मार्च को रात ८. ३५ पर दर्ज था। जैक्सन मोर्नार्ड बारह बार आया था। पहली बार ता० २८ मई को अन्तिम बार ता० २० अगस्त को ठीक ४-३० बजे। ता० १२ जून को भी वह १०-३० से १०-४० तक यहाँ था। इसी दिन यह न्यूयार्क के

लिये रवाना हुआ था। इसके बाद वह २९ जुलाई को ट्राटस्की के यहाँ गया था। अर्थात् न्यूयार्क से ठीक-ठीक हिदायत लेकर तीन सप्ताह में वापस आया था। साधारणतः वह चन्द मिनट ही वहां ठहरता था। सबसे अधिक देर तक वह ता० २९ जुलाई को ठहरा था। वह २-४० पर आया था और ३.५० पर गया था अर्थात् उस दिन वह वहाँ एक घंटा दस मिनट तक था। ता० ८ अगस्त को वह ४५ मिनट तक ठहरा था। वह ५.५५ पर आया था और ६.४० पर गया था। दुर्घटना के दिन को छोड़कर वह कुल मिलाकर चार घंटा बीस मिनट ट्राटस्की के मकान पर था।

समय का उल्लेख खास गरज से किया गया है। ट्राटस्की को उससे मिलने का बहुत ही कम अवसर मिला था। इतने कम समय में किसी के साथ इतनी घनिष्ठता नहीं हो सकती कि उस तरह का नाजुक काम उसके जिम्मे सौंपा जाय जिसे अभियोग के रूप में उसने ट्राटस्की के खिलाफ अपने बयान में लिखा था।

इसके साथ ही हमलोगों को इस बात का भी सबूत मिल सका कि ट्राटस्की से उसकी मुलाकात केवल तीन बार हो सकी थी। यह मुलाकात भी असाधारण हालतों में हुई थी। जैक्सन अल्फ्रेड रोसमर से मिलने आया। फाटक पर ही ट्राटस्की से उसकी भेंट हो गई लेकिन उन्होंने इसे भीतर नहीं बुलाया। एक दिन ट्राटस्की की पत्नी बाहर जा रही थीं। रास्ते में ही वह उनसे बातें करने लगा। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा। इसलिये उसे लेकर वह भीतर चली गईं। एक दिन जैक्सन रोसमर से बातें कर रहा था कि ट्राटस्की वहाँ आ गये।

इस रजिस्टर की बात न तो जैक्सन ही जानता था और न जी० पी० यू० के एजेण्ट ही। इस रजिस्टर से जो बातें मालूम हो सकीं उनके सामने जैक्सन के बयान सही नहीं ठहरते थे।

इसके बाद अध्ययन-कक्ष का सील तोड़ा गया क्योंकि आक्रमणके बाद पुलिस ने उस कमरे में ताला बन्द कर मुहर लगा दी थी। वहाँ की सारी चीजें उसी प्रकार पड़ी थीं। टेबुल पर ट्राटस्की का चश्मा पड़ा था जो वे देखने के लिये लगाते थे। दूसरी तरफ उनका पढ़नेवाला चश्मा था जिसका बायाँ शीशा टूटा हुआ था। इसी चश्मे को लगाकर वे जैक्सन का लेख पढ़ रहे थे जब उसने उनपर प्रहार किया था। उनकी कुर्सी पर वह किताब पड़ी थी जिसे वे उससे पहले पढ़ रहे थे। कमरे में उनके दोनों रिवाल्वर भी मिले जिनमें गोलियां भरी थीं।

मजिस्ट्रेट के हुक्म से हत्यारा उस कमरे में लाया गया। वह थरथर कांप रहा था और उसकी आँखें नीचे की ओर झुकी थीं। वहाँ का दृश्य देखते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह बेदम होकर कुर्सी पर बैठ गया। उसने नीचे की ओर देखा तो उसके पैर फर्श पर जमे खून के थक्कों पर थे। इससे उसका कलेजा काँप गया और उसने दोनों हथेलियों से अपना सिर पकड़ लिया और वह ट्राटस्की के टेबुल पर झुक गया।

इसके बाद मैजिस्ट्रेट ने हुक्म दया कि सारी घटना जैक्सन अभिनय करके दिखलावे। इसके लिये मेजर गैलिएडो ट्राटस्की के स्थान पर जाकर बैठ गये। तब जैक्सन ने कहाः—"जब मैंने प्रहार किया उस वक्त वे मेरा लेख पढ़ रहे थे। पहला पृष्ठ समाप्त कर उन्होंने दूसरा पृष्ठ उलटा ही था कि मैं एक कदम पीछे हट गया और मुड़कर मैंने बरसाती में से कुल्हाड़ी निकाली जिसे मैंने उनके पीछे टेबुल पर रख दिया था। मैंने कुल्हाड़ी को जोर से पकड़ा और इस तरह उनके सिर पर दे मारा ......उसने अखबार को लपेट कर गैलिएडो के सिर पर ठीक उसी तरह पटक दिया।

इसी समय कोई पहुंच गया। शायद वह राबिन्स था। मैं कुछ देख नहीं सका। मेरे दोनों पैर जकड़ गये थे। किसी ने मुझपर प्रहार किया और मैं बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।"

उसी दिन तीसरे पहर मैजिस्ट्रेट की आज्ञा से जैक्सन से दो बार जिरह की गई। पहली बार सरकारी वकील ने उससे जिरह की और दूसरी बार ट्राटस्की की पत्नी के वकील ने।

सरकारी वकील ने पूछाः—बीस अगस्त को अमेरीका के राजदूत से तुम्हें क्या काम था?

जैक्सन—कोई काम नहीं।

सरकारी वकील—तब तुमने सिल्विया से यह बात क्यों कही?

जैक्सन—असली बात छिपाने के लिये मैंने उससे झूठ कहा। मुझे रिवाल्वर लेने बारटोलो के यहाँ जाना था।

सरकारी वकील—क्या तुम स्टेचल या त्रिटिलमैन को जानते हो?

जैक्सन—नहीं।

सरकारी वकील—क्या तुम जानते हो कि वे लोग स्टालिन के बहुत बड़े एजेण्ट हैं?

जैक्सन—नहीं।

सरकारी वकील—जब तुम स्पेन में थे तब तुम स्पेन की भाषा बोलते थे?

जैक्सन—वह भाषा जितना भी जानता हूं, मैंने उसे वहीं सीखी।

सरकारी वकील—इस काण्ड से कई दिन पहले यानी ता० १७ अगस्त को तुम अपने लेख का मसविदा लेकर ट्राटस्की के पास गये थे?

जैक्सन—जी हाँ, उन्होंने दो एक संशोधन भी किया था। उस समय केवल हमी दोनों व्यक्ति वहां थे।

सरकारी वकील—उस दिन तुमने उनकी हत्या क्यों नहीं की। अध्ययन-कक्ष की सारी चीजें उसी तरह व्यवस्थित थीं ?

जैक्सन—सब कुछ ठीक इसी तरह। लेकिन उस दिन मेरे पास हथियार नहीं था।

सरकारी वकील—हत्या के दिन भी सारी बातें उसी तरह हुईं। उस दिन भी ट्राटस्की इसी जगह बैठे, तुम उसी जगह खड़े हुए और तुमने बरसाती वहीं रखी। इसका अर्थ यह हुआ कि ता० १७ अगस्त को तुम आजमाइश कर देख लेना चाहते थे कि तुम्हारे काम में कहीं बाधा पड़ने की संभावना तो नहीं है। सब कुछ सही सही उतरता है ?

जैक्सन—ता० १७ को जो बातें जिस तरह से हुईं ता० २० को भी उसी तरह हुईं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ता० १७ को मैं अजमाइश करने आया था।

इसके बाद ट्राटस्की की पत्नी के वकील ने जिरह शुरू की।

वकील—तुम्हारा पासपोर्ट तथा अन्य कागजात कहां है ?

जैक्सन—पहले ही कह चुका हूँ कि ता० २० अगस्त को ट्राटस्की के यहां आते समय मैंने रास्ते में ही सारे कागज पत्र जला दिये। मैंने केवल यह पत्र रख लिया था जो मेरे पास से बरामद हुआ। मै सब कुछ सही सही कह रहा हूं। मेरे पासपोर्ट तथा अन्य कागजातों में मेरी बात की पुष्टि हो जाती।

वकील—तब तुमने उन्हें जला क्यों दिया ?

जैक्सन—मुझे उनसे कोई प्रयोजन नहीं था। इसलिए मैं उन्हें नष्ट कर देना चाहता था।

वकील—फोर्थ इण्टरनेशनल के जिस सदस्य ने तुम्हें ट्राटस्की के पास मैक्सिको जाने के लिये कहा था उससे तुम्हारी कब भेंट हुई थी ?

जैक्सन—सन १९३९ के जुलाई के अन्त में या अगस्त के आरंभ में।

वकील—किसने तुम्हारा परिचय उससे कराया था ?

जैक्सन—शायद फोर्थ इण्टरनेशनल क दो यूनानी सदस्यों ने ।

वकील—क्या उन्होंने अपना नाम तुम्हें बतलाया था ।

जैक्सन—नहीं ।

वकील—तब किस तरह अपना परिचय उन्होंने तुम्हें दिया था ।

जैक्सन—यह कह कर कि वे फोर्थ इण्टरनेशनल के सदस्य हैं ?

वकील—क्या तुम फोर्थ इण्टरनेशल की फ्रांसीसी शाखा के सदस्य थे ?

जैक्सन—नहीं, मै केवल सहायक था ।

वकील—क्या तुम उस सदस्य की राष्ट्रीयता का कोई परिचय दे सकते हो ?

जैक्सन—वे रोमानिया के रहने वाले प्रतीत होते थे ।

वकील—तुम उनसे कितनी बार मिले थे ?

जैक्सन—पन्द्रह बीस बार ।

वकील—अन्तिम बार कब तुमने भेंट की थी ?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—कमेटी के इस सदस्य ने तुम्हें कितना रुपया दिया था ?

जैक्सन—दो सौ डालर ।

वकील—फ्रांसीसी या अमेरिकन सिक्का में ।

जैक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—क्या तुमने उस सदस्य से पूछा था कि उतने से तुम्हारा सारा राह खर्च चल जायगा ?

जैक्सन—नहीं ।

वकील—क्या तुम जानते थे कि मैक्सिको तक पहुंचने में कितना खर्च पड़ेगा ।

जैक्सन—नहीं ।

वकील—तुमने अपने बयान में कहा है कि फोर्थ इण्टरनेशनल के इस सदस्य ने तुम्हें हिदायत दी थी कि मैक्सिको पहुंचकर तुम ट्राटस्की से मिलने की चेष्टा मत करना।

जेक्सन—हाँ।

वकील—इसीलिये तुम सितंबर १९३९ से मई १९४० तक उनसे नहीं मिले?

जैक्सन—हाँ।

वकील—तुमने यह नहीं सोचा कि इतने दिनों के लिये ये दो सौ डालर पर्याप्त नहीं थे?

जैक्सन—रुपयों की मैं कभी चिन्ता नहीं करता।

वकील—क्या फोर्थ इण्टरनेशनल के इस सदस्य ने तुम्हें ट्राटस्की के नाम कोई परिचय पत्र भी दिया था?

जैक्सन—नहीं

वकील—बिना परिचय पत्र के तुम उनसे कैसे मिल सकते थे और वे कैसे तुम्हारा विश्वास करते?

जैक्सन—इसकी मुझे चिन्ता नहीं थी। यह उसका काम था जिसने मुझे भेजा था।

वकील—ट्राटस्की के साथ तुम क्या काम कर सकते थे?

जैक्सन—अनुवाद या नकल।

वकील—बिना परिचय पत्र के तुम्हे यहाँ भेजना कुछ विचित्र सा नहीं प्रतीत हुआ?

जैक्सन—नहीं।

वकील—यहाँ आने और ट्राटस्की से भेंट करने के बीच की अवधि में तुम क्या करते रहे ?

जैक्सन—कुछ नहीं।

वकील—तुमने कोई काम नहीं हाथ में ले लिया था ?

जैक्सन—नहीं।

वकील—तुम यहाँ के व्यापारियों से मिलने गये थे ?

जैक्सन—गया था।

वकील—क्यों ?

जैक्सन—इसी तरह की हिदायत थी।

वकील—ट्राटस्की के किसी सेक्रेटरी से तुम्हारा परिचय है ?

जैक्सन—हाँ।

वकील—क्या तुमने उनसे पूछा था कि तुम्हारे बारे में उन्हें भी किसी तरह की हिदायत मिली है ?

जैक्सन—नहीं।

वकील—यह तो तुम जानते थे कि तुम्हारा पासपोर्ट नकली है ?

जैक्सन—हाँ।

वकील—लेकिन उस पासपाट में जो कुछ दर्ज था वह तुम्हें मालूम नहीं था ?

जैक्सन—मैंने कभी देखा तक नहीं था।

वकील—सीमा पर पूछ-ताछ की चिन्ता तुम्हें नहीं थी ?

जैक्सन—नहीं।

वकील—यह बात विश्वास करने लायक नहीं है कि तुम्हें यूरोप में पासपोर्ट मिला और यहाँ तक तुमने उसे देखा तक नहीं !

जैक्सन—आपके विश्वास करने या न करने की मुझे परवा नहीं है।

वकील—पहले पहल तुम ट्राटस्की से कब मिले थे?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है।

वकील—क्या उस दिन तो नहीं जिस दिन तुम रोसमर को बेराक्रुज ले जाने के लिये ट्राटस्की के मकान पर गये थे?

जैक्सन—मुझे याद नहीं।

वकील—रोसमर ने तुमसे बेराक्रुज ले जाने के लिये कहा था या तुमने ही उनसे यह प्रस्ताव किया था?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है।

वकील—रोसमर से मिलने के लिये आने से पहले तुम्हारा ट्राटस्की से परिचय था?

जैक्सन—मुझे याद नहीं।

वकील—तुम बतला सकते हो कि तुमने ट्राटस्की से पहले पहल किस समय भेंट की थी?

जैक्सन—याद नहीं है।

वकील—ता० २४ के आक्रमण से पहले या बाद?

जैक्सन—बाद को, मई के अन्त में।

वकील—ट्राटस्की से तुम्हारा परिचय किसने कराया?

जैक्सन—अल्फ्रेड रोसमर ने।

वकील—रोसमर के सामने तुमने ट्राटस्की से कभी बातचीत की थी?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है।

वकील—क्या तुम्हें याद है कि दूसरी बार तुम ट्राटस्की से कब मिले थे?

जैक्सन—मुझे याद नहीं ।

वकील—इस बार की बातचीत का विषय याद है क्या ?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—ट्राटस्की से कितनी बार मिलने और बातचीत करने के बाद तुम्हारी आँख का परदा उठा ?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—क्या तुमने इस बातकी चर्चा कभी किसी दूसरे से भी की थी ?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—क्या यह बात सच है कि तुमने सिल्विया तक से इस बात की चर्चा नहीं की की ?

जेक्सन—मुझे याद नहीं है ।

वकील—ट्राटस्की से तुम्हारी जो बातचीत हुई थी, उनमें से एक का भी परिणाम तुम बतला सकते हो ?

जैक्सन—मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि इन बातों से मेरी आँख पर से अंधकार का परदा हट गया और मैंने ट्राटस्की के असली रूप को देखा ।

वकील—क्या इन्हीं बातचीतों के सिलसिले में ट्राटस्की ने स्टालिन की हत्या का प्रस्ताव तुमसे किया था ?

जैक्सन—ट्राटस्की ने स्टालिन की हत्या का प्रस्ताव मुझ से कभी नहीं किया था ?

वकील—तब क्या प्रस्ताव उन्होंने तुम्हारे सामने रखा था ?

जैक्सन—मुझे ठीक ठीक याद नहीं है ।

वकील—शायद उन्होंने रूसमें जाकर तोड़-फोड़ करने का प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखा था । उसीसे तुम्हारी आँख का परदा हटा ?

जैक्सन—हाँ।

वकील–किस तरह के तोड़ फोड़ का प्रस्ताव उन्होंने तुम्हारे सामने रखा था?

जैक्सन—इसका उत्तर मैं अपने पहले बयान में दे चुका हूँ।

वकील—क्या तुम उसे ही दोहरा नहीं सकते?

जैक्सन—नहीं।

वकील—मेरा कहना है कि ट्राटस्की ने स्टालिन की हत्या का प्रस्ताव तुमसे किया था। इसका उत्तर 'हां' या 'नहीं' में दे सकते हो?

जैक्सन—पहले बयान में मैं इन सभी प्रश्नों का उत्तर दे चुका हूँ।

वकील—कितनी बार की मुलाकात के बाद ट्राटस्की नें रूस में जाकर कारखानों में तोड़फोड़ करने का प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखा था?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है।

वकील—उनके इस प्रस्ताव पर अमल करने के लिये तुम्हें रूस में कब जाना था?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है।

वकील—रूस पहुंच कर तुम्हें सब से पहले क्या करना था?

जैक्सन—मुझे याद नहीं है। ट्राटस्की ने जो प्रस्ताव मेरे सामने रखा था उसका वर्णन मैं कर चुका हूँ। उन्हें दोहराना व्यर्थ होगा।

वकील—यदि मैं यह साबित कर दूँ कि तुमने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है तब क्या तुम इसका उत्तर दे सकते हो?

जैक्सन—मैं तब भी इस प्रश्न का उत्तर नही दूँगा क्योंकि आप यह साबित करनां चाहते हैं कि मेरे बयान परस्पर विरोधी हैं?

इस पर मजिस्ट्रेट ने जैक्सन से कहाः—

"अगर तुम्हारा बयान सही है तो तुम्हें भयभीत होने का कोई कारण मैं नहीं देखता।

जैक्सन—मुझे किसी बात का भय नहीं है··· ; असल बात यह है कि ट्राटस्की ने बिस्तार से मुझ से कुछ भी नहीं कहा था। मुझ से जो बातचीत हुई थी उसका निष्कर्ष मैंने यही निकाला था। ट्राटस्की ने सिर्फ इतना ही कहा था कि रूस में जाकर मुझे तोड़फोड़ का काम करना होगा। इससे अधिक उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा था। इसलिये मैं व्यौरेवार कोई बात नहीं कह सकता।

इन बातों से स्पष्ट हो गया कि वह सरासर झूठ बोल रहा था। इसमें लेश-मात्र भी सन्देह नहीं हो सकता था। लेकिन जिन बातों को वह छिपा रहा था उनकी असलियत का पता हमलोगों को नहीं लग सका। हम लोग अंधेरे में ही पड़े रहे।

११—जैक्सन की शिनाख्त

मेरे कहने से बेल्जियम के मैक्सिको-स्थित राजदूत श्री डबल्यू लोरिडन और उनके सहकारी श्री वस्टालिटी ने ता० ३१ अगस्त को जैक्सन:मोर्नार्ड से अचानक भेंट की। अपनी बातचीत की रिपोर्ट उन्होंने मैक्सिको सरकार के दफ्तर में ता० २ सितम्बर को भेज दी। उसका कुछ अंश यहां उधृत किया जाता है।

"ता० ३१ अगस्त को हम लोग जैक्सन-मोर्नार्ड से मिले। बातचीत से मालूम हुआ कि वह बेल्जियम का रहने वाला नहीं है। उसे बेल्जियम देश तथा वहाँ की भाषा का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है। इस विषय में उसका सारा बयान गलत है।

(१) "उसने अपने बयान में अपने को बेल्जियम के किसी मंत्री का पुत्र बतलाया है और तेहरान के बेल्जियम के दूतावास में अपना जन्म बतलाया है। मोर्नार्ड नाम का कोई भी बेल्जियम का राजदूत तेहरान में कभी नहीं था। १६०४ से १६०८ तक श्री मार्क टी सर स्टेवेन्स वहाँ इस पद पर थे। उनका स्थान १६०८ में श्री हवेर्निथ ने लिया!

"मैंने पूछा कि तुम्हारे पिता और किस पद पर थे तो उसका उत्तर उसने दिया कि वह नहीं जानता। यह विचित्र बात प्रतीत हुई।

(२) उसने अपने बयान में यह कहा था कि उसका भाई राजदूत का सेक्रेटरी था। लेकिन मेरे प्रश्न के उत्तर में उसने कहा कि वह नहीं जानता। यहाँ यह कह देना अनुचित नहीं होगा कि बेल्जियम में इस तरह का कोई पद नहीं है। लेकिन जैक्सन कहता है कि उसका भाई संप्रति ब्रुसेल्स में है। पर वह किसी पद पर नहीं है।

(३) उसने अपने बयान में कहा है कि वह ब्रुसेल्स विश्वविद्यालय में विज्ञान का छात्र था। मैंने उससे कहा कि मैं भी वहीं का छात्र हूँ। मैंने उससे शिक्षकों का नाम पूछा। वह एक का भी नाम नहीं बतला सका।

(४) उसने बयान दिया है कि डिक्समुडे सैनिक स्कूल में वह शिक्षा पा रहा था और उसे ब्रुसेल्स विश्वविद्यलय में भी पढ़ने की आज्ञा मिल गई थी। पहली बात तो यह है कि सैनिक स्कूलों में इतना कड़ा अनुशासन रहता है कि वे छात्रों को कहीं अन्यत्र नहीं जाने देते। दूसरे डिक्समुडे और ब्रुसेल्स के बीच ६० मील का फासला है। एक जगह का छात्र दूसरी जगह पढ़ने जा ही नहीं सकता।

(५) जेसुइट कालिज में भी वह छात्र था, ऐसा उसके बयान से प्रगट होता है लेकिन इस तरह का कोई कालिज वहाँ नहीं है।

(६) उसने कहा है कि उसकी मां कई वर्ष तक नं० १ हेवर इम्वैंकमेण्ट में रही थी। ब्रुसेल्स में इस नाम का कोई स्थान नहीं है। हेवर इम्बैकमेण्ट नाम का एक महल्ला है। उस महल्ले के नं० १ में एक बहुत बड़ी दूकान है। यह ब्रुसेल्स में सबसे प्रसिद्ध दूकान मानी जाती है पर वहां रहने का स्थान नहीं है।

(७) उसका उच्चारण भी बेलजियम वालों की तरह नहीं है।

इन सभी बातों से साफ प्रगट होता है कि वह बेल्जियम का नागरिक नहीं है।

—डबल्यू लोरिडन

यहीं मैं यह भी लिख देना चाहता हूं कि जाँच का काम आरंभ होते ही मेरे पास न्यूयार्क से तरह तरह के गुमनाम खत आने लगे। इन खतों से साफ प्रगट होता था कि इन खतों के लिखनेवाले मुझे गुमराह करना चाहते थे। इन खतों के अनुसार जैक्सन का बयान सही था। वह ट्राटस्की का कट्टर अनुयायी था

और ट्राटस्की से सचमुच उसे बड़ी निराशा हुई थी। निश्चय ही ये पत्र जी० पी० यू० की प्रेरणा से भेजे जाते थे। न्यूयार्क में जी० पी० यू० के एजेण्टों का अड्डा था। वहीं उनलोगों ने ता० २४ मई के आक्रमण की तैयारी की थी और उन्हीं लोगों ने जेक्सन को भी ट्राटस्की पर आक्रमण करने के लिये तैयार किया था।

गुमनाम खतों का सिलसिला मुझ तक ही सीमित नहीं रहा। ता० २ सितम्बर को मजिस्ट्रेट को निम्न लिखित गुमनाम खत मिलाः—

"ट्राटस्की की हत्या के संबंध में जैक्सन का विचार करते समय यदि तुमने उसका किसी तरह का संबंध जी० पी० यू० से स्थापित करने का प्रयास किया तो इसका परिणाम तुम्हारे लिये बहुत ही बुरा होगा। तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि जी० पी० यू० का संगठन इतना मजबूत और दृढ़ है कि वह बिना किसी दिक्कत के उस मकान में घुस गया जिसे लोग अजेय समझते थे। इस मोकदमे का विचार साधारण हत्या की तरह करो। इसे इतना तूल देने की आवश्यकता नहीं है। मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि इस मुकदमे में तुम्हारा जो रुख होगा उसीके अनुसार तुम्हें उपहार या दण्ड दिया जायगा! स्मरण रखना कि सैकड़ों आँखें तुम पर लगी हैं और तुम्हारे हर एक काम की छानवीन की जा रही है।"

धमकी के इस पत्र का कोई प्रभाव मैक्सिको की सरकार पर तो नहीं पड़ा लेकिन इससे हमलोगों का मत और भी प्रगाढ़ हो गया कि जैक्सन के पीछे रूस के जी० पी० यू० का हाथ है।

मैंने जाँच का काम जारी रखा और आगे चलने पर हम सच बातों के बहुत कुछ पास तक पहुंच सके। हत्यारे की असलियत के बारे में हमलोग जो कुछ भी जान सके उसके लिये हम खुफिया विभाग के रेने्टी उर्राकडी की तारीफ

किये बिना नहीं रह सकते। उसने यह पता लगाया कि ता० ११ अप्रैल को जैक्सन श्री शिर्ले के यात्री कैम्प में रहने गया था।

उरकिडी को अपने साथ लेकर मैं उस कैम्प में गया। उनके रजिस्टर से मालूम हुआ कि फ्रेंक जैक्सन ने यहाँ अपने को कनाडा का नागरिक बतलाया था। ता० ११ से ता० १६ अप्रैल तक वह वहाँ से गैरहाजिर था। ता० १६ अप्रैल को वह बुइक गाड़ी पर आया। गाड़ी में मैक्सिको का प्लेट नम्बर था। उसके पास गाड़ी चलाने का लाइसेंस नहीं था तोभी वह खुद गाड़ी चलाता था। ता० १२ जून तक वह वहाँ था। उसके बाद वह वहाँ से यह कह कर चला गया था कि वह अपने देश (कनाडा) वापस जा रहा है। यहाँ उसके रहते समय शिर्ले ने उसके बारे में कई अद्‌भुत बातें लक्ष्य की थीं।

उसके यहाँ लोगों का आना-जाना बहुत अधिक होता है। टेलीफोन का सिलसिला दिन रात लगा रहता था। आनेवालों में औरतों की संख्या अधिक रहती थी। उनमें से एक बहुत स्पष्ट रूसी भाषा बोलती थी। एक दिन दो आदमी उससे मिलने आये। देखने में वे दोनों मैक्सिको निवासी प्रतीत होते थे। उनसे जैक्सन तुरत नहीं मिला बल्कि वह अपने गराज में चला गया। वहां से कुछ देर बाद वापस आया और खिड़की से उनकी जाँच की। उसके बाद वह उनसे मिला और उन्हें लेकर बाग में चला गया। अपनी शिनाख्त के लिये उन लोगों ने अपना कागज पत्र उसे दिखलाया। इसके बाद जैक्सन अपने कमरे में गया और कुछ कागज-पत्र लाकर उन्हें दिखलाया। करीब दो घंटे तक उनलोगों का परस्पर गुप्त परामर्श होता रहा।

श्री शिर्लेने एक और भी विचित्र बात का अनुभव किया था। जब कभी वह टेलीफोन पर या किसी आये हुए आदमी से बातें करता था तो उसकी पीठ सदा दीवार की तरफ रहती थी और उसकी दृष्टि दरवाजे पर लगी

रहती थी। वहां से अपनी दृष्टि वह कभी भी नहीं हटाता था। उस दिन भी उसका यही क्रम रहा। उसकी पीठ बाग की तरफ थी और उसकी दृष्टि बागके फाटक की तरफ मानों उसे सदा इस बात का खटका रहता था कि कहीं उसकी बात कोई सुन न ले या अचानक उस पर कोई आक्रमण न कर बैठे। इससे प्रगट होता है कि उसपर कड़ी निगरानी थी और वह ऐसे लोगों के कब्जे में था जहांसे वह किसी तरह छुटकारा नहां पा सकता था। निश्चय ही ये जी० पी० यू० के लोग थे जिन्होंने उसके चारों ओर अपना जाल फैला रखा था।

न्यूयार्क के लिये प्रस्थान करते समय उसने अपना पता वही दिया था जो सिल्विया का पता था अर्थात् ५०, लिविंगस्टन अवेन्यू ब्रुकलिन, न्यूयार्क। वह अपनी मोटर को गराज में नहीं छोड़ गया वल्कि एक आदमी को दे गया जो उसके साथ गया। उसकी हुलिया इस प्रकार थीः—उम्र ३५-४० के लग-भग। लंबा, गौदुमी रंग, छोटी कटी मूंछें, चुस्त पोशाक। देखने में वह देहाती प्रतीत होता था। उसी की सहायता से वह अपना सामान उठाकर ले गया।

यहाँ उसके पास एक ट्रंक और दो चमड़े के बक्स थे। इन पर वह कड़ी निगरानी रखता था। ट्रंक वड़ा वजनी था। इतना तो स्पष्ट था कि उनमें पहनने ओढ़ने के कपड़े नहीं थे। उसने कहा था कि उन बक्सों में उसके इंजीनियरी के औजार थे। वह दफ्तर में आकर बहुधा उनकी जाँच किया करता था कि किसी ने उनमें हाथ तो नहीं लगाया है क्योंकि इन बक्सों को उसने दफ्तर में ही रखा था। अनुमान से यही सिद्ध होता है कि ता० २४ मई के आक्रमण में जिन हथियारों से काम लिया गया था वे इनमें बन्द थे।

इसके अलावा गराज के पहरेदार से भी उसकी सांठगांठ थी। वह पहरेदार भी किसी व्यापारी संघ का सदस्य था जिसके कार्यकर्ता साम्यवादी थे। ता० २३ और २४ मई को जैक्सन की गाड़ी रात रात भर दौड़ती रही। ता० २४ मई

की रातको करीब १२ बजे उसी गाड़ी पर लाद कर ट्रंक और चमड़े के बक्स भी गये। दूसरे दिन सबेरे वे बक्स वापस आ गये। यहाँ दफ्तर में उसका ६०० डालर जमा था। ता० २३ मई को तीसरे पहर उसने १०० डालर लिया था। इससे यह परिणाम निकलता है कि जेक्सन मोर्नार्ड ने ता० २४ मई को आक्रमण में भाग तो नहीं लिया था लेकिन तैयारी में उसने हाथ बँटाया था। उस दिन जिन हथियारों से काम लिया गया था तथा जिस मोटर पर चढ़ कर आक्रमणकारी गये थे वह इसके ही पास थी। यहाँ डेरा डाल कर उसने आक्रमणकारियों से संपर्क कायम रखा था।

मोटर की कहानी भी कम रोचक नहीं है। श्री शिर्लेने बतलाया कि प्रत्येक शनिवार को वह मोटर लेकर राजधानी से कहीं दूर जाता था। ता० २७ तथा ३० मई और ४, ६ और १२ जून को भी यह बात हुई थी। वापस आने पर गाड़ी धूल तथा कीचड़ से भरी रहती थी अर्थात् गाड़ी देहातों में गई प्रतीत होती थी। इतना चक्कर काटने पर भी गाड़ीमें मील का निशान ज्यों का त्यों बना रहता था। एक दिन गराज के एक चपरासी ने जैक्सन से यह बात पूछ भी दी। जैक्सन ने उत्तर में कहा था कि वह गाड़ी बेचना चाहता है। इसलिये वही कभी भी मीलकी दूरी उठने नहीं देता। इससे साफ प्रगट होता है कि वह इस बात की जानकारी किसी को नहीं होने देता था कि वह कहाँ जाता है। इतनी सतर्कता और सावधानी से साधारण अपराधी काम नहीं ले सकते थे।

यहीं कुल्हाड़ी का पता भी चल गया। श्री शिर्लेके पुत्रको पहाड़ की चढ़ाई का बड़ा शौक था। उसने बर्फ काटने की एक कुल्हाड़ी खरीदी थी। ट्राटस्की की हत्या का जो समाचार अखबारों में प्रकाशित हुआ था उसमें यह भी लिखा था कि हत्यारे ने कुल्हाड़ी से सिर पर प्रहार किया था। यह समाचार पढ़कर श्री शिर्ले को अचानक अपने पुत्र की कुल्हाड़ी की याद आ गई। उन्होंने

खोज की तो मालूम हुआ कि कुल्हाड़ी गायब है। निश्चय ही जैक्सन वही कुल्हाड़ी चुराकर ले गया था।

यहीं हमलोगों को उस पासपोर्ट का असली भेद भी मालूम हो गया जिसके सहारे जैक्सन मैक्सिको आया था। यह पासपोर्ट ओटावा (कनाडा) के वैदेशिक विभाग ने ता० २२ मार्च १९३७ को जारी किया था। इसकी संख्या ३१,३७७ थी। उसका असली मालिक ता० १३ जून १९०५ में यूगोस्लाविया के लोविनक नगर में पैदा हुआ था और कनाडा में बस गया था। १९२९ में वह वहाँ का नागरिक भी बन गया था। इस विभाग के अनुसार वह पासपोर्ट टानी वेविच के नाम जारी किया गया था। टानी वेविच स्पेन गया और वहाँ सेना में भर्ती हो गया जो साम्यवादियो की देख-रेख में फ्रैंको के खिलाफ लड़ रही थी। जी० पी० यू० ने उसका पासपोर्ट तथा अन्य कागजात जब्त कर लिये थे ताकि वह भाग न सके। थोड़े दिनों के बाद स्पेन की प्रजातन्त्र सरकार ने यह सूचना प्रकाशित की थी कि टानी वेविच युद्ध में मारा गया।

तीन साल बाद यही पासपोर्ट मैक्सिको में प्रगट हुआ लेकिन इस पर फोटो और नाम दूसरे का था। इस तरह इस पासपोर्ट का प्रयोग केवल जी० पी० यू० ही कर सकता था। इसलिये जी० पी० यू० तथा जैक्सन मोर्नार्ड ने ट्राटस्की की हत्या करने से पहले इसे नष्ट कर डालना आवश्यक समझा। लेकिन मैक्सिको सरकार के आवागमन विभाग में ये सूचनायें दर्ज थीं और इसलिये हमलोगों का पासपोर्ट के असली मालिक का नाम तथा उसके बारे में अन्य सूचनायें मिल सकीं।

एक महीने बाद मुझे ट्राटस्की के हत्यारे का असली नाम और पता भी मालूम हो गया। हमारे विभाग के सी० अर्फीकी की मुलाकात अचानक एक उड़ाका से किसी हजाम की दूकान पर हो गई। उस व्यक्ति का नाम प्लूफे था।

उसने बतलाया कि जैक्सन मोर्नार्ड का जो फोटो अखबारों में निकला था वह उसके एक शोफर से मिलता-जुलता था। यह उसके साथ काम करता था। उसका नाम सोल्वेडर टरफाक था। वह रूस का रहनेवाला था। प्लूफे ने उसे निकाल दिया था क्योंकि एक बार अमरीका जाते समय उसने वर्जित सामान चोरी से बेचने का यत्न किया था। इसके लिये उसे सजा भी हो गई थी।

मैंने उसे अपने दफ्तर में बुलाया। लेकिन बूढ़ा डर के मारे आने के लिये तैयार नहीं हुआ। मैंने उसे हर तरह का आश्वासन दिया तब कहीं वह राजी हो सका। मैं उसे लेकर वहाँ गया जहाँ जैक्सन को रखा गया था। दो पुलिस अफसरों की निगरानी में उसे छोड़कर मैं जैक्सन के पास गया। बड़े प्रेम से उससे बातें कीं और कुछ पुस्तकें ला देने का वादा किया। अन्त में मैंने उससे कहाः—"तुम्हारे एक रूसी दोस्त तुमसे मिलना चाहते हैं। तुम कब सुविधा के साथ उनसे मिल सकोगे?" उसने सन्देह के साथ मेरी ओर देखकर कहा—"किसी रूसी से मेरी जान पहचान नहीं है। आपकी बातों से मुझे विस्मय होता है।

मैंने कहाः—वह कहता है कि मैक्सिको में ही तुम्हारी उससे बहुत पहले जान पहचान हुई है।

उसने बड़े तपाक से कहाः—इससे पहले मैं कभी यहाँ नहीं आया था।

किताब लाने का बहाना कर मैं उसके यहाँ से चला आया। जैक्सन से छिपाकर मैं उस रूसी उड़ाके को उसकी बगलवाली कोठरी में ले गया और उसे बतला दिया कि क्या करना होगा। वहाँ से पुनः जैक्सन के पास आया और टहलने का बहाना बना कर उसे अपने साथ इस तरह ले चला कि प्लूफे उसे मजे में देख सके। क्षण भर के बाद ही प्लूफे अपनी कोठरी से बाहर निकल

आया और दोनों हाथ बढ़ाये जैक्सन की तरफ दौड़ पड़ा। उसने जैक्सन से रूसी भाषा में कहा:—यहाँ कहाँ मित्र टरकोफ !

जैक्सन मोर्नार्ड को इस अचानक मिलन का आभास भी नहीं था। उसके हाथ आप से आप उठ गये और उसके होंठ भी हिले। लेकिन दूसरे ही क्षण उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हो गया और वह सम्हल गया। दो कदम पीछे हटकर उसने स्पष्ट स्पेन की भाषा में कहा:—आप कौन हैं? मैं तो आपको जानता भी नहीं। आपकी भाषा भी मैं नहीं समझता।

प्लूफे ने रूसी भाषा में ही कहा:—"क्या वे सब पुरानी बातें तुम्हें भूल गईं जब तुम मेरे मातहत काम करते थे और अमेरिका की सीमा पर जो गड़बड़ी तुम्हें लेकर हुई थी? तुम्हारा रूपरंग नहीं बदला है! तुम वही हो।

जैक्सन मोर्नार्ड ने अपने उसी पुराने तरीके से काम लिया। उसने अपने मुँह पर ताला भर दिया। उसने मौन धारण कर लिया। हम लोग लौटने लगे तब प्लूफे ने कहा:—

"मुझे लेशमात्र भी सन्देह नहीं रह गया है। तुम वही सोलवेडर टरकोफ हो। इसके बाद उसने मुझे लक्ष्यकर कहा:—"मेरा विश्वास मानिये। मुझे किसी तरह का सन्देह नहीं है। यह वही सालवेडर टरकोफ हैं।

स्पेन के गृहयुद्ध के समय वह स्पेन में काफी अर्से तक था। यही कारण था कि वह स्पेन की भाषा मजे में बोल सकता था। मैक्सिको में वह इतने कम दिनों तक था कि इतना स्पष्ट स्पेन की भाषा का प्रयोग वह नहीं सीख सकता था। स्पेन में ही वह जी० पी० यू० के प्रभाव में आ गया था और उसका सदस्य बन गया था।

१२—फ़रारों की खोज

ता०१५ जुलाई को ट्राटस्की का एक पत्र मुझे मिला था जिसमें उन्होंने लिखा था :—"अखबारों से पता चलता है कि अरनल बन्धु और सिक्विरो मंजानिला में छिपे हैं। मुझे विश्वसनीय सूत्र से मालूम हुआ है कि रूस का एक जहाज वहां जल्द ही पहुंचने वाला है। कहा तो यह जाता है कि यह जहाज जापान सामग्री लेकर जा रहा है लेकिन वास्तव में यह जहाज अरनल बन्धु, सिक्विरो तथा जी० पी० यू० के अन्य एजेण्टों को लेने के लिये ही आ रहा है। इस समाचार की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। आपको मालूम ही है कि लूई अरनल आक्रमण के बाद न्यू यार्क में उपन्यासकार अनिटा ब्रेनर से मिलने गया था। उस वक्त तक उसका नाम आक्रमणकारियों में नहीं आया था। सिक्विरो के न्यूयार्क में होने की सूचना पर मुझे विश्वास नहीं होता। यह तो मुझे जी० पी० यू० के एजेण्टों की चाल मालूम होती है। वे पुलिस को चकमा देना चाहते हैं।"

खुफिया विभाग के पेड्रो सी० वाल्डेरस अपने दो साथियों के साथ मंजानिला जाँच के लिये गये भी। उन्होंने वहां लंगर डाले सभी जहाजों की जांच की जो वहाँ से जापान या नार्वे जाने वाले थे। जर्मनी जानेवाला एक जहाज वहां बहुत दिनों से खड़ा था। उसकी भी तलाशी ली गई। लेकिन उन जहाजों में एक भी फरार असामी नहीं पाया गया। शहर में तथा आस-पास के गांवों में खोज ढूँढ़ की गई लेकिन कोई फल नहीं निकला।

इससे पहले मेरे विभाग के आदमियों ने गुरेरो राज्य के कई जिलों में इन फरारों की खोज ढूंढ़ की थी। बलसास इलाके के एक गाँव पर उनकी कड़ी निगाह थी क्योंकि उन्हें पता चला था कि पूजल की कोई प्रेयसी वहाँ अध्यापिका है और सिक्विरो तथा अएटोनियो पूजल वहीं टिके हुए हैं। संभव है कि अरनल बन्धु, अंजेलियां और सिक्विरो की पत्नी भी उनके साथ हों। लेकिन पुलिस को वहाँ पहुँचने में देर हो गई। तब तक वे वहां से खिसक गये थे।

ता० २४ मई के आक्रमण के बाद हमलोगों ने कूएर नवाका में भी तलाशी ली थी क्योंकि हमलोगों को समाचार मिला था कि इस घटना के बाद सिक्विरो वहीं भाग कर छिपा था। हमलोगों ने बहुत दौड़ धूप की। अनेक साम्यवादी विचारधारा के लोगों के घरों की तलाशी ली लेकिन कोई फल नहीं निकला।

मेरे मन में अचानक यह विचार आया कि इन फरारों ने कहीं गुआदल जारा में शरण न ली हो। मुझे बतलाया गया कि एक पेंशन याफ्ता सरकारी अफसर के घर में इस तरह के कुछ लोग हैं। सिक्विरो से उसकी पुरानी जान-पहचान का भी मुझे पता चला। कई सूत्रों से मुझे यह समाचार मिला। कुछ लोगों ने अंजेलिया अरनर को जलिस्को की राजधानी की तरफ वेष बदल कर यात्रा करते भी देखा था। जिस औरत की हुलिया वहां से मेरे पास भेजी गई थी वह उसके चित्र से मिलती थी। उसके साथ एक लड़की थी ताकि उसपर किसी को सन्देह न हो, उसके साथ चमड़े के दो बक्स भी थे।

बाल्डेरस और मोरेनो को गुआदल जारा में तैनात कर दिया गया था। उनलोगों ने संवाद भेजा कि ट्राटस्की के मकान पर जो आक्रमण हुआ था उसके दस दिन बाद अर्थात् ता० ३ जून को सिक्विरो तथा उसके अन्य साथी यहां से जालिस्को राज्य के होस्टोर्टि पक्विलो प्रदेश की ओर गये हैं। मुझे मालूम था

कि सिक्विरो की वहां काफी लोगों से जानपहचान है और थाड़े ही दिन पहले उसने साम्यवाद का वहाँ जोरों से प्रचार किया था। मुझे यह भी सूचना मिली कि आक्रमण से कुछ ही दिन पहले डेविड तथा स्पेन के दो साम्यवादी वहाँ गये थे। लेकिन इस वक्त उन लोगों का कोई पता नहीं था।

किसी स्थान पर छिपकर बैठा हुआ यह फरार मैक्सिको सरकार के विरुद्ध अखबारों में भयानक जहर उगल रहा था। उन लेखों से ऐसा प्रगट होता था कि वह कहीं मैक्सिको शहर में ही छिपा बैठा है और वहीं से जहर उगल रहा है। एक अखबार के प्रतिनिधि ने तो इसके साथ मुलाकात और बातचीत तक छाप दी थी। इसके साथ उसका चित्र भी छपा था। यह सब कार्रवाई पुलिस की आँखों में धूल झोंकने के लिये की जा रही थी मानों पुलिस उसकी खोज में नहीं है और वह साधारण नागरिक सा स्वतंत्र जीवन बिता रहा है।

इस परिस्थिति में भी ता० २५ सितम्बर को अपने दो सहकारियों के साथ मैंने गुआदल जारा जाने का निश्चय किया। वहाँ पहुंच कर मैं वहाँ के गवर्नर तथा सैनिक अफसर से मिला। इनलोगों ने मुझे हर तरह की सहायता प्रदान करने का वचन दिया। मैंने अपना अड्डा वहाँ बनाया लेकिन मैं लोगों से मिलता जुलता नहीं था। मैंने निश्चय कर लिया था कि इसे गिरफ्तार कर ही मैं वापस लौटूंगा।

मैंने अपना एक आदमी होस्टोटिपक्विलो भेजा। उसका भेष मैंने इस तरह बदल दिया कि किसी भी हालत में कोई उसे पुलिस का आदमी नहीं समझ सके क्योंकि मुझे मालूम था कि वहाँ सिक्विरो के अनेक दोस्त हैं और पुलिस की गंध पाते ही वे लोग उसे सावधान कर देंगे। इसलिये हमलोगों को बड़ी सतर्कता से काम लेना था। हमारे दोनों आदमी फिगुरोआ और रामिरेज अनेक तरह की बेचने की सामग्री लेकर बस से वहाँ गये। लेकिन वे लोग कोई उपयोगी

सूचना नहीं ला सके। मैंने नई हिदायतें देकर उन्हें दोबारा भेजा। इस बार उन्हें हिदायत दी गई कि वे खेतों पर जाकर कलई करने का मसाला बेंचे। इससे उनपर किसी तरह का सन्देह नहीं हो सकता था।

रामिरेज खुफिया के काम में बड़ा ही होशियार था। वहां पहुँच कर सबसे पहले वह वहां के गिरजा के पादरी से मिला और कहा कि आप मेरा बयान लिख लें। अपने आने का नकली उद्देश्य बताकर उसने कहा कि मैं यहां दूकान खोलना चाहता हूँ। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि यहाँ कतिपय साम्यवादी हैं जिनका नेता सिक्विरो है। मैं इन साम्यवादियों को धर्मद्रोही मानता हूं। मैं उनके संसर्ग में आने से डरता हूँ। इसका परिणाम मेरे लिये हानिकर हो सकता है। इसलिये मैं आप से सलाह लेने आया हूं क्योंकि गाँव में होनेवाली सारी बातों का पता आपलोगों को रहता है। इस चाल का परिणाम बहुत अच्छा निकला। पादरी उसकी बातों से प्रभावित होकर कहने लगाः—
"यह शैतान का बच्चा कुछ दिनों से यहाँ टिका हुआ है। मुनिसिपल अधिकारी तथा जनता के कुछ लोगों की 'सहायता इसे प्राप्त है। जब यह यहाँ पहले पहल आया तब यह या तो अलकाडे के यहाँ रहता था या नगर मुहर्रिर के यहाँ। इसको मिनास में भी अनेक साम्यवादी हैं जो इसके साथ काम करते हैं। इसलिये या तो तुम्हें अपना इरादा छोड़ देना होगा अथवा काफी सावधानी के साथ यहाँ रहना होगा।'

रामिरेज से यह सूचना मिलने पर मैंने वहां जाने का निश्चय किया लेकिन मैं अपने को किसी भी तरह प्रगट नहीं होने देना चाहता था। मेरे सामने यह बहुत बड़ी समस्या थी।

उस समय जलिस्को राज्य में धारा सभा का चुनाव चल रहा था। हर जगह राजनीतिक आन्दोलन का जोर था। इस आन्दोलन से मैंने लाभ उठाना

चाहा और राजनीतिक प्रचारक बन कर वहां पहुंचने का इरादा किया। इस उपाय से उसके दोस्तों की आँखों में धूल झोंक कर हमलोग सिकिरो तक पहुंचने की आशा रखते थे। होस्टोटिपक्लिो में डेरा डालकर हमलोग अपना काम आसानी से कर सकते थे।

जेनरल नूनेज ने मेरे साथ पुलिस विभाग का एक मेजर भेज दिया था जो उस इलाके की पूरी जानकारी रखता था। मैंने उससे कहा कि तुम किसी ऐसे उमीदवार को ठीक करो जो हमलोगों को अपना प्रचारक कह सके। वह टेक्लिा के एक जमींदार को मेरे पास ले आया। यह व्यक्ति काफी संपन्न था। इलाके में यह बदनाम भी था। हमलोगों ने उसे अपना उद्देश्य बतलाया तो वह तुरत राजी हो गया और फूला न समाया। हमलोगों ने चुनाव के अनेक तरह के परचे और पोस्टर छपवाये और अपनी लारी को खूब सजाया।

मैंन सैनिक अधिकारियों से मिलकर सभी रास्तों पर पुलिस तैनात करवा दी जिधर होकर फरार असामी भाग सकते थे। मुझे यह भी डर था कि वहां पहुँचने पर किसी तरह हमलोगों का गंध पाकर फरार हमलोगों के चंगुल से बाहर नहीं हो जाय। मैंने उनलोगों के पास सिकिरो और उसकी पत्नी अंजेलिका अरनल की हुलिया भेज दी ताकि सन्तरी आसानी से उनलोगों को पहचान लें।

पुलिस की सहायता की मुझे किसी भी क्षण आवश्यकता पड़ सकती थी, इसलिये मैंने कुछ सैनिक भी मंगा लिये। तीस सैनिक एक युवक अफसर के अधीन मेरे पास भेज दिये गये।

इधर मैं इस तैयारी में लगा था और उधर मैंने होस्टोटिपक्लिो में रामिरेज और फिगुएरो तथा कडमा में फिलिप सोटोमेयर को यह हिदायत दे दी कि वे स्टेशनों से गुजरनेवाली हर गाड़ियों पर दृष्टि रखें ताकि फरार असामियों में से कोई ट्रेन से न भाग जाय।

हमलोग एक गाँव के लिये रवाना हुए। उमीदवार और हमारे कतिपय सहकारी आगेवाली लारी पर थे और इसके पीछे कुछ दूर पर पुलिस की वह लारी थी जिसपर हमलोग थे।

कोमादा में सोटोमेयर भी हमलोगों के साथ हो गया। हमलोग निर्दिष्ट स्थान की तरफ करीब बारह मील गये। कुत्तों के भूँकने ने इस बात की सूचना दी कि सड़क के पास ही कहीं खेत है। हमलोग लारी से उतर पड़े। मेरा इरादा था कि एक दो जानकार आदमी के साथ सेना नायक अपने दस सैनिकों और सोटोमेयर को लेकर मिनाम पहुँचे। वहाँ पहुँच कर सैनिक लोग गांव घेर लें। साथ ही वे यह भी प्रगट करें कि हमलोगों से उनका कोई संबंध नहीं है। इसके बाद बाकी लोग लारी लेकर गाँव तक जायं। वहाँ वे लोग प्रतीक्षा करें और हमलोगों से संपर्क कायम करें। सुबह होते ही पहली लारी के सवार जो चुनाव प्रचारक बन कर यहाँ पहुंचे थे—एक मकान पर पहुंचे। यह मकान होटल के नाम से विख्यात था। यह प्रधान पार्क के पास एक तंग सड़क पर था।

सारी व्यवस्था कर चुकने के बाद हमलोग अलकाडे से मिलने गये ताकि अपने प्रचार कार्य का सारा कार्यक्रम उन्हें बतला दिया जाय। उन्होंने हमलोगों का स्वागत तो किया लेकिन वे सहमे हुए थे। थोड़ी देर के बाद वे स्वस्थ होकर हमलोगों से बातें करने लगे। अबतक उसने हमलोगों के यहां आने का वास्तविक उद्देश्य नहीं समझा था।

अपनी जांच पड़ताल के सिलसिले में रामिरेज की रिपोर्ट तसदीक हो गई। हमलोगों को यह भी मालूम हुआ कि मुनिसि लिटी के चेयरमैन, उसके सेक्रेटरी, पुलिस का स्थानीय प्रधान अफसर तथा मुनिसिपैलिटी के अन्य कर्मचारी मिल-जुल कर सिक्किरो की हिफाजत करते रहते हैं।

तीसरे पहर अलकाडे मुझसे मिलने आये। उन्होंने जिन शब्दों से मेरा अभिवादन किया उन्हें सुनकर मैं दंग रह गया। उन्होंने कहाः—कर्नल सलजर को मेरा नमस्कार है।

मैंने कहाः—आपको धोखा हुआ है। मैं सैनिक नहीं हूं और न कभी इस पेशे में रहा हूं। आप मजाक कर रहे हैं क्या ?

वह—मेरी आंखों को आप धोखा नहीं दे सकते। आप ही मेक्सिको के खुफिया विभाग के प्रधान अफसर हैं।'

उनकी बातों से मैं झुंझला उठा था। मैंने कहाः—आपको जरूर धोखा हुआ है।

मैं यहां यह भी लिख देना चाहता हूं कि मैंने दाढ़ी बढ़ा ली थी और देहाती पोशाक में था। इससे मुझे पूरी आशा थी कि जिन लोगों ने अखबारों में मेरा चित्र देखा होगा वे भी मुझे नहीं पहचान सकेंगे।

अलकाडे ने कहाः—आप मेरा विश्वास नहीं कर रहे हैं, यह आपकी भूल है। मैं इस नगर का मजिस्ट्रेट हूँ। इस नाते यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपनी सेवायें आपको अर्पित कर दूं। आप इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि आप कर्नल सलजर हैं।

इतना कह कर उसने एक पर्चा मेरे सामने रख दिया जिसमें मेरा चित्र छपा था।

उस परचे को मेरे सामने रख कर उस धूर्त ने कहाः—कृपाकर आप अपना यह रंगीन चश्मा और सधारण पोशाक उतार दीजिये और पुलिस की वर्दी पहन कर कर्नल सलजर बन जाइये।

उसने देखा कि पहचाने जाने के कारण मैं झुंझला उठा हूं। इस पर उसने

कहाः—आप नाराज न हों। आप मेरा विश्वास कीजिये और मुझे बतलाइये कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।

मैंने लाचार होकर कहाः—ठीक है, मैं सचेंज मलजर हूँ और ये मेरे साथी मेरे सहकारी हैं। मैं छिपकर इसलिये यहाँ आया हू क्योंकि मुझे यहाँ की सारी हालत मालूम है। तो भी मैं अपना भेद तुम्हें बतलाकर तुम्हारी मदद लूंगा। मैं डेविड अलफरो सिक्विरो की खोज में यहाँ आया हू। तुम्हारे पहले उत्तर से ही तुम्हारी पहचान हो जायगी। क्या तुम इस व्यक्ति को जानते हो?

वह क्षण भर के लिये झिझका क्योंकि उसे आशंका हो गई कि शायद मैं यह बात भी जानता होऊँ कि सिक्विरो उसके यहाँ ठहरा था। लेकिन उसे तो मुझे कुछ न कुछ पता देना ही था। इसलिये उसने कहाः—हमलोग उन्हें जानते हैं। वह कई बार यहाँ आ चुके हैं। हमलोगों के व्यापार संघ के वे सदस्य हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। हमलोगों को यह नहीं मालूम था कि वे फरार असामी हैं और पुलिस उनकी खोज में है।

मैं—क्या निकट भविष्य में वह यहाँ आया था?

मजि०—जी हां, और उनकी पत्नी भी। लेकिन न तो वह किसीसे मिले और न कोई भाषण दिया। उन्होंने बीमारी का बहाना बना लिया था। हमलोगों को यह बात नहीं मालूम थी कि पुलिस उनकी तलाश में है, इसलिये हमलोगों ने उन्हें कई जगह ठहराया, मेरे यहाँ भी वह ठहरे थे। मैंने सुना है कि उनकी पत्नी मेक्सिको लौट गई।

मैं—ठीक है! अन्तिम बार वह यहाँ कब आया था?

मजि०—ठीक दो दिन पहले।

मैंने चौंक कर कहाः—क्या दो ही दिन पहले?

मजि०—हाँ। यहां से वह पहाड़ी इलाके की तरफ चले गये। उनका

ख्याल था कि प्रकाश और स्वच्छ हवा उनके स्वास्थ्य को ठीक कर देगी। वह इसी इलाके में कहीं होंगे लेकिन मैं उनका ठीक-ठीक पता नहीं बतला सकता क्योंकि मेरे पूछने पर उन्होंने कहा थाः—मेरा कोई निश्चित ठिकाना नहीं होगा लेकिन मैं समय-समय पर आता रहूँगा।

मैंने देखा कि वह इससे अधिक तबतक कुछ नहीं बतलावेगा जबतक उस पर मैं यह अभियोग नहीं लगा दूंगा कि वह सिफ्रिरो को छिपाये हुए था। लेकिन उसके लिये यह उपयुक्त अवसर नहीं था। मैं उसी वक्त उसे अपना दुश्मन बनाना नहीं चाहता था क्योंकि मजिस्ट्रेट होने के कारण मैं उसे गिरफ्तार नहीं कर सकता था। थोड़ी बहुत सूचना तो उससे मिल ही गई थी। केवल उस पर निगरानी रखना ही मुझे श्रेयस्कर प्रतीत हुआ।

मैंने उससे कहा—मुझे विश्वास हो गया कि तुम सच कह रहे हो। तुम्हारी सहायता का मुझे पूरा भरोसा है।

मैं एक क्षण भी बेकार जाने नहीं देना चाहता था। मैंने तुरत अपने सहायकों और सैनिकों का एक दल तैयार किया। मजिस्ट्रेट, मुनिसिपल सेक्रेटरी और पुलिस के स्थानीय अफसर कुछ किसानों को साथ लेकर चले। उन किसानों ने हमलोगों के लिये घोड़ों का प्रबन्ध कर दिया और रास्ता दिखलाने के लिये भी राजी हो गये। मैं इन लोगों को क्षण भर के लिये भी आंख से ओझल होने नहीं देना चाहता था। मुझे इस बात की आशंका थी कि मौका मिलते ही वे लोग उसे खबर देकर सचेत कर देंगे। हमलोग सबसे नजदीक वाली पहाड़ी के लिये रवाना हुए। हम लोग कई हिस्सों में बँट गये और इधर-उधर भटकने लगे। हमलोग खेतों पर रुकते और उनके घरों की तलाशी लेते। चोटी पर पहुंचते पहुंचते शाम हो गई और हमलोगों को मजबूर होकर लौटना पड़ा।

वापसी में एक अप्रिय घटना हो गई। नदी पार करते समय मुनिसिपल

सेक्रेटरी सूनी रात के अँधेरे का फायदा उठाकर भाग गया। हमलोग उसकी खोज देर तक करते रहे लेकिन उसका पता न चला। मैं चिन्तित हो गया कि कहीं वह सिक्विरो को हमलोगों के आने की सूचना न दे दे।

दूसरे दिन खूब तड़के ही हम लोग उठे और अपना काम शुरू कर दिया। लेकिन कोई फल नहीं निकला। मैं तो एक तरह से हताश हो चला था क्योंकि मैक्सिको छोड़ने के बाद तीन दिन तक हम लोग दिन-रात मारे-मारे फिरते रहे। मैं प्रण करके चला था कि खाली हाथ वापस नहीं आऊँगा। मैंने तै किया कि अपने दो सहायकों को लेकर मैं नयारिट राज्य के इक्स्टलान डेलरिओ जाकर जेनरल नूनेज से बातचीत करूं और कहूँ कि यदि मेरा यह अन्तिम प्रयास सफल न हो तो मुझे मैक्सिको नगर वापस आने की आज्ञा दी जाय। सोटोमेयर के सिंको मिनास से वापस होने के बाद इसे कार्य में परिणत करना था। जेनरल नुनेज ने तो मुझे वापस आने का हुक्म दे दिया लेकिन मेरे सामने जनता और अखबारों का प्रश्न था। वे बड़ी उत्सुकता से मेरे इस प्रयास के परिणाम का बाट जोह रहे थे। मैं उन्हें क्या उत्तर देता?

मैं होस्टोटिपक्विलो से वापस आ रहा था कि सोटोमेयर से भेंट हो गई। वह अपने साथ एक आदमी को गिफ्तार कर लिये आ रहा था। उसका नाम क्रिस्टोपल राड्रिगेज कोस्टिलो था। वह सिक्विरो का पुराना साथी था। वह होस्टोटिपक्विलो का निवासी था पर सिंको मिनास में प्रायः बीस साल से बस गया था। १९२६ से ही सिक्विरो से उसकी घनिष्ठता थी। दोनों ने मिलकर इस इलाके में अनेक मजदूर संघ कायम किये थे और एक हड़ताल भी सफलता पूर्वक चलाई थी जो ६० दिन में समाप्त हुई थी। इस कारण से और चूंकि सिक्विरो इस इलाके में तीन साल तक रह चुका था इसलिये लोगों में उसकी ख्याति हो गई थी यद्यपि उसके सिद्धान्त के मानने वाले वहाँ कम ही लोग थे।

रोड्रिगेज कैस्टिलो का बयान सुनने के बाद मैंने उससे कहाः—तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि तुम रोगी हो और तुम्हें आराम, शान्ति और देख-रेख की जरूरत है। यदि तुम सच बात नहीं कहना चाहते तो तुम्हें जेल जाना होगा। तुम्हारे परिवार के लोगों को भूखों मारना पड़ेगा क्योंकि उनकी जीविका का सहारा छिन जायगा। मुझे पूरा विश्वास है कि सिक्रिरो के साथ अपनी दोस्ती निबाहने के लिये तुम अपने परिवार का भविष्य और अपनी स्वतंत्रता नष्ट करना नहीं चाहोगे। मेरे पास इस बात का काफी सबूत है कि फरार सिक्रिरो की तुमने मदद की है। यदि तुमने सिक्रिरो का पता नहीं बतलाया तो मुझे मजबूर होकर तुम्हें मैक्सिको नगर ले चलना पड़ेगा। इसलिये तुम्हारा भाग्य तुम्हारे ही हाथ में है।

मैं ये बातें कहता जा रहा था और उसके चेहरे को गौर से देखता जा रहा था। उसके चेहरे के बदलते भाव से मैंने अनुभव किया कि मेरी बातों का असर उसपर पड़ा है। उसने कहाः—आप का कहना सही है। यदि मैं सच बात कहता हूं तो मित्र के साथ विश्वासघात करता हूं, लेकिन इससे मैं अपने परिवार, अपनी पत्नी और अपने बच्चों को बचा लेता हूं। मैं तो बर्बाद हो गया लेकिन मुझे भरोसा है कि आप मेरी रक्षा करेंगे क्योंकि आप भी बाल बच्चे वाले होंगे।

इसके बाद उसने अपना दास्तान यों शुरू कियाः—अप्रैल के अन्त में डेविड यहाँ आया और घूमकर तुरत चला गया। वह एक दिन से ज्यादा यहाँ नहीं रहा। मुझसे भेंट नहीं हो सकी लेकिन वह मेरे नाम एक पुर्जा छोड़ गया था। उसने मुझे मैक्सिको नगर बुलाया था। पुर्जे के साथ वह आवश्यक खर्च भी देता गया था। इसलिए मैं मैक्सिको नगर गया और उससे मिला।

मैं—तुम उससे कहाँ मिले ?

वह—होटल मैजेस्टिक में। यही पता वह दे गया था।

मैं—इसके बाद।

वह—बातचीत के सिलसिले में उसने मुझसे कहा कि मुझे दो ऐसे तगड़े आदमी चाहिए जो हर काम करने के लिये तैयार हों। उसने मुझे काम नहीं बतलाया लेकिन मैंने अनुमान किया कि राजनिति से संबंध रखने वाला कोई काम होगा। उसने खर्च के लिये मुझे एक सौ रुपये दिये और पाँच रुपये रोज उनका वेतन स्थिर किया। वापस आकर मैंने मुनिसिपैलिटी के चेयरमैन और नगर के क्लर्क से इसकी चर्चा की और हमलोगों ने जेनरो कैसिलस तथा नर्सिको पैडिला को भेजने का निश्चय किया। ये दोनों बड़े बहादुर समझे जाते थे।

मैं—उन लोगों ने भी तुमसे काम के बारे में कुछ नहीं पूछा ?

वह—जी नहीं, वे लोग हमलोगों तथा सिक्विरो के भक्त थे। साथ ही उन्हें राजधानी देखने का भी प्रलोभन था। नगर क्लर्क भी उनके साथ गया।

मैं—क्या उनके जाने की तारीख तुम्हें याद है ?

वह—मई के मध्य में।

मैं—क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं है कि ट्राटस्की पर जो आक्रमण हुआ था उसमें उन्होंने भाग लिया था ?

वह—मुझे बाद को मालूम हुआ। वापस आकर दोनों ने मुझसे बड़ी शिकायत की क्योंकि उनसे जो काम लिया गया उससे वे संतुष्ट नहीं थे। लेकिन हमलोगों ने इसे गुप्त रखने का ही निश्चय किया।

मैं—इसके बाद सिक्विरो से तुम्हारी मुलाकात कब हुई ?

वह—मुझे मालूम हुआ कि वह यहाँ छिपने के लिये आया है। ता० ११ सितम्बर को लूना मेरे पास आया और कहा कि सिक्विरो मुझसे मिलना चाहता है। मैं लूना के घर में उससे मिला। सिक्विरो अपनी पत्नी के साथ वहीं ठहरा था। हमलोगों ने स्पेन के गृह-युद्ध, यूरोप की राजनीतिक स्थिति तथा ट्राटस्की के आक्रमण के बारे में बातें कीं। ट्राटस्की को वह विश्वक्रान्ति का प्रतिक्रियावादी कहा करता था। इसके बाद मैं चला गया। सिंको मिनास में मुझे यह भी पता चला कि सिक्विरो अपनी पत्नी के साथ लूना के मैदान में जून के अन्त से जुलाई के मध्य तक रहा। इसके बाद रुदज रैमोस के मकान में चला गया।

"इस अवधि में उसका भाई जेसस दो बार यहाँ आया था। मेक्सिको नगर के साथ उसके तथा अंजेलिका के द्वारा सिक्विरो का संबंध कायम रहा। एक बार जेसस दो आदमियों को साथ लेकर आया। इस पर सिक्विरो बहुत बिगड़ उठा और उनलोगों से मिलना स्वीकार नहीं किया।"

मैं—अब यह बतलावो कि वह यहाँ से कब गया और उसके साथ कौन था?

वह—आप जानते हैं कि मैं यहाँ नहीं रहता। इसलिये मैं ठीक ठीक दिन नहीं बतला सकता, लेकिन इतना मैं जानता हूं कि उसके साथ मरकोज ओरेजको गया है।

मैं—और तुम यह भी नहीं जानते कि सम्प्रति वह कहाँ होगा?

वह मेरी तरफ देखने लगा। इस सवाल का ठीक-ठीक जवाब वह नहीं देना चाहता था। लेकिन उसे अपने परिवार, अपनी पत्नी और बच्चों का ध्यान आ गया। इसलिये उसने स्पष्ट शब्दों में कहाः—यहाँ से दस मील पहाड़ के

पास सान ब्लासिटा के खेत पर उसकी टोह लीजिये। मुझे मालूम हुआ है कि कल आप उस स्थान के पास वाली नदी तक चले गये थे जहाँ से लूना भाग गया। .सान ब्लासिटो में उसका भोजन बनता है और पास के ही किसी अस्तबल में वह रहता है।

बातचीत का यह सिलसिला रात बारह बजे तक चलता रहा। विचारा बूढ़ा थकान से चूर हो रहा था। मुझे इतमीनान हो गया कि उसने सारी बातें सच-सच कही हैं।

इस बातचीत के बाद मैंने मुनिसिपलीटी के चेयरमैन और स्थानीय पुलिस के प्रधान अफसर को बुलाया और उन्हें क्रिस्टोफल का बयान सुना दिया। मैंने उनसे कहा कि यह तो साबित हो गया कि सिकिरो के षड्यंत्र में आपलोग भी शामिल थे तोभी यदि उसे गिरफ्तार कराने में आपलोग हर तरह से मेरी मदद करें तो मैं उन बातों को प्रगट नहीं होने दूंगा। फरार को छिपा कर रखने के क्या मतलब होते हैं, यह मुझे आपलोगों को बतलाना नहीं होगा।

जब उनलोगों ने अपनी स्थिति डावांडोल समझी तब वे लोग सीधे रास्ते पर आये और मदद देने के लिये राजी हो गये।

समय बीत रहा था। हमलोगों को अंधेरी रातसे फायदा उठाने के लिये शीघ्रता से सब कुछ करना था ताकि सबेरा होते-होते हमलोग खेत पर पहुंच जायँ। इसलिये हमलोग तीन दलमें बँट गये। निश्चय यह हुआ कि हमलोग तीन तरफ से उस खेत पर रातों ही रात पहुंचें और आधे मील के दायरे में उसे घेर लें। भागने के संभावित रास्तों पर कड़ी निगरानी रखने की व्यवस्था की गई। धीरे-धीरे हमलोग घेरे को तंग करते जायंगे ताकि उस दायरे के भीतर की सभी जगहों की तलाशी ली जा सके। जो लोग पहले पहुंच जायँ वे

खेत पर रहनेवालों को भागने से रोकें और यदि सिक्किरो मिल जाय तो उसे तुरत गिरफ्तार कर लें और यदि किसी तरह का खतरा उपस्थित हो तो हथियार से काम लें।

पहले दलका नेता सोटोमेयर था। यह दल रातको एक बजे रवाना हुआ। इस दलने उस सड़क को पकड़ा जो पहाड़ के दाहिने जाती थी। आगे चलकर वह उत्तर-पूरब को मुड़ जाती थी। आधे घंटे के बाद दूसरा दल फिगुरोआ के नेतृत्व में चला। इसे सीधे पूरब जाना था। अन्त में दो घंटे बाद तीसरा दल रवाना हुआ। इसका नेता चिनो अगियास था। इस दल को पहाड़ के बायें में होकर खेत के दक्खिन जाना था और पहले के दोनों दलों से संपर्क स्थापित करना था। मुझे सारी योजना की देखभाल करनी थी।

सुबह होते-होते इस योजना का पहला अंश तो पूरा कर लिया गया अर्थात् खेत घेर कर हमलोग धीरे-धीरे घेरा तंग करने लगे। खेतपर पहुँच कर हमलोग बाहर के घरों की तलाशी लेने लगे। इसमें केवल एक किसान परिवार रहता था। हमलोगों को देखते ही वे डर से थरथर कांपने लगे। बहुत धीरज देने पर उनके होश हवास ठीक हुए तब उन्होंने कहा कि एक आदमी यहाँ आया था जिसके लिये हमलोगों ने भोजन बनाया था। जो हुलिया उन्होंने उस आदमी की दी वह सिक्किरो से एकदम मिलती जुलती थी। उनकी बातों से यह भी मालूम हुआ कि वह व्यक्ति रातको भी वहाँ आया था। बहुत धमकाने पर उन लोगों ने कहा कि लास ओटाटस झील के पास वह हो भी सकता है।

हमारे आदमी उसी तरफ दौड़ पड़े। थोड़ी दूर पर उन्हें एक आदमी मिला जो परीशान दीखता था। यह वही मारकोज ओरेजको था जो सिक्किरो के साथ आया था। इसके पास एक राइफल और एक पिस्तौल तथा ६७ कारतूस थे।

वहुत डराने-धमकाने पर उसने कहाः—मैं डेविड सिक्विरो का नौकर हूं। मैं अकसर उनके काम से होस्टोटिपकिलो आया करता हू। परसों भी मैं वहां खाने का सामान लेने गया था। मुझे नहीं मालूम कि मेरे मालिक कहां हैं।

इसके बाद हमलोग तहखाने की तलाशी लेने लगे। कड़ाके की धूप तथा मच्छरों की डंक से सभी लोग परीशान थे। फिगुरोआ अपने आदमियों के साथ कुछ आगे बढ़ गया था। वह कोने की तरफ मुड़ा तो वहां चटाई पर लेटे हुए एक आदमी को पाया। यही डेविड अलफारो सिक्विरो था।

उसकी दाढ़ी इस तरह बढ़ गई थी और उसने अपना भेष इस तरह बना लिया था कि उसे पहचानना मुश्किल था। अचानक अपने को पुलिस से घिरा पाकर वह अवाक् रह गया लेकिन उसने किसी तरह का झंझट बखेड़ा नहीं खड़ा किया। उसके पास कोई हथियार भी नहीं था।

मैं तुरत वहां पहुंच गया। मैं बड़ी सौजन्यता के साथ उससे मिला। मैंने पूछाः—कहिये। आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

उस परीशानी और घबराहट की हालत में भी उसने अपनी सफाई देने का यत्न किया। उसके कहाः—मैं भागने की कोशिश में नहीं हूं क्योंकि मैं अपने को अपराधी नहीं मानता। ट्राटस्की के मकान पर तथा उसके बाद उस पर जो आक्रमण हुआ था उससे मेरा किसी तरह का संबंध नहीं है।

मैं वहाँ उसका बयान नहीं लेना चाहता था। इसलिये उसे बाधा देते हुए मैंने कहाः—देखिये। मैं सैनिक हूं और सैनिक अपनी बात के पक्के होते हैं। इसलिये मैं वादा करता हूं कि मैं आपको सुरक्षित मैक्सिको ले चलूँगा और वहाँ अधिकारी वर्ग आपकी जांच करेंगे और आपके अपराधी या निरपराधी होने का निर्णय करेंगे।

उसने कहा:—अच्छी बात है।

इस तरह ट्राटस्की के आक्रमणकारियों के नेता को गिरफ्तार किया गया और उसे पुलिस के हवाले किया गया।

ट्राटस्की के मकान पर हमला करनेवाले तथा उसकी हत्या में शामिल सभी अपराधी गिरफ्तार नहीं किये जा सके लेकिन जांच-पड़ताल से यह बात निश्चित रूप से साबित हो गई कि ट्राटस्की की हत्या की सारी जिम्मेदारी जी० पी० यू० पर है। उसने ही सारा आयोजन किया था और उसी ने ट्राटस्की की हत्या जैक्सन से कराई।